इस विशेष आवरण को संत शिरोमणि दिगम्बराचार्य श्री विद्यासागर जी मुनि महाराज के 50वां संयम स्वर्ण महोत्सव के उपलक्ष्य में श्री दिगम्बर जैन संरक्षिणी सभा जवाहरगंज जबलपुर के माध्यम से दिनांक 17 जुलाई 2018 को मध्यप्रदेश डाक परिमण्डल भारतीय डाक विभाग के परिमण्डल शाखा द्वारा 5/- रूपये में जारी किया गया।

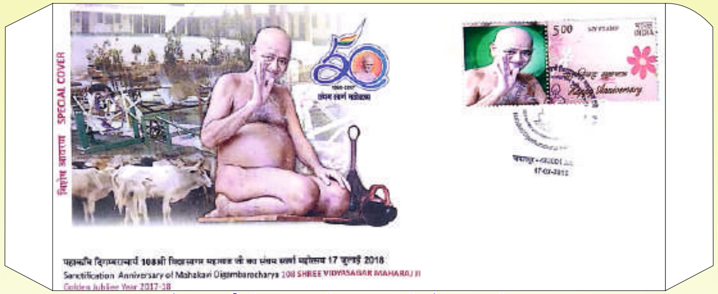

संकलन - मुनिश्री अभयसागरजी, प्रभातसागरजी एवं पूज्यसागरजी महाराज

इस तरह की और भी जानकारी इस लिंक पर देख व पढ़ सकते हैं - knowledge.sanskarsagar.org

दि.	वार	तिथि	नक्षत्र
		अप्रैल 2022	
16	शनिवार	पूर्णिमा	हस्त
17	रविवार	प्रतिपदा	चित्रा-स्वाति
18	सोमवार	द्वितीया	विशाखा
19	मंगलवार	तृतीया	अनुराधा
20	बुधवार	चतुर्थी	ज्येष्ठा
21	गुरुवार	पंचमी	मूल
22	शुक्रवार	षष्ठी-सप्तमी	पूर्वाषाढ़
23	शनिवार	अष्टमी	उत्तराषाढ़
24	रविवार	नवमी	श्रवण
25	सोमवार	दशमी	धनिष्ठा
26	मंगलवार	एकादशी	शतभिषा
27	बुधवार	द्वादशी	पूर्वाभाद्रपद
28	गुरुवार	त्रयोदशी	उत्तराभाद्रपद
29	शुक्रवार	चतुर्दशी	रेवती
30	शनिवार	अमावस	अश्विनी
		मई 2022	
1	रविवार	प्रतिपदा	भरणी
2	सोमवार	द्वितीया	कृत्तिका
3	मंगलवार	तृतीया	रोहिणी
4	बुधवार	तृतीया	मृगशिरा
5	गुरुवार	चतुर्थी	मृगशिरा
6	शुक्रवार	पंचमी	आर्द्रा
7	शनिवार	षष्ठी	पुनर्वसु
8	रविवार	सप्तमी	पुष्य
9	सोमवार	अष्टमी	आश्लेषा
10	मंगलवार	नवमी	मघा
11	बुधवार	दशमी	पूर्वाफाल्गुनी
12	गुरुवार	एकादशी	उत्तराफाल्गुनी
13	शुक्रवार	द्वादशी	हस्त
14	शनिवार	त्रयोदशी	चित्रा
15	रविवार	चतुर्दशी	स्वाती

तीर्थंकर कल्याणक

16 अप्रैल: भगवान पद्मप्रभ जी ज्ञान कल्याणक
17 अप्रैल: भगवान पार्श्वनाथ जी गर्भ कल्याणक
24 अप्रैल: भगवान मुनिसुव्रतनाथ जी ज्ञान कल्याणक
25 अप्रैल: भगवान मुनिसुव्रतनाथ जी जन्म तप कल्याणक
28 अप्रैल: भगवान धर्मनाथ जी गर्भ कल्याणक
29 अप्रैल: भगवान नमिनाथ जी मोक्ष कल्याणक
01 मई: भगवान कुंथुनाथ जी जन्म तप मोक्ष कल्याणक
07 मई: भगवान अभिनंदननाथ जी गर्भ मोक्ष कल्याणक
10 मई: भगवान सुमतिनाथ जी तप कल्याणक
11 मई: भगवान महावीरस्वामी जी ज्ञान कल्याणक

माह के प्रमुख व्रत

16 अप्रैल: रत्नत्रय व्रत पूर्ण
17 अप्रैल: षोडशकारण व्रत पूर्ण
01 मई: सोलह दिवसीय शुक्ल पक्ष प्रारंभ
03 मई: रोहिणी व्रत
03 मई: अक्षय तृतीया, दान दिवस

सर्वार्थ सिद्धि

23 अप्रैल : 18/54 बजे से 29/59 बजे तक।
28 अप्रैल : 17/40 बजे से 29/29 बजे तक।
02 मई : 24/34 बजे से 29/53 बजे तक।
04 मई : 05/52 बजे से 29/52 बजे तक।
06 मई : 09/20 बजे से 29/50 बजे तक।
08 मई : 05/50 बजे से 14/58 बजे तक।
14 मई : 17/28 बजे से 29/46 बजे तक।

शुभ मुहूर्त

दुकान प्रारंभः अप्रैलः 28 मईः 4,8,12,13
मशीनरी प्रारंभ : अप्रैलः25 मईः 7,13,14
वाहन खरीदनेः अप्रैलः 16,25 मईः 4,7,13

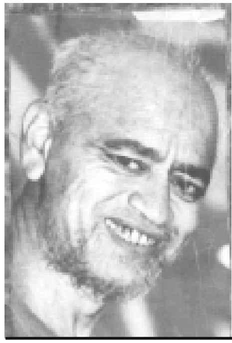

संस्कार सागर

• वर्ष : 24 • अंक : 277 • अप्रैल 2022

• वीर नि.संवत 2547 • विक्रम सं. 2078 • शक सं. 1942

आदरणीय पाठकों के लिए विशेष सूचना : आपके पास भेजी जा रही सदस्यता सूची आपकी स्लिप में जो जानकारियां नहीं है, अथवा गलत है यदि आवश्यक हो तो जानकारी संस्कार सागर कार्यालय में पत्र द्वारा अथवा फोन से सूचित करें। आप मोबाइल पर एसएमएस भी कर सकते हैं :– फोन नं. : 0731-2571851, 4003506, मो. :8989505108, 6232967108

मई 2022 से संस्कार सागर 23 वर्ष पूर्ण करके 24 वें वर्ष में प्रवेश कर रहा है। जिसका अप्रैल 2022 तक पूरा हो गया है। **पत्रिका को सुचारु रूप से प्रकाशित करनेके लिए आप अपना सदस्यता शुल्क शीघ्र ही भेजकर सहयोग करें।**

आजीवन सदस्यों के लिए 15 वर्ष तक पत्रिका भेजी जाती हैं जिन सदस्यों के 15 वर्ष अप्रैल 2022 में हो चुके हैं अतः आप 5001 रु. की राशि जमा कर संरक्षक सदस्य बनकर पीढ़ी दर पीढ़ी (सदैव) पत्रिका प्राप्त कर सकते हैं। जिन पाठकों के 4000रु. बाकी जा रहे हैं वह पहले आजीवन सदस्य थे। अब उनकी राशि संरक्षक शुल्क में कम कर संरक्षक सदस्य बनाया जा रहा है यदि आप पुनः आजीवन सदस्य बनना चाहते हैं तो 2100/- की राशि भेज सकते हैं।

4. जिन सदस्यों की पिछली राशि बाकी है उसकी जानकारी इसी पत्रिका में दी जा रही है। अतः आप शीघ्र ही निम्नलिखित खातों में राशि जमा कर अथवा सीधे भेज कर। फोन पे नम्बर 8989505108 पर कर सकते हैं। बैंक में राशि चेक द्वारा जमा करने पर कोई शुल्क नहीं कटता है अतः चेक द्वारा जमा करें।

आयसीआयसीआय	भारतीय स्टेट बैंक
श्री दिगम्बर जैन युवक संघ	**संस्कार सागर**
004105013575	63000704338

ऑनलाईन जमा करने के लिये कोड़ स्कैन करें

सदस्यता सूची का प्रारुप

सदस्यता क्र. | सदस्यता आरंभ–
सदस्यता श्रेणी | बकाया राशि
सदस्य का नाम
पता
गाँव/शहर | जिला | राज्य | पिनकोड
फोन : एसटीडी ....नंबर............मो...............

प्रतियोगिताएं : वर्ग पहेली : 66

प्रेरणा – परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के प्रियाग्र शिष्य
ऐलक श्री सिद्धांतसागरजी महाराज

प्रधान संपादक
ब्र. जिनेश मलैया, इन्दौर–89895 05108

प्रबंध संपादक
ब्र. जयकुमार निशांत टीकमगढ़–94251 41697

कार्यकारी संपादक
ब्र. सुदेश जैन कोठिया इन्दौर–9826548159

सलाहकार संपादक
श्री हुकुमचंद सांवला, इन्दौर–9542505311 1
पं. विनोदकुमार जैन, रजवांस–9575634411
डॉ. मुकेश जैन 'विमल', दिल्ली–9818855130

महिला संपादक
डॉ. ज्योति जैन, खतौली–94128 89449
ब्र. समता जैन मारौरा, इन्दौर–8989845294

अतिथि सम्पादक
डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर–97938 21108
अभिनंदन सांधेलीय, पाटन–9425863244
डॉ. पंकज जैन, भोपाल–9584201103
विनीत जैन प्राचार्य, साढ़ूमल–9721419696
अक्षय अलया, ललितपुर - 9453031432

संयोजना
इंजी. अभिषेक जैन 'रिंकू', इन्दौर–9827282170

प्रकाशक
श्री दिगंबर जैन युवक संघ, इन्दौर (म.प्र.)

❊ आंतरिक सज्जा ❊
आशीष कुशवाह, इन्दौर 9179169060

कृपया, संस्कार सागर मासिक पत्रिका का
बाकी सदस्यता शुल्क
जो पत्रिका के लिफाफे पर चिपकी पते की स्लिप पर छपा है, अविलंब भेजकर सहयोग करें।

सदस्यता शुल्क

-आजीवन	: **2100/-**	(15 वर्ष)
-संरक्षक	: **5001/-**	(सदैव)
-परम सम्मानीय	: **11000/-**	(सदैव)
-परम संरक्षक	: **15001/-**	(सदैव)

अपने शहर के
• स्टेट बैंक ऑफ इंडिया –**संस्कार सागर**
खाता क्र. 63000704338 (IFSC : SBIN0030463)
• भारतीय स्टेट बैंक –**ब्र. जिनेश मलैया**
खाता क्र. 30682289751 (IFSC : SBIN0011763)
•आईसीआईसीआय बैंक
श्री दिगम्बर जैन युवक संघ
खाता क्र. 004105013575 (IFSC : ICIC0000041)
में भी अपने पूर्ण पते सहित राशि जमा कर हमारे कार्यालय को सूचित कर सकतेहैं।

कार्यालय –संस्कार सागर
श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर,
सत्यम् गैस के सामने, ए.बी. रोड़, इन्दौर –10
फोन नं. : 0731–2571851, 4003506
मो. : 89895–05108, 6232967108
website :www.sanskarsagar.org
e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

◆ लेखक के विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
◆ संस्कार सागर में प्रकाशित रचनाएँ बिना आज्ञा, किसी भी प्रकार से उद्धृत नहीं की जाना चाहिए।
◆ कथा–साहित्य में नाम संस्था काल्पनिक होतेहैं। किसी से समानता मिलना संयोग मात्र है।
◆ पत्रिका संबंधी प्रकरण में न्याय क्षेत्र इन्दौर रहेगा।

•श्री दिगम्बर जैन युवक संघ द्वारा श्री दिगंबर जैन पंच बालयति मंदिर, ए.बी. रोड़, इन्दौर–10 से प्रकाशित एवं मोदी प्रिंटर्स (76, बी–1, पोलोग्राउंड, इन्दौर) द्वारा मुद्रित।

पाती पाठकों की....

• सम्पादक महोदय, डॉ. आनंद जैन का लेख विगत माह संस्कार सागर के अंक में **कुरल काव्य के प्रणेता संत श्री तिरुकुरल** के संदर्भ में जो जानकारी दी गई वह अभिवंदनीय है। यह सामग्री एक ऐसे महान जैन संत के बारे में संकलित की गई है जिसको महत्व उतना ही है जैसे उत्तर भारत में आचार्य तुलसी के प्रकार रामचरित मानस का महत्व है ठीक उसी प्रकार दक्षिण भारत के तमिलनाडु में कुरल काव्य का महत्व है कुरलकाव्य नीति का श्रेष्ठ ग्रंथ है ऐसे ग्रंथ और ग्रंथकार का परिचय कराके संस्कार सागर ने जैन समाज के लिये एक महत्वपूर्ण सामग्री प्रस्तुत की है पत्रिका और लेखक दोनों साधुवाद पात्र हैं।

अभिलाष जैन, भोपाल

• सम्पादक महोदय, संस्कार सागर का फरवरी 2022 का अंक जब में पढ़ रहा था तब मेरी दृष्टि एक कहानी पर गई जेल की प्रार्थना शीर्षक से लिखी गई कहानी को देखकर मुझे ऐसा लगा जेल की प्रार्थना का इस पत्रिका का क्या लेना देना है परंतु जब पूरी कहानी को पढ़ा तब मुझे लगा कि मेरी भावना एक ऐसी सर्वव्यापी कृति है जिसके अन्दर राष्ट्रीयता मानवता न्यायप्रियता न्याय स्थिरता एवं धर्म अध्यात्म दर्शन की अदभुत प्रेरणा है इस कृति को जैनों की न कहकर जन-जनकी कहा जाये तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। सचमुच में इस रचना के प्रत्येक शब्द शसक्त अनुभूति देने में सक्षम हैं। मेरी भावना को जैनों तक सीमित कर देना समुद्रा को कुआं बनाना जैसा है प्रस्तुत कहानी ममस्पर्शी सुबोध ओर सरल है।

राजीव जैन, दिल्ली

• सम्पादक महोदय, विगत दिनों रूस ने युक्रेन की सीमा पर सेना तैनात कर युद्ध की घंटी बजाने का प्रयास किया था परंतु रूस के राष्ट्रपति बालिद मीर पुतिन यह भूल गये कि वे और उनके ठग खुले आम अमेरिका ब्रिटेन व यूरोपीय संघ के राजनेताओं का खुले आम उपहास उड़ाते हैं। यूक्रेन रूस मसले पर पश्चिम को एक जुट होकर खड़ा होना चाहिये और गंभीर प्रतिबंधो बरामदगी ओर निष्कासन के लिये तैयार रहना चाहिये रूस यदि यूक्रेन पर आक्रमण करता है तो मास्को को आर्थिक रूप से पूरी तरह अलग अलग छोड़ देना चाहिये। ब्रिटेन को क्रेमलिन से जुड़े कुलीन वर्गों को निशान बनाना चाहिये उनकी संपत्ति और लंदन की हवेली को जब्त करना चाहिये उनके बच्चों को पब्लिक स्कूलों से निष्कासित किया जाना चाहिये तथा पूरे परिवा को निर्वासित करना चाहिये।

विभोर जैन, मेरठ

• सम्पादक महोदय, संस्कार सागर का फरवरी 2022 का अंक संग्रहणीय है। लगभग सभी लेख स्तरीय हैं, विशेष रूप से और हम खड़े-खड़े नरकगति में चौबीस, जैन न्याय परम्परा के संवाहक आचार्य, वरिष्ठ नागरिक, एवं अन्य सभी पठनीय हैं, इस अंक में ही नहीं हर अंक में विविध पठनीय सामग्री होती है जो हर वर्ग के लिये उपयोगी है। जैन पत्रिकाओं में संस्कार सागर अपना विशिष्ट स्थान बनाये रखने में सफल हैं निरंतर प्रकाशन भी सराहनीय है। पत्रिका सदैव समय पर प्राप्त होना भी प्रकाशक ही प्रबंध कुशलता हैं।

डॉ. आर.के. जैन, कोटा

भक्ति तरंग
पद्मप्रभ भक्ति

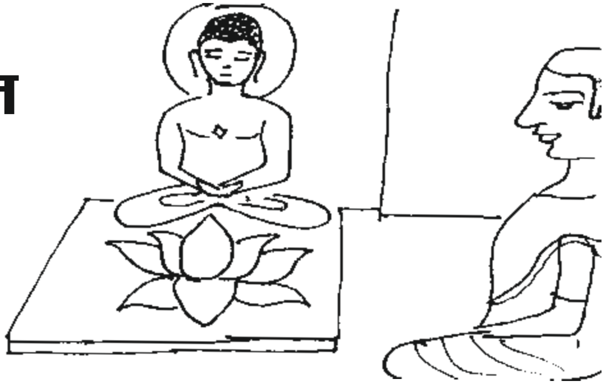

पद्मसद्म पद्मापद पद्मा मुक्ति दरशावन है।
कलि-मल गंजन अलि रंजन, मुनिजन शरन सुपावन है।
जाकी जन्मपुरी कुंशबिका, सुर नर-नाग रमावन है ।
जास जन्मदिन पूरब षटनव, मास रतन बरसावन है ॥1॥
जो तपथान पपोसागिरि सो, आत्म-ज्ञान थिर थावन है ।
केवलजोत उदोत भई सो, मिथ्यातिमिर-नशावन है ॥2॥
जाको शासन पंचाननसो, कुमति मतंग नशावन है ।
राग बिना सेवक जन तारक, पै तसु रूपतुष भाव न है ॥3॥
जाकी महिमाके वरननसों सुरगुरु बुद्धि थकावन है ।
दौल, अल्पमति को कहबो जिमि, शशकगिरिंद धकावन है ॥4॥

हे पद्मप्रभ जिनदेव। आप मोक्षरूपी लक्ष्मी के स्वामी है और आपके चरण कमल मुक्ति की दिशा-स्थान को बताने वाले हैं । आप पापरूपी मैल को नाश करने वाले हैं आप मनरूपी भ्रमर को प्रसन्नता देने वाले कमल हैं, मुनिजनों के लिये पवित्र शरणदाता हैं।

सुर, नर और नाग सभी के मन को भाने वाली कोशांबी नगरी जिनकी जन्मस्थली है। जिनके जन्म से पंद्रह मास पूर्व से वहाँ रत्नों की वर्षा होने लगी थी।

पपोसा पर्वत जिनका तपस्थान है जो आत्मज्ञान में एकाग्र होने का स्थिर होने का स्थान है। वहाँ ही आपने मिथ्यात्वरूपी अंधकार का नाश करने वाले कैवल्य को प्राप्त किया।

आपका उपदेश सिंह की भाँति मिथ्यात्वरूपी हाथी का नाश करने वाला है। आप बिना किसी राग के उन सेवक जनों को तारते हो जिनके कुछ भी राग-द्वेष-ममत्व नहीं रहता अर्थात् जो राग द्वेषरहित होकर समतावान होते हैं आप उन्हें तारते हैं।

जिनकी महिमा का वर्णन करने के लिये वृहस्पति भी समर्थ नहीं है। दौलतराम कहते हैं कि जैसे खरगोश सुमेरु पर्वत को थकेलने का प्रयास करें , उसी भाँति में अल्पमति उस महिमा का वर्णन किस प्रकार कर सकता हूँ। अर्थात् समर्थ नहीं हूँ।

संस्कार प्रवाह

तीर्थ रक्षा की उम्मीद युवावर्ग से

शक्ति से ही हर समस्या का समाधान मिलता है। शक्तिवान का हर कोई मित्र होता है। कमजोर प्राणी की ही बलि चढ़ाई जाती है। शक्तिवान की नहीं। बौद्धिक शक्ति मंत्र शक्ति, अर्थ शक्ति और शारीरिक शक्ति से बड़ी संगठन शक्ति होती है। धर्म संस्कृति की रक्षा के लिये संगठन शक्ति की कार्यकारी होती है। धन के माध्यम से शरीर की रक्षा की जाती है। और शरीर को समर्पित करके इज्जत प्रतिष्ठा की रक्षा होती है तन,धन, और प्रतिष्ठा तीनों का सर्मपण करके हर साधक धर्म संस्कृति की रक्षा करता है।

युवा संगठन की शक्ति ने ही इस युग में क्रांतिकारी परिर्वतन को साकार किया है। देश समाज धर्म के नेताओं ने अपने सपनों को युवाओं के आधार पर ही मूर्तरूप दिया है। युवा शक्ति ही धर्म रक्षा का संकल्प लेती रही है। युवा समूह की अपनी संकल्प और इच्छा शक्ति के माध्यम से हर योजना मूर्तरूप दे देती है। युवा वर्ग ने ही भारत देश की किस्मत का निर्माण हर युग में किया तथा वंदे मातरम के घोष को सदा गगनचुंबी बनाया है। वे ही क्रांतिकारी बने हैं जिनकी अवस्था युवा रूप में रही है चाहे वे भगतसिंह या चंद्रशेखर आजाद या फिर वे सुभाषचंद बोस क्यों न रहे हो। भारत की आजादी क्रांतिकारी युवाओं ने ही साकार की है।

अब युवा समूह से तीर्थ संरक्षण और संवर्धन की आशा की जा रही है। युवाओं को स्वावलम्बी, स्वाभिमानी आजीविका उपार्जन का साधन सौंपकर हथकरघा और चरखा के माध्यम से धर्मरक्षा का स्वप्न साकार करने में सफलता अर्जित की जा सकती है। तीर्थ हमारे आस्था के केन्द्र हैं तीर्थों से ही हमारी पहचान है अतः युवावर्ग ही धर्मदर्शन संस्कृति की रक्षा करेगा, ऐसा विश्वास है।

भगवान महावीर के उपदेशों में आर्जव धर्म

✻ डॉ. सुनील जैन संचय, ललितपुर ✻

मन, वाणी और कर्म की पवित्रता और यह पवित्रता ही किसी व्यक्ति को महान बनाती है। महापुरुष जो कहते हैं, वही करते हैं, किन्तु कुटिल पुरुषों की कथनी और करनी में अन्तर होता है। यह मायाचार है। शास्त्रों में इसे त्याज्य बताया गया है। आज सर्वत्र मायाचार या छल-कपट का साम्राज्य है। आज धर्म के क्षेत्र में भी मायाचार देखा जा सकता है। इस धर्म का ध्येय है कि हम सबको सरल स्वभाव रखना चाहिये, मायाचारी त्यागना चाहिये।

क्षमा और मार्दव के समान ही आर्जव भी आत्मा का स्वभाव है। आर्जव स्वभावी आत्मा के आश्रय से आत्मा छल-कपट मायाचार के अभावरूप शांति-स्वरूप जो पर्याय प्रकट होती है उसे भी आर्जव कहते हैं। यद्‌पि आत्मा आर्जव स्वभावी है, तथापि अनादि से ही आत्मा में आर्जव के अभाववरूप माया कषाय रूप पर्याय ही प्रकट से विद्यमान है।

ऋजोर्भावः आर्जवम् ऋजुता अर्थात् सरलता का नाम आर्जव है। आर्जव के साथ लगा उत्तम शब्द सम्यग्दर्शन की सत्ता का सूचक है। सम्यग्दर्शन के साथ होने वाली सरलात ही उत्तम आर्जव धर्म हैं उत्तम आर्जव अर्थात् सम्यग्दर्शन सहित वीतरागी सरलता।

आर्जवधर्म की विरोधी माया कषाय है। माया कषाय के कारण आत्मा में स्वभावगत सरलता न रहकर कुटिलता उत्पन्न हो जाती है। मायाचारी का व्यवहार सहज एवं सरल नहीं होता। वह सोचता कुछ है, बोलता कुछ है और करता कुछ है। उसके मन-वचन-काय में एक रूपता नहीं रहती। वह अपने कार्य की सिद्धि छल-कपट के द्वारा ही करना चाहता है।

आर्जव के विपरीत मायाचारी होती है। छल-कपट करना मायाचारी कहलाता है। यदि अपने जीवन में आर्जव को लाना चाहते हैं तो अपने छल-कपट अर्थात मायाचारी का त्याग करना होगा। इस धर्म का ध्येय है कि हम सबको सरल स्वभाव रखना चाहिये, मायाचारी त्यागना चाहिये। जैसा अपने मन में विचार किया जाये, वैसा ही दूसरों से कहा जाये और वैसा ही कार्य किया जाये। इस प्रकार मन-वचन-कार्य की सरल प्रवृत्ति का नाम ही आर्जव है। जहाँ पर कुटिल परिणाम का त्याग कर दिया जाता है। वहीं पर आर्जव धर्म प्रगट होता है।

आज कल सभ्यता के नाम पर भी बहुत-सा मायाचार चलता है, बिना लाग-लपेट के कहीं गई सच्ची बात तो लोग सुनना भी पसंद नहीं करते। यह भी एक कारण है कि लोग अपने भाव सीधे रूप में प्रकट न करके। एड़े-टेड़े रूप में व्यक्ति करते हैं। सभ्यता के विकास ने आदमी को बहुत कुछ मीठमोला बना दिया है। आज के आदमी के लिये ऊपर से चिकनी-चुपड़ी बातें करना और अन्दर से काट करना एक साधारण सी बात हो गई है। वह यह नही समझता कि यह मायाचारी दूसरों के लिये ही नहीं, स्वयं के लिये भी बहुत खतरनाक साबित हो सकती है, उसके सुख-चैन को भंग कर सकती है। भंग क्या कर सकती है, किये रहती है। जैनाचार्य कहते हैं कि-

योगस्यावक्रता आर्जवम्। मन-वचन-काय की सरलता का नाम आर्जव है। ऋजु अर्थात् सरलता का भाव आर्जव है। अर्थात् मन-वचन-काय को कुटिल नहीं करना, इस मायाचारी से अनंतों कष्टों को देने वाली तिर्यंच योनि मिलती है।

जो बात मन में है, उसे ही वचन द्वारा प्रकट करना आर्जव है और उससे विरूद्ध मायाचार है, अधम है। अपनी मनः स्थिति को व्यक्त करना शुभ है, मन की बात छिपाकर बनावटी बात मुंह से कहना अशुभ का संकेत है। धर्म में प्रवेश करने के लिये इस मायाचार से मुक्त होना आवश्यक है।

जो साधक मन में कुटिल विचार नहीं रखता, वचन से कुटिल बात नहीं कहता, शरीर से भी कुटिल चेष्टा नहीं करता तथा अपना दोष नही छिपाता, वही उत्तम आर्जव धर्म का पालक है। जितने सरल हम अपने जीवन में होते जायेंगे, उतने ही हम ईश्वरत्व के समीप होते जायेंगे। कोई भी व्यक्ति परमात्मा का भक्त तब तक नहीं हो सकता, जब तक उसमें मायाचार का अंश भी विद्यमान है। मायाचारी अपने कपट व्यवहार को कितना ही छिपायें, देर-सबेर वह प्रकट होता ही है। इसीलिये कहा गया-नहीं छिपाये से छिपे, माया ऐसी आग, रुई लपेटी आग को, ढांके नहीं वैराग। आज का मानव बहुरूपिया है। उसका स्वभाव जटिलताओं का केन्द्र बन गया है। रिश्तेदारों के साथ, अतिथियों तथा अड़ोस-पड़ोस में बसने वालों वह अपनी मायाचारी बुद्धि का कमाल दिखाये बगैर नहीं रहता।

सभी को सरल स्वभाव रखना चाहिये, कपट को त्याग करना चाहिये। कपट के भ्रम में जीना दुखी होने का मूल कारण है।

उत्तम आर्जव धर्म हमें सिखाता है कि मोह-माया, बुरे काम सब छोड़-छाड कर सरल स्वभाव के साथ परम आनंद मोक्ष प्राप्त कर सकते हैं।

कविता

आज के लोग न जाने कितने बदनसीब हैं

आज के लोग न जाने कितने बदनसीब हैं
राम के ये भक्त रावण के करीब हैं
असत्य को दिया सिंहासन बादशाह की तरह
सत्य का मसीहा ढोता सलीब है
मंदिर में गूंजती घंटियाँ हर वक्त जरूर
भगवान के पीछे छुपे दानव कितने अजीब हैं
कैसे भरी तिजोरियाँ उनकी मैं जानता
वो हंसते रहे सदा मगर रोते गरीब हैं।

इम्यूनिटी पावर बढ़ायें

✻ डॉ. आशा जैन, इंदौर ✻

भारतीय भोजन की थाली स्वतः ही इम्यूनिटी पावर वर्धक है। नित्य सुबह शाम नियम पूर्वक घर का बना हुआ शुद्ध सात्विक, सन्तुलित भोजन करना स्वतः ही रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने वाला होता है। ऋतु अनुसार हमारे भोजन में भी बदलाव होता है। शीत ऋतु में जब हमारी जठराग्नि (पाचनतंत्र) की क्रिया तेज रहती है। उस समय मक्का, बाजरा, ज्वार, गुड़, तिल, मुंगफली, सूखे मेवे, बादाम, खसखस का हलुआ, मूंग की बर्फी, उड़द के लड्डू आदि बलवीर्य एवं स्मृति वर्धक होने के कारण अनेकानेक घरों में उपयोग में लाये जाते हैं।

शीत ऋतु में शीत से बचाव हेतु पिंड खजूर या खारक युक्त दूध, या हल्दी तुलसी के पत्ते एवं अदरक डालकर उवाला गया दूध का सेवन लाभप्रद होकर रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है।

ग्रीष्म एवं वर्षा ऋतु में बड़े हुये वातज एवं पित्तज विकारों के शमन हेतु दूध, दही, छाछ, ठंडाई, झोलिया, (केरी का पना), पुदीना, मौसमी फलों एवं सब्जियों का सेवन, स्वतः ही रोगों से लड़ने की शक्ति प्रदान करते हैं।

आज जब महामारी अपनी चरम सीमा पर है, जब सब कह रहे हैं कि बाजार के खाद्य पदार्थों का इस्तेमाल न करें। हमारी तो संस्कृति में ही है। जब कहीं बाहर जाते तो घर का बना भोजन एवं पानी लेकर चलते। होटलों का भोजन सड़क पर लगे ठेले, होटलों का चाय, नास्ता, पानी, पेक फूड, चाईनी जंक फूड़, चाउमीन, ब्रेड, मन्चूरियन, नूडल्स, हाटडॉग, पास्ता आदि जो आज प्रवन में हैं, उन्हें तो हमारी संस्कृति छूने की भी सलाह नहीं देती है, परन्तु उन्हीं वस्तुओं को घर जाकर अपने बच्चों को खिला रहे हैं।

आज आधुनिक संस्कृति में बच्चों को देखकर खुश होते हैं, परन्तु उनका स्वास्थ्य किस तरफ जा रहा है उनके पढ़ने, सोने, सोकर उठने एवं भोजन का कोई निश्चित समय नही है। इस अस्तव्यस्त दिन चर्या में हम इम्यूनिटी पावर बढ़ाने की बात करते हैं। व्यायाम, योग, प्राणायम, ध्यान आदि की बातें करते हैं। यह यदि आज का युवा वर्ग अपना ले तो बड़े सौभाग्य की बात होगी। जब तक बाजार बंद थे, सभी अपने घरों में कैद थे एवं महामारी से बचे हुये थे। बाजार खुलते ही उनमें पुनः रौनक आ गई है।

इम्युनिटी वर्धक पेय

खस	50 ग्राम
लालचन्दन	50 ग्राम

पित्त पापड़ा	50 ग्राम
धनिया	50 ग्राम
सोंठ	20 ग्राम
नागरमोंथा	20 ग्राम
गिलोय	20 ग्राम
मुलहठी	50 ग्राम
सोंफ	50 ग्राम

समस्त द्रव्यों को मिलाकर पीस कर चूर्ण करें। एक गिलास जल में 10 ग्राम चूर्ण डालकर मंद आंच कर उबालें। छानकर शक्कर मिलाकर गर्म-गर्म चाय के समान सुबह शाम सेवन करें। बल्कि चाय के स्थान पर इसका ही सेवन किया जाये तो अति लाभप्रद है। परिवार के सभी सदस्य इसका सेवन कर सकते हैं। फ्रिज में रखकर ठंडे रूप में भी यह स्वादिष्ट एवं लाभप्रद है।

शतावरी	50 ग्राम
अश्वगंधा	50 ग्राम
नागरमोंथा	50 ग्राम
त्रिफला	50 ग्राम
हरण व हेड़ा आंवला	
त्रिकटु	50 ग्राम
सोंठ कालीमिर्च	
पीपल गिलोय	50 ग्राम

समस्त द्रव्य मिलाकर चूर्ण करें एक गिलास जल में 10 ग्राम चूर्ण मंद आंच पर उबालें। छानकर शक्कर मिलाकर सेवन करें।

काली मुनक्का	5 नग
उन्नाव	5 नग
विदाना	5 ग्राम
गांजवां	5 ग्राम
खूबकला	2 ग्राम
मुलैठी चूर्ण	2 ग्राम

सर्व प्रथम मुनक्का धोकर उसके बीज निकाल लें। उन्नाव को काट कर उसकी गुठली निकाल लें। फिर एक गिलास जल में समस्त द्रव्य उबालकर (मंद आंच में) छानकर शक्कर मिलाकर सेवन करें।

समस्त परिवार के लिये उत्तम पेय है।

संयम स्वास्थ्य योग

बंधयोग से निरोग की यात्रा

किसी भी सुखदायक आसन में बैठे गुदा द्वार का आकुंचन व विमोचन (गुदाद्वार को ऊपर की ओर खींचें व ढीला छोड़े) करें। इसे दोनों कुंभक के साथ किया जा सकता है।

उड्डियान बंध- किसी भी आसन में बैठे श्वास भरकर धीरे पूर्ण श्वास खाली कर दें। श्वास रोककर सीना ऊपर उठाएँ। नाभि को अन्दर व ऊपर की और खींचकर रखें, अपनी क्षमतानुसार रूकें, तत्पश्चात् सीना ढीला छोड़ दें, पेट स्वयं ढीला हो जायेगा। श्वास प्रश्वास सामान्य रखें।

जालंधर बंध- किसी भी सुखदायक आसन में बैठ जाये। कुंभक कर गर्दन को झुकाकर कंठ कूप से लगाये, अपनी क्षमतानुसार रूकें धीरे-धीरे गर्दन सीधी करें।

महाबंध- जब तीनों बंध को एक साथ किया जाये तो महाबंध होता है।

बंद मुद्राएँ - बंधों के अभ्यास से आंतरिक अंगों को मसाज होती है, रक्त का जमाव दूर होकर रक्त संचार सुगम होता है। बंधों का अभ्यास बाह्य व आंतरिक कुंभक में अनिवार्य है।

कुंभक- श्वास को भरकर अंदर रोकना अथवा वाहर रोकना कुंभक कहलाता है।

आंतरिक कुंभक- श्वास को भरकर अंदर रोकना आंतरिक कुंभक कहलाता है।

बाह्य कुंभक- श्वास खाली करके बाहर ही रोकना बाह्य कुंभक कहलाता है।

विद्वत महासम्मेलन सम्पन्न

कुंडलपुर- विद्वत महासम्मेलन को संबोधित करते हुये आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज ने कहा कि कर्म की 148 प्रकृतियों को घातियाँ अघातियाँ दो रूप में वर्गीकृत किया जाता उनमें घातियाँ कर्म तो शुद्ध रूप से पाप प्रकृति है उसका घात/क्षय सर्वप्रथम किया जाता है। तदुपरांत अघातियाँ कर्म के पाप रूप प्रकृतियों को भी घातिया कर्म के साथ या निर्जरा को प्राप्त करा दिया जाता है फिर योग के निरोध करके पुण्य के स्थिति कांडक जो पाप रूप माने जाते है उनका क्रम आता है पश्चिम स्कंध में भी पुण्य की निर्जरा नहीं होती है। इस तरह से सारांश के रूप में कहा जा सकता है कि पुण्य निर्जरा नहीं होती है। अपितु निर्जरा तो मात्र पाप प्रकृतियों की होती है। अधिक तर विद्वानों की मान्यता है कि निर्जरा तो पुण्य/पाप दोनों की निर्जरा होती परन्तु इस भ्रान्ति को दूर करना होगा और निश्चित करना होगा कि निर्जरा पुण्य की नहीं मात्र पाप कि पुरुषार्थ पूर्वक की जाती हैं।

आगे आचार्य श्री ने कहा क्षायिक सम्यग्दर्शन भी घटता बढ़ता है क्योंकि क्षायिक सम्यग्दर्शन की तीन अवस्थायें होती हे- जघन्य मध्यम और उत्कृष्ट। तिर्यंचगति में क्षायिक सम्यक्त्व की जघन्य अवस्था होती है तथा मनुष्य गति में तीनों अवस्थायें पाई जाती है बारहवें गुणस्थान में अर्थात् क्षीण मोह की अवस्था में सम्यक्त्व अवगाढ़ होता है और सयोग केवली तेरहवें गुणस्थान में जब अरिहंत अवस्था को आत्मा प्राप्त करती है उस समय सम्यग्दर्शन परम अवगाढ़ अवस्था को प्राप्त होता है अतः जो चौथे गुणस्थान में अर्थात् अविरति सम्यग्दृष्टि की अवस्था में सम्यक्त्व को पूर्ण मान लेते हैं उन्हें आगम के परिपेक्ष्य में पुनः विचार करना होगा। रत्नत्रय की पूर्णता तो चौदहवें गुणस्थान में ही होती हे फिर भी एक समुदाय के लोग आगम की सम्पूर्ण व्याख्याओं को एवं पूर्व आचार्यों के आशय को नजर अंदाज करते हुये चतुर्थ गुणस्थान में रत्नत्रय की पूर्णता मानने का दुःसाहस करते हैं।

संगोष्ठी की अध्यक्षता श्री श्रेयांस कुमार जी बड़ौत ने की तथा संगोष्ठी का कुशल संचालन ब्र. जयनिशान्त जी ने किया एवं मुकेश जी दिल्ली ने संचालन में सहयोग दिया।

आचार्य श्री के पूर्व डॉ. फूलचंद प्रेमी बनारस, डॉ. भागचन्द्र भागेन्दु दमोह, डॉ. अनुपम जैन इंदौर, डॉ. पंकज भोपाल, के नलिन शास्त्री लाडनु, डॉ. राजेन्द्र बंसल अमलाई ने अपने विचार रखें। अंत में आभार ब्र. जिनेश जी मलैया इंदौर ने माना।

समयसार में प्रतिपादित अप्रतिबुद्ध जीव का लक्षण और स्वरूप

❋ एलक सिद्धांतसागर जी महाराज ❋

आचार्य कुन्दकुन्द देव ने शरीर और आत्मा को एक मानने वाले बहिरात्मा जीव को अप्रतिबुद्ध स्वसंवेदना से शून्य जीव कहा है उस अप्रतिबुद्ध जीव का लक्षण बताते हुये आचार्य कुन्दकुन्द कहते हैं कि जब तक यह जीव ज्ञानावरणादि द्रव्य कर्म राग द्वेष आदि भाव कर्म, और शरीर आदि नौकर्म में यह प्रतीत करता रहता है कि मैं कर्म नौकर्म हूँ ये कर्म नौकर्म मेरे हैं तब तक वह आत्मा अप्रतिबुद्ध अर्थात् अज्ञानी रहता है। जीव तथा अजीव शरीर आदि में जिस समय यह आत्मा उपयुक्त होता है तभी बन्ध तथा मोक्ष होता है। ऐसा सर्वज्ञ देव ने संक्षेप से कहा है।

निश्चय से आत्मा जिस समय जैसे शुद्ध भावों को उत्पन्न करता है। उस समय वह उस भाव का कर्ता होता है और व्यवहार नय से पुद्गल कर्म का कर्ता होता है आगे आचार्य श्री कुन्दकुन्द देव ने कहा है सचित्त-अचित्त और मिश्र पदार्थों में सो यह हैं यह सौ मैं हूँ ये मेरे हैं मैं इनका हूँ ये मेरे पहले थे मैं पहले इनका था आगे भी ये मेरे होंगे मैं इनका होऊँगा इस प्रकार संयोग आत्मक आत्मा अपने आप से भिन्न पदार्थों में विकल्प करता है वह मूढ़ अर्थात् मोहभाव का धारक होता हे। और जो मोह रहित संयत होता है वह भूतार्थ निश्चयात्मक सम्यग्दृष्टि अंतर आत्मा आत्म स्वरूप का अनुभव करता है। और सब विकल्पों से दूर रहता है।

आचार्य कुन्दकुन्द देव ऐसे अप्रतिबुद्ध जीव को समझाने का प्रयास करते हैं वे कहते हैं अज्ञान से ठगी हुई बुद्धि वाले संसारी प्राणी अपने साथ में रहने वाली शरीर और शरीर से भी पृथक रहने वाले आभूषण आदि पुद्गल द्रव्य को अपना कहता है। और अनेक प्रकार से रागद्वेष रूप कल्पना करता है। इस पर आचार्य कुन्दकुन्द देव कहते हैं कि हे भाई जब सर्वज्ञ देव ने जीव को नित्य उपयोग लक्षण वाला देखा है तो फिर वह पुद्गल द्रव्य रूप कैसे हो सकता है। जिससे कि तू पुद्गल आत्मक पर द्रव्य को मेरा-मेरा कहता है यदि जीव द्रव्य पुद्गल रूप हो जाये तो पुद्गल द्रव्य भी जीव रूप हो जायेगा तब तू कह सकता है यह पुद्गल द्रव्य मेरा है परन्तु ऐसा होना तीन काल में संभव नहीं है फिर तू यह भूल क्यों करता है।

आचार्य अमृतचन्द्र देव का अप्रतिबुद्ध जीव लक्षण के विषय में विचार- आचार्य अमृतचन्द्र देव ने कर्म मोह आदि अंतरंग परिणाम नौकर्म शरीर आदि बाह्य वस्तुऐं ये सब पुद्गल के परिणाम हैं और आत्मा का तिरस्कार करने वाले हैं अहंकार और ममकार आत्मत्रासकारी परिणाम हैं स्वतः अथवा परतः जिसके भेद विज्ञान होता है वही प्रतिबुद्ध होगा।

पर में अहंकार और ममकार करने वाला तीनों काल की दृष्टि से अग्नि और ईधन को मिले हुये देखता है तो वह अप्रतिबुद्ध अज्ञानी जीव है और जो पर द्रव्य में आत्मा की बुद्धि निश्चित

करता है वही अप्रतिबुद्ध कहलाता है और जो स्वद्रव्य में ही सत्यार्थ आत्म विकल्प होता है वह ज्ञानी प्रतिबुद्ध कहलाता है।

जड़ और चेतन कभी एक नहीं हो सकते हैं क्योंकि जीव योग और उपयोग वाला है जबकि पुद्गल द्रव्य अनुपयोग रूप जड़ लक्षण वाला है।

आचार्य जयसेन जी की दृष्टि में अप्रतिबुद्ध का लक्षण

आचार्य जयसेन जी ने भेद-विज्ञान मूल शुद्धात्मा अनुभूति जिनको प्राप्त हुई है वे जीव शुभ-अशुभ बाहरी पदार्थों में निर्विकार होते हैं वे स्वयंबुद्ध कहलाते हैं। एक स्वभाव निज आत्मा में रमण करने वाले प्रतिबु8 होते हैं और वे पर द्रव्य से विरक्त होते हैं आचार्य जयसेन जी ने अहंकार और ममकार रूप विकल्प जाल को छोड़कर निर्विकार चैतन्य चमत्कार मात्र निज परमात्म तत्व की भावना करनी चाहिये ऐसी प्रेरणा दी है। अग्नि ओर ईधन का दृष्टांत अमृतचन्द्र आचार्य के समान ही दिया है तथा लवण वर्षाकाल में जल मय हो जाता है और ग्रीष्म काल में वह लवण घनमय होता जाता है इसी तरह से योग-उपयोग में लीन होने वाला ही प्रतिबुद्ध कहलाता है।

कविता

राष्ट्रवाद की बलिवेदी पर

रचियताः सुभाषचंद्र सरल, अशोकनगर

राष्ट्रवाद की बलिवेदी पर
हम अपना शीश चढ़ायेंगे।
हँसते-हँसते गाते-गाते
हम अपना वचन निभायेंगे।
हम नहीं सनातनी, हम नहीं मुस्लिम
हम नही सिख, ईसाई हैं।
हम सब भारत माँ के बेटे
हम सब भाई-भाई हैं
राष्ट्रवाद की बलिवेदी पर
हम अपना शीश चढ़ायेंगे।
हँसते-हँसते गाते-गाते
हम अपना वचन निभायेंगे।
हम नहीं अल्पसंख्यी, बहुसंख्यी
हम नीं अ.जा, ज.जा हैं।
हम नही अगड़े, हम नहीं पिछडे
हम सब भारतीय जनता हैं
वर्ग भेद की की बलिदेवी पर
हम अपना शीश चढ़ायेंगे।
हँसते-हँसते गाते-गाते
हम अपना वचन निभायेंगे।
हम नहीं तमिल, बंगाली, गुजराती
हम नही मध्यप्रदेशी हैं।
हम नहीं राजस्थानी, कश्मीरी,
हम सब भारत देशी हैं
क्षेत्रवाद की बलिवेदी पर
हम अपना शीश चढ़ायेंगे
हँसते-हँसते गाते-गाते
हम अपना वचन निभायेंगे।
हिन्दुस्तान के, हम सब वासी,
हिन्दी हमारी भाषा हो।
जन्मे, पले-पुसे भारत में
अपनी माता भारत माता हो।
भारत माता के चरणों में,
हम अपना शीश चढ़ायेंगे।

पूज्य आर्यिका 105 श्री विशुद्धमति माताजी जीवन परिचय एवं अवदान

❊ श्रीमती सुषमा जैन, भिलाई ❊

हम किसी हरे भरे फलदार वृक्ष की शोभा निहारते हैं उसकी छाया का आनंद लेते हैं। तो मन मे ये विचार आता है कि मिट्टी में छोटा सा पौधा रहा होगा, कुशल माली ने इसे खाद पानी और समय-समय पर बड़े परिश्रम से ये सुन्दर आकार दिया होगा। और वृक्ष ने भी जड़ो से रस लेकर अपना विकास किया होगा। ये सभी चिंतन परम विदुषी आर्यिका 105 श्री विशुद्धमती माता जी के व्यक्तित्व निर्माण में सही लगते हैं। माताजी गृहस्थ अवस्था में मेरी बुआ थी, पहले हम सब उन्हें बाई कहा करते थे, उन्होंने अपने जीवन जो ऊंचाईयां पाई। और अपनी (नारी) पर्याय में उत्कृष्ट पद को प्राप्त किया। ज्ञानार्जन तप, संयम, साधन का फल सल्लेखनापूर्वक मरण कर अपना जीवन सार्थक किया। उनके गृहस्थ जीवन को देखें तो लगता है कि किसी सुविज्ञ ने सही कहा है।

शानदार था भूत भविष्यत भी महान है।
गर संभाले आप उसे तो वर्तमान है।

माता जी अपने साथ पूर्व की पुण्य संपदा लाई। अद्भुत साहस और दृढ़ता के साथ सम्यक पुरुषार्थ द्वारा अपने वर्तमान के जीवन के साथ भावी जीवन भी अच्छा बना लिया। माता पिता से मिली संस्कारो की पूंजी के साथ पूज्य संत श्री गणेश प्रसाद जी वर्णी के संपर्क से सदाचार और दर्या धर्म के संस्कार ही जीवन में सहायक हुये। थोड़ी सी स्कूली शिक्षा प्रापत की, तभी पंद्रह वर्ष की आयु में उनका विवाह हो गया, कुछ समय बाद पिता का वियोग हो गया। विवाह के डेढ़ वर्ष बाद ही उन्हें वैधव्य का दुख सहन करना पड़ा उनके विधवा होते ही कुाछ समय बाद उनके बड़े भाई जिन्हें परिस्थितियों से जूझने की हिम्मत विरासत में मिली थी, वे अपनी विधवा बहिन को अपने साथ घर ले आए। तब सुमित्रा बाई जी ने इसे अपने कर्मों का फल मानकर साहस से सहा और अपना सारा पुरुषार्थ वर्तमान को संवारने में लगा दिया। दिगम्बर जैन महिलाश्रम (सागर) में प्रवेश कर दो माह की पढ़ाई में प्रायमरी परीक्षा अच्छे नंबरों से पास करी। मिडिल का तीन वर्षीय पाठ्यक्रम दो वर्ष में ही पूरा कर लिया। जबलपुर में नार्मल ट्रेनिंग करी। बम्बई में एक वर्ष का प्रशिक्षण लेकर आई तब उनके भाई श्री नीरज जी उन्हें श्री गणेश प्रसाद जी वर्णी का आशीर्वाद दिलाने ईसरी ले गये। वर्णी जी ने उन्हें सरकारी नौकरी करने को मना करा, और परिग्रह, परिमाण का संकल्प कराया और आदेश दिया कि जिस मातृ संस्था में तुमने शिक्षा प्राप्त की है उसी महिलाश्रम की सेवा तुम्हें करना है वह संस्था छोड़कर कहीं नहीं जाना। सुमित्रा जी ने 14 वर्ष तक अध्यापिका पद पर महिलाश्रम को अपनी सेवायें दी। कई विधवा व असहाय बहनों को सहारा देकर उनका जीवन संवारा। स्वाध्याय का नियम होने से धर्म ग्रंथों का अध्ययन जारी रहा। सागर

में श्री पन्नालाल जी साहित्याचार्य ने कई वर्षों तक अत्यंत वात्सल्य भाव से धर्मग्रंथों का अभ्यास कराया। गर्मी हो या सर्दी पंडित जी प्रातः 4 बजे उन्हें पढ़ाने महिलाश्रम पहुँच जाते थे और बाई की भी ऐसी लगन थी कि अपना पाठ पूरा करके ही सोती थी। महिलाश्रम का नियम था रात 10 बजे लाईट बंद हो जाती थी तो बाई भोजन में मिलने वाले घी का दीपक जलाकर अपना पाठ पूरा करती थी। सुमित्रा जी का सेवाकाल के साथ व्यक्तित्व निर्माण का भी समय रहा। उन्होंने विद्याध्यान कर साहित्य रत्न विद्यालंकार आदि उपाधि प्राप्त की। ज्ञान के साथ-साथ जीवन में संयम की भावना अंकुरित होने लगी धर्म-आराधना और धर्म-प्रभावना के कार्य ही सर्वोपरि हो गये। बिहार बंगाल और आसाम तक धर्मोपदेश के लिये यात्रायें करने लगी। उन्हीं के प्रयासों से महिलाश्रम में श्री पार्श्वनाथ जिन चैत्यालय की स्थापना हुई। इन सभी उपलब्धियों में सबसे ज्यादा सहायक हुआ पूज्य क्षुल्लक श्री गणेशप्रसाद जी वर्णी का चरण सान्निध्य एवं आशीर्वाद। ईसरी प्रवास में वर्णी जी की समाधि के अंतिम पांच छह वर्षों तक प्रति वर्ष वर्णी जयंती पर हम सब परिजन एवं बाई जी ईसरी जाते थे। सन् 1961 में वर्णी जी के संल्लेखना समाधि के दृश्यों को देखकर सुमित्रा बाई जी के मन में वैराग्य के अंकुर पनपने लगे।

वैराग्य पथ की ओर- मणिकांचन संयोग मिला कि चारित्र चक्रवर्ती परमपूज्य आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज के द्वितीय पट्टाचार्य परम तपस्वी आचार्य श्री शिवसागर जी महाराज के संघ के तपस्वी महामुनि धर्मसागर जी (जो बाद में आचार्य बने) का अगले ही वर्ष सागर में चातुर्मास हुआ। संघस्थ मुनि वैराग्य के साधक श्री सन्मतिसागर के सद्उपदेशों ने सुमित्रा बाई के जीवन की दिशा ही बदल ही बहुत ही चिंतन मनन करके संयम ग्रहण करने का साहस जुटाया और विदुशी सुमित्रा बाई ने मुनि श्री धर्मसागर जी के चरणों में सातवीं प्रतिमा के व्रत गृहण किये। एवं उसी दिन गृह त्याग का भी संकल्प लिया। कुछ समय प्रतिमा पालन के बाद उन्हीं मुनिराज के चरणों में आर्यिका दीक्षा के लिये भी श्रीफल अर्पित कर दिया मुनिराज ने कहा हमारे साथ कोई आर्यिका माताजी नहीं हैं। अतः तुम्हें आचार्य श्री शिवसागर जी की शरण में जाकर प्रार्थना करना चाहिये। वहाँ संघ में चार माता जी हैं पूज्य आचार्य श्री शिवसागर जी अपने संघ सहित बुंदेलखंड में ही विचार कर रहे थे। उनका चतुर्मास श्रीक्षेत्र पपोरा जी में निश्चित हुआ।

दीक्षा- विक्रम संवत 2021 की श्रावण शुक्ला सप्तमी 14 अगस्त 1964 को प्रथमाचार्य चारित्र चक्रवर्ती श्री शांतिसागर जी महाराज के द्वितीय पट्टाचार्य चारित्र शिरोमणि आचार्य शिवसागर जी ने अतिशय क्षेत्र पपौरा जी के प्रांगण में सुमित्रा जी को आर्यिका दीक्षा देकर अपने संघ में प्रवेश दिया ओर वे बन गई आर्यिका विशुद्ध मति माताजी।

शिक्षा- माताजी की दीक्षा होते ही शास्त्राभ्यास प्रारंभ हो गया। पूज्य श्रुतसागर जी महाराज ने जैन सिद्धांत का अध्ययन कराया। पूज्य श्री अजिसागर जी महाराज ने इन्हें न्याय और व्याकरण शास्त्रों का अध्ययन कराया गणित का अभ्यास एवं षटखण्डागम सिद्धांत के स्वाध्याय में पं. रतनचंद जी मुख्तार सहयोगी बने, माताजी की लगन एवं परिश्रम से उन्होंने शीघ्र ही ज्ञानार्जन कर लिया। इसी बीच दीक्षा के प्रारंभिक काल में उनका उत्साह साहस दृढ़ता बढ़ती गई, पर शरीर

क्षीण एवं कमजोर होता जा रहा था, क्योंकि दीक्षा के बाद माताजी को लगातार अंतराय बाते थे सो शरीर अशक्त होने लगा। आचार्य महाराज ने एक दिन इस उपद्रव की शांति के लिये माताजी को वृहद-शांतिमंत्र की एक माला रोज फेरने को कहा माताजी स्वयं बताती थी कि मेरे जीवन की यह प्रथम और अंतिम गुरु आज्ञा थी जिसे माताजी ने अत्यंत विनयपूर्वक दृढ़तापूर्वक आचार्य श्री से मना कर दिया। उनका उत्तर था क्यों यह पद लेकर रोटी के लिये अनुष्ठान करना उचित होगा स्वयं आचार्य महाराज ने उनकी इस दृढ़ता की सराहना की।

उद्‌बोधन- विशुद्धमति माताजी निर्भीक एवं स्पष्ट वक्ता थीं। आगम के अथाह सागर में गोते लगाकर उन्होंने जो मुक्ता माणिक चुने उन्हें सहज सरल भाषा में भक्तों को देकर उनके कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया। वे हमेशा कहती थी कि कुछ नियम लेकर जिनवाणी का पाठन एवं श्रमण करो तो मार्ग अवश्य मिलता है।

श्रुत सेवा- जैन आगम का अध्ययन करते-करते चिंतन मनन हर समय चलता रहा। आचार्य श्री शिवसागर जी के आदेश एवं मुनिश्री श्रुतसागर जी एवं अजिसागर जी के प्रेरणा से माताजी ने जिनवाणी को लेखन का प्रारंभ किया। प्रारंभ में अनेक जनोपयोगी रचनायें करी। उनका लेखन दीक्षा 4-5 वर्षो बाद प्रारंभ होकर अनवरत जारी रहा उनके समाधि साधना काल में भी 30 नवम्बर 2001 की रात्रि तक चलता रहा।

पूज्य 105 विशुद्धमति माताजी की श्रुत सेवा भाषा टीकाएः

1. सिद्धान्तचक्रवर्ती नेमीचन्द्राचार्य विरचित त्रिलोकसार टीका।
2. भट्टारक सकलकीति विरचित सिद्धान्तसारदीपक टीका।
3. यतिवृषभाचार्य विरचित तिलोयपण्णत्तीः हिन्दी टीका (तीन खण्डों में)
4. क्षपणासार
5. अमितगति निसंगयोगिराज विरचित-योगसार प्राभृत (प्रश्नोत्तरी टीका)
6. मरणकण्डिका (प्रश्नोत्तरी टीका)

मौलिक रचनायें : 1. श्रुतनिकुंज के किंचित् प्रसून 2. गुरु गौरव 3. श्रावक सोपान और बारह भावना 4. आनंद की पद्धति अहिंसा 5. निर्माल्य ग्रहण पाप है 6. केवली विधान

प्रश्नोत्तर लेखनः 1. धर्मप्रवेशिका प्रश्नोत्तर माला 2. धर्मोद्योत प्रश्नोत्तर माला 3. छहढाला 4. इष्टोपदेश 5. स्वरूपसम्बोधनपंचविंशति

संकलन-संपादनः 1. वत्थुविज्जा (खण्ड 1-गृहशिल्प) 2. वत्थुविज्जा (खण्ड 2 - मन्दिशिल्प) 3. श्रमणचर्या 4. समाधिदीपक 5. दीपावली पूजनविधि 6. श्रावक सुमन संचय 7. स्तोत्र संग्रह 8. श्रावक सोपान 9. आर्यिका आर्यिका है 10. संस्कार ज्योति 11. पाक्षिक श्रावक प्रतिक्रमण सामायिक विधि 12. वृहद् सामायिक पाठ एवं व्रती श्रावक प्रतिक्रमण 13. आचार्य शान्तिसागरजी महाराज का संक्षिप्त जीवनवृत्त 14. रात्रिक/दैवसिक प्रतिक्रमण (अन्वयार्थसहित) 15. पाक्षिकादि प्रतिक्रमण (अन्वयार्थसहित) 16. वास्तुविज्ञान परिचय 17. नित्यनियमपूजा 18. शान्तिधर्मप्रदीप 19. नारी बनो सदाचारी 20. महावीरकीर्ति स्मृति

ग्रंथ : एक अनुशीलन 21. ऐसे थे चारित्र चक्रवर्ती 22. चारित्र चक्रवर्ती आचार्य शान्तिसागर चरित्र।

समाधि भावना- स्वस्थ शारीरिक अवस्था में ही पूज्यमाता जी ने 16 जनवरी 1990 को पूज्य आचार्य अजितसागर जी महारज के समक्ष बारह वर्ष की उत्कृष्ट संलेखना के संकल्प की भावना व्यक्त करी और उनसे संलेखना व्रत की याचना करी। आचार्य महाराज ने उन्हें आशीर्वाद देकर यह संलेखना का नियम दिया। कुछ समय बाद ही आचार्य महाराज की समाधि हो गई, तो पंचम पट्टाचार्य श्री वर्धमान सागर जी माताजी की समाधि हेतु निर्यापकाचार्य बने। व्रत को लेते ही माताजी ने अपने शरीर को कृश करना प्रारंभ कर दिया आहार में कमी एवं उपवास अधिक होने लगे। 1998 वे का चातुर्मास प्रारंभ होते ही एक दिन आहार एक दिन उपवास प्रारंभ हो गया। उनका शरीर क्षणी हो रहा था पर आत्मबल निरंतर बढ़ रहा था। 2000 के चातुर्मास में वे दो दिन के अंतर से आहार लेने लगी। आषाढ़ शुक्ला सप्तमी 27.06.2001 को भगवान पार्श्वनाथ का मोक्ष कल्याणक दिवस और अपने दीक्षा दिवस के अवसर पर माताजी ने पूज्य आचार्य वर्धमान सागर जी के समस्त संघ के समक्ष सबसे क्षमा याचना की और सभी प्रकार के अनाज का जीवन पर्यत के लिये त्याग कर दिया। दो दिन के अंतर में लेने वाले आहार में दूध छाछ केला और फल ही रहे। तीन महिने के भीतर क्रमशः केला दूध फिर छाछ का भी त्याग कर दिया। 9 दिसम्बर 2001 को माता जी ने पूज्य आचार्य वर्धमान सागर जी एवं संघ उपस्थिति में आचार्य जी से अनुमति और आशीर्वाद लेकर शैया गृहण का अनुष्ठान किया। अब आहार में मुसम्बी का रस एवं जल मात्र लेने लगी। जनवरी 2001 को त्याग करके 2-3 दिन के अंतर से मात्र जल की प्रक्रिया अपनाई। 16 जनवरी 2022 को बारह वर्षीय सल्लेखना की अवधि पूर्ण होने पर माता जी ने जल लेने का भी त्याग कर दिया। जल त्याग के छह दिन की साधना के बाद 22 जनवरी 2002 को प्रातः साढ़े चार बजे ब्रम्हमुहुर्त में आचार्य महाराज और गणिनी आर्यिका सुपार्श्वमति माताजी से पंचनमस्कार सुनते हुये अंतिम सांस ली। संयमी जीवन का शानदार समापन हुआ।

माताजी ऐसी भाग्यवान साधिका थी जिन्हे अपने व्रती जीवन में पूज्य आचार्य शिवसागर जी, आचार्य धर्मसागर जी, पूज्य अजिसागर जी, परमपूज्य आचार्य वर्धमान सागर जी एवं आचार्य कल्प श्रुतसागर जी का मार्गदर्शन मिला। निर्यापकाचार्य श्री वर्धमान सागरजी के संघस्थ मुनिराजों एवं आर्यिका माताओं ने माताजी की समाधि साधना के अंतिम वर्ष में अपने संबोधन, सेवा, वैयावृत्ती द्वारा सहयोग किया। इनमें पूज्य मुनि श्री पुण्यसागर जी, पूज्य चिन्मयसागर जी, पूज्य अर्पितसागर जी एवं आर्यिका शीतलमति माताजी, दयामति माताजी, एवं वर्धितमति माताजी के अथक परिश्रम किया और पूज्य प्रशांतमति माता जी को छाया की भांति माताजी के साथ रहती थी। गणिनी आर्यिका सुपार्श्वमति माताजी बाईस दिनों तक माताजी को अत्यंत वात्सल्यपूर्वक संबोधन देकर दृढ़ता प्रदान करती रहीं। सुपार्श्वपति माताजी की संघस्थ ब्रम्हचारिणी डॉ प्रमिला जी (गौरवमति माताजी) ने भी माताजी की बहुत सेवा की। माताजी की भावना किसी सिद्धक्षेत्र पर समाधि करने की थी। पर अनुकूलता नही बन सकी। माताजी के

पुत्रवत भक्त प्रतिष्ठाचर्य पं. हंसमुख जी ने 1997 में धरियावद से तीन किलोमीटर दूर एक निर्जन भूमि पर कुछ आवश्यक सुविधाओं का निर्माण कराया और नाम रखा नंदन वन। जिसे बांद में श्री क्षेत्र सिद्धांत तीर्थ संस्थान नंदनवन नाम दिया गया। माताजी के 1999, 2000 और 2001 का चातुर्मास यहीं सम्पन्न हुये। श्री हंसमुख जी निरंतर माताजी सेवा में समर्पित रहे। संघ की माताजी के भक्तों की सब व्यवस्था कर रहे थे, और माताजी की समाधि नंदन वन में हुई। जहाँ श्री पं. हंसमुख जी ने समाधि स्थल को एक स्मारक का रूप दिया है।

मैं अपने आपकों बहुत सौभाग्यशालीइ मानती हूँ कि पूज्य माताजी का चरण सान्निध्य मुझे मेरे बचपन से उनके समाधि तक बराबर प्राप्त हुआ। उन्होंने जिनवाणी का अध्ययन कराया। अपने जीवन के हरक्षण का उपयोग करना वे जानती थी। अपने समाधि काल में उन्होंने एक भजन लिखा था (घड़ी) इसी भजन की अंतिम पंक्तियों से मैं अपनी लेखनी को विराम देती हूँ।

हे भव्य ! आयु अवसान समय, यह घड़ी, घड़ी दिखलाती है।
तुम चेतों ! जागो ! उठो ! शीघ्र यह घड़ी खिसकने वाली है ॥
जो घड़ी गई, जो निकल रही, वह कभी न वापस आयेगी।
मति कर विशुद्ध तो शेष घड़ी, अनमोल घडी बन जायेगी ॥

कविता

अंतर-तम का छुटकारा

मुझे दिशा दो, पथ दर्शा दो अंतर तम को भी दूर भगा दो।
सकल लोक में व्याप्त, रात्रि का धना अंधकार
आपके आने से श्रीमान, हो जाता क्षण भर में दूर
रहता न एक पल को शेष, मेरे अंतर मोह ध्वांत से
किस विध मैं छुटकारा पाऊँ, मुझे तो बस इतना बतला दो
मुझे दिश दो, पथ दर्शा दो, उज्वल जल निर्मल है।
तन का बस मैल मिटा पाता है
अंतर मन का कालुष उससे, तनिक नहीं धुल पाता है
राग द्वेष कषायों से दूषित, मेरा मन किस विध होगा पावन
मुझेतो बस इतना बतला दो, मुझे दिशा दो पथ दर्शा दो।
सम्यग्ज्ञान वारिधी में डुबकी लगाकर
समता सुधा का पात्र करो, समदृष्टि से करो आचरज
सदा आत्म कल्याण करो, अपना लोटा छान लो तुम
बहती नदी छानने के, प्रपंचों में न पढ़ो
यही सही दिशा है, सही दशा है, सच्चा पथ है
इस पथ पर चलकर, कालुषों का मल हाटा लो
अंतरतम से भी छुटकारा पा लो।

चलो देखें यात्रा

हरसूर

क्षेत्र का महत्त्व- क्षेत्र पर मन्दिरों की संख्या-3 **क्षेत्र पर पहाड़ -** नहीं

ऐतिहासिकता- यह 950 साल पुरातन जैन अतिशय क्षेत्र है। भगवान पार्श्वनाथ तीर्थंकर की 8 फीट ऊँची, 4 फीट चौड़ी पद्मासन 2 मूर्तियां हैं। जो देखने में अत्यन्त ही सुन्दर एवं मनमोहक हैं। ऐसी मूर्तियाँ देखने को विरले ही मिलती हैं। इस क्षेत्र पर माता पद्मावती जी की 4 फुट ऊँची ए वं भगवान मुनि सुव्रतजी, भगवान आदिनाथ जी, भगवान चन्द्रप्रभु जी एवं अन्य सुंदर एवं आकर्षक मूर्तियाँ हैं। यह मंदिर 1097 ई. से पहले कल्याणी चालुक्य के जमानें में बना हुआ है। मंदिर में 2 शिलालेख भी हैं।

विशेष जानकारी- यहाँ पर प्रतिवर्ष मार्च महीने में वार्षिक यात्रा महोत्सव होता है। (फाल्गुन वद्य मुन्दा नक्षत्र पर)

समीपवर्ती तीर्थक्षेत्र- भंकूर ता. चितापूर -45 किमी. जेवर्गी- 60 किमी, हुणसे हडगील -45 किमी. कमठाण ता. जि थीदर-100 किमी. मठखेड ताह चितापूर -45 किमी।

निकटतम प्रमुख नगर- गुलवर्गा 25 किमी.

प्रबंध व्यवस्था- संस्था श्री 1008 विघ्नहर पार्श्वनाथ भगवान दिगम्बर जैन पंचकूट मंदिर अतिशय क्षेत्र हरसूर

अध्यक्ष- श्री विजयकुमार च. पंढरे गुलवर्गा 08050452935

जा सेक्रेटरी- श्री दीपक अ. पंडित गुलवर्गा 09980783999

सेक्रेटरी- श्री सुभाषचंद्र बाबाराव पाटील गुलवर्गा 09972014610

उपाध्यक्ष- श्री वज्रकुमार नागनाथराव पाटील गुलवर्गा 09448022192

आवागमन के साधन-रेल्वे स्टेशन- गुलवर्गा 25 किमी.

बस स्टैण्ड- हैं

पहुँचने का मार्ग- गुलवर्गा से बस टेम्पो जीप की सुविधा है। यह क्षेत्र गुलवर्गा (कलबुर्गी) जिला केन्द्र स्थान

सरलतम मार्ग- से केवल 25 किमी. की दूरी पर है।

क्षेत्र पर उपलब्ध- आवास-कमरे (अटैच बाथरूम) -2, कमरे (बिना बाथरूम)-×, हॉल-1

भोजनशाला - नहीं **विद्यालय-** गुरुकुल

औषधालय-नहीं **प्रवचनहॉल/पुस्तकालय-** है

टेलीफोन- 0997278969, 08050452935 (विजयकुमार सी. पढ़रे)

नाम एवं पता- श्री 1008 विघ्नहर पार्श्वनाथ भगवान दिगम्बर जैन पंचकूट मंदिर, अतिशय क्षेत्र हरसूर ता. जिला गुलबर्गा (कर्नाटक) 585102

नियमसागर में प्रतिपादित व्यवहार चारित्र

✻ ब्र. जिनेश मलैया, इंदौर ✻

चारित्र धर्म का आधार स्तंभ है चारित्र के बिना धर्म की कल्पना अधूरी होती है मोक्षमार्ग में चारित्र का अन्तिम रूप है अतः चारित्र के बिना न किसी को मोक्ष प्राप्त हुआ है न होगा सम्यग्दर्शन और सम्यज्ञान होने के बाद भी यदि चारित्र की आराधना नहीं की जाती है तो मोक्ष की कल्पना ही व्यर्थ होती है जिस प्रकार बोरी में बन्द बीज जब तक खेत में नहीं डाला जाये तब तक अंकुरण संभव नहीं होता है इसी तरह सम्यग्दर्शन की सार्थकता चारित्र सिद्धि के बाद ही सार्थक होती है।

आचार्य कुन्दकुन्द देव ने नियमसार ग्रंथ में दो प्रकार के चारित्र की विवेचना की है। 1. व्यवहार चारित्र 2. निश्चय चारित्र।

व्यवहार चारित्र का स्वरूप- व्यवहार चारित्र के लिये आचार्य नेमिचन्द्र जी ने द्रव्य संग्रह में स्पष्ट करते हुये कहा है अशुभ की निवृत्ति और शुभ में प्रवृत्ति का नाम ही व्यवहार चारित्र है तथा व्यवहार चारित्र व्रत समिति गुप्ति रूप घोषित किया है आचार्य कुन्दकुन्द देव ने व्यवहार चारित्र अधिकार के अंतर्गत पांच महाव्रत पांच समिति और तीन गुपित का वर्णन किया है तथा पंच परमेष्ठी के स्वरूप का वर्णन किया है।

अहिंसाव्रत-कुल चौरासी लाख योनि, मार्गणास्थान, जीवस्थान को जानकर आरम्भ से निवृत्ति रूप परिणाम को अहिंसाव्रत को जानकर आरंभ से निवृत्ति रूप परिणाम को अहिंसाव्रत कहा है एवं तत्वार्थ सूत्र में प्रमाद के योग से होने वाले प्राण व्यपरोपण को हिंसा कहा है।

सत्य महाव्रत- रागद्वेष और मोह से होने वाले मृषा रूप भाषा को जो साधक छोड़ देता है वही सत्य महाव्रत को धारण करता है।

अचौर्य महाव्रत- ग्राम नगर अथवा वन में किसी भी पराई वस्तु का देखकर उसे ग्रहण नहीं करना इसी का नाम अचौर्य महाव्रत है।

ब्रह्मचर्य महाव्रत- स्त्री रूप को देखकर उसके प्रति वांछा भाव का अभाव होना तथा मैथुन संज्ञा को जीतने का नाम ब्रह्मचर्य व्रत है।

अपरिग्रह महाव्रत- सभी परिग्रह का त्याग करके निरपेक्ष भावना होना अपरिग्रह महाव्रत है यही अपरिग्रह महाव्रत चारित्र का समूह है।

ईर्या समिति- प्रासुक मार्ग पर दिन में चार हाथ जमीन देखकर गमन करना ईर्या समिति कहलाती है। समिति का अर्थ सावधानी होता है अर्थात सावधानी पूर्वक गमन करने का नाम समिति है।

भाषा समिति- चुगल खोरी हास्य, (हंसी मजाक), करकस, पर निन्दा और आत्म प्रशंसा का परित्याग करके स्व पर हित के वचन कहना भाषा समिति है।

एषणा समिति- कृत, कारित, अनुमोदना से रहित होकर प्रासुक प्रशस्त दूसरों के द्वारा दिया हुआ आहार लेना एषणा समिति है।

आदान निक्षेपण समिति- पुस्तक कमण्डल आदि देखकर प्रयत्न पूर्वक रखना या उठाना आदान निक्षेपण समिति कही जाती है।

प्रतिष्ठापन समिति- प्रासुक भूमि एवं गुपत स्थान एवं दूसरे के द्वारा रोके हुये स्थान का त्याग करते हुये मल-मूत्र आदि का विसर्जन करना प्रतिष्ठापन समिति कहलाती है।

मनगुप्ति- कलुषता मोह आहार भय मैथुन परिग्रह रूप संज्ञा राग द्वेष आदि भावों का परिहार करना मनगुप्ति है।

कायगुप्ति- छेदन भेद बंधन, मारण, आकुंचन (जकड़ना) प्रसारण अर्थात खींचना आदि काय की क्रिया का त्याग करने का नाम काय गुप्ति है।

पंच परमेष्ठी स्वरूप- आचार्य कुन्दकुन्द देव ने व्यवहार चारित्र के अंतर्गत पंच परमेष्ठी के स्वरूप का वर्णन किया है। यह वर्णन वैसे अप्रांसागिक लगता है किन्तु पंचपरमेष्ठी की शरण लिये बिना निश्चय और व्यवहार चारित्र दोनों ही सिद्ध नहीं होते हैं ध्येय रूप पंचपरमेष्ठी एवं शुद्ध आत्मा को स्वीकार किया गया है।

अरिहंत परमेष्ठी स्वरूप- धन घातिया कर्मों से रहित केवलज्ञान आदि अनंत चतुष्टय से सहित चौतीस अतिशयों से युक्त अठारह दोष से रहित अरिहंत परमात्मा का स्वरूप नियमसार में प्रतिपादित किया गया है।

सिद्ध परमेष्ठी का स्वरूप- आठ कर्मों से रहित अथवा अष्टकर्मों के नाशक सम्यक्तव आदि आठ गुणों के धारक तथा लोक के अग्र भाग में स्थित अशरीरी सिद्ध परमात्मा होते हैं।

आचार्य परमेष्ठी- पंचाचारों से युक्त दर्शनाचार ज्ञानाचार चारित्राचार तपाचार वीर्याचार से परिपूर्ण तथा पंचेन्द्रिय रूपी हाथी के मद को नष्ट करने वाले धीर और गुण गंभीर संघ के नायक आचार्य होते हैं ।

उपाध्याय परमेष्ठी- रत्नत्रय से संयुक्त जिनेन्द्र कथित पदार्थो के उपदेशक तथा समस्त आकांक्षाओं से शून्य उपाध्याय परमेष्ठी होते हैं।

साधु परमेष्ठी- समस्त व्यापारों से रहित दर्शन ज्ञान चारित्र और तप आराधना से सदा लीन रहने वाले निर्ग्रन्थ निर्मोही साधु होते हैं।

उपसंहार- इस तरह व्यवहार चारित्र और पंचपरमेष्ठी का विवेचन करने के उपरांत निश्चय चारित्र के विवेचन करने की प्रतिज्ञा करते हुये आचार्य कुन्दकुन्द देव ने मोक्षमार्ग साधना का सोपान दृढ़ (मजबूत) किया है।

आगम दर्शन

संघ परिचायक दर्शनसार

दर्शनसार- इस लघुकाय ग्रंथ में कुल 51 गाथायें हैं।

प्रथम गाथा में श्लेष में गुरु का स्मरण करते हुये तीर्थंकर महावीर को नमस्कार किया है। और पूर्वाचार्यों द्वारा कथित गाथाओं का संग्रह किया है। द्रव्यानिका के अनन्तर समस्त इतर दार्शनिक मतों का प्रवर्तक ऋषभदेव के पुत्र मरीचि को माना है। मरीचि ने एकान्त, संशय, विपरीत, विनय और अज्ञान इन पाँचों एकान्त मार्गों का प्रवर्तन किया है। बताया है कि तीर्थंकर पार्श्वनाथ के तीर्थकाल में सरयू नदी के तटवर्ती पलाश नामक नगर में पिहितास्त्रव साधु का शिष्य बुद्धिकीर्ति मुनि हुआ जो बड़ा शास्त्रज्ञ था। मत्स्याहार के कारण वह दीक्षा से भ्रष्ट हो गया और रक्ताम्बर धारण कर उसने एकान्तमत का प्रचलन किया। फल, दधि, दुग्ध, शक्कर आदि के समान मांस में भी जीव नहीं हैं। अत एव उसकी इच्छा करने और भक्षण करने में कोई पाप नही है। उसने बतलाया कि जिस प्रकार जल एक द्रव पदार्थ है, उसके सेवन में दोष नही है। उसी प्रकार मद्य भी द्रव पदार्थ है, उसके सेवन मे भी किसी प्रकार का दोष नहीं है।

एक पाप करता है और फल दूसरा भोगता है। इस प्रकार अनर्गल सिद्धांतों का प्रचार कर वह बुद्धकीर्ति नरक गया। कर्ता कोई अन्य व्यक्ति है। और फल-भोक्ता कोई अन्य। इस सिद्धांत में क्षणिकवाद का कथन किया गया है। इस प्रकार मरीचि और बुद्धकीर्ति ने मिथ्या मतों का प्रचार किया।

इस अवतारण के पश्चात् श्वेताम्बर मत, विपरीत मत, वाचनिक मत, अज्ञान मत, द्राविड़संघ, यापनीयसंघ, काष्ठासंघ, माथुरसंघ और भिल्लकसंघ की उत्पत्ति एवं समीक्षा की गयी है। काष्ठासंघ की समीक्षा करते हुये वीरसेन स्वामी के शिष्य जिनसेन, कुन्दकुन्द, गुणभद्र, विनयसेन, कुमारसेन के निर्देश आये हैं। कुमारसेन को काष्ठासंघ का उपदेशक बतलाया है। और इस संघ का उत्पत्तिकाल विक्रम संवत् 753 माना है। माथुरसंघ की उत्पत्ति रामसेन द्वारा विक्रम संवत् 953 में मथुरा नगरी में मानी गयी है। भिल्लकसंघ की उत्पत्ति भविष्य कल्पना के रूप में अङ्कित है -

पणमिया वीरजिणिंदं सुरसेणणमंसियं विमलणाणं।
वोच्छं दंसणसारं जह कहियं पुव्वसूरीहिं ।।1।।
भरहे तित्थयराणं पणमिय देविदंणागरूडाणं।
समएसु होंति केई मिच्छत्तपवट्टगा जीवा ।।2।।
सिरिपासणाहतित्थे सरयूतीरे पलासणयरत्थो।
पिहियासवस्स सिस्सो महासुदो बुड्ढकित्तिमुणी ।।3।।

णंदियडे वरगामे कुमारसेणो य सत्यविण्णाणी।
कट्टो दंसणभट्टो जादो सल्लेहणाकाले ।।4।।
ततो दुसए तीदे महुराये माहुराण गुरुणाहो।
णामेण रामसेणो णिप्पिच्छं वाणिणयं तेण ।।5।।

दर्शनसार से देवसेन के अवखड़ स्वभाव का पता चलता है। उन्होंने अन्तिम गाथा में अपनी स्पष्टता व्यक्त करते हुये लिखा है -

रूसड तूसउ लोओ सच्चं अवखंतयस्य साहुस्स।
किं जूयभाए साडी विवज्जियव्वा णरिदेण ।।6।।

सत्य कहने वाले साधु से कोई रूष्ट हो, चाहे सन्तुष्ट हो, इसकी चिन्ता नही। क्या राजा को यूका (जूँ) के भय से वस्त्र पहनना छोड़ देना चाहिये ? कभी नही।

इसमे देवसेन का अक्खड़पना प्रकट होता है।

कविता

गुरु भक्ति

मैं गुरु भजन लिखता हूँ बनकर निर्मल भोले ।
तुम भजन हमारा गाना कानों में अमृत घोले ।।
मेरा पेज अभी है कोरो, मैंने दोषों को अब छोड़ा ।
भाषा इसमें प्राकृत, गुरु गुणों पर मोड़ा ।।
गुणगान कठिन जब होता सूरज को दीप दिखाना ।
वे वर्तमान के, वर्धमान हैं, उन्हीं गुणों को पाना ।।
गाना भजन भर ऐसा, कि अन्तर्मन बस डोले ।
मैं गुरु भजन लिखता हूँ बनकर निर्मल भोले ।।
वे वीतरागी, सरल, सहज जैनागम के ज्ञाता ।
वे चलते फिरते तीर्थ, उन्हें राग न कभी भाता ।।
भजन हमारा समझ-समझ गाना होले-होले ।
मैं गुरु भजन लिखता हूँ बनकर निर्मल भोले ।।
साथ में विचरण करते, तपस्वी व बैरागी ।
निर्मल संत, आर्यिकारत्न, ब्रह्मचारी व त्यागी ।।
गर्मी, सर्दी, वर्षा सभी परिषय, वे सहते ।
चेहरे पर मुस्कान सदा, अध्यात्म में बहते ।।
उन विद्यागुरु को नमन करे सब मिलकर जय जय बोले ।
मैं गुरु भजन लिखता हूँ, बनकर निर्मल भोले ।।
तुम भजन हमारा गाना कानों में अमृत घोले ।
तुम भजन हमारा गाना कानों में अमृत घोले ।।

समस्या पूर्ति प्रतियोगिता
मार्च 2022

तेरे पूजन को भगवान

प्रथम-

भव्य विशाल है सुंदर मूरत
वीतराग मय शांत है सूरत
आओ स्तुति करें हम गान
हम आये तेरे पूजन को भगवान

श्रीमती पुष्पा जैन, राहतगढ़

द्वितीय-

गान करें स्तुति करते हम
कर्म खपाने प्रभु अग्नि सम
वीतराग प्रभु का कर ध्यान
कर्म काटने तेरे पूजन को भगवान

श्रीमती करूणा जैन, इंदौर

तृतीय-

गंगा यमुना चरण हैं तेरे
मिट जाये प्रभु भव के फेरे
चरण शरण है सुक्ख निधान
आये भक्त तेरे पूजन को भगवान

राजकुमार जैन, मुंबई

वर्ग पहेली क्र. 268
फरवरी 2022 के विजेता

प्रथम : अभिषेक जैन, अहमदाबाद
द्वितीय : राजेश जैन, कोलकाता
तृतीय : इंदु बड़जात्या, बाकानेर

माथा पच्ची

निम्न अक्रमबद्ध वर्णों को क्रमबद्ध बनाकर रिक्त स्थान में एक सार्थक शब्द बनाइए।

1. अ ई अ आ ल् च म् प् आ र् प् र् अ द् मू
2. अ र आ च ल् आ र् प् र् अ द् मू
3. अ उ म् अ व् अ य् स्त् र ओ त् स्
4. अ ऐ अ र् त् ए श् अ व् म् अ व् भ
5. अ भ म् र् र् त् न् क् आ र् ध

परिणाम :
मार्च 2022: (1) मुनि श्री समय सागर जी (2) मुनि श्री विद्या सागर जी (3) मुनि श्री योग सागर जी (4) मुनि श्री मल्लि सागर जी (5) मुनि श्री कुन्थु सागर जी

पुराण प्रेरणा

पाण्डव पुराण में एकत्व भावना

जनने मरणे लाभे सुखे-दुःखे हितेऽहिते।
एकोडसि संसृतौ जन्तो भ्रमन्भिन्नास्तु बान्धवाः ।।
कर्ता त्वं कर्मणमेको भोक्ता त्वं कर्मण फलम्।
अङ्ग मोक्ता च किं मुक्तौ यहसे नात्मसंस्थितौ।
एकस्मिन्नेव चिद्रपे रूपातीते निरन्जने।
स्वाधीने कर्म भिन्ने च सातरूपे स्थिरीभव।।

हे आत्मन् संसार में चक्कर लगाता हुआ तू जन्म-मरण, लाभ, अलाभ, सुख, दुख और हित, अहित में अकेला ही है-कोई भी तेरा साथी नहीं है। जो बन्धु बान्धव के रूप में तुझे नजर आते हैं वे सब स्वार्थ के सगे हैं। वे तुझसे भिन्न हैं। तू ही एक कर्मों का कर्ता है और तू ही अकेला उनका भोक्ता है। यह शरीर भी तेरा साथी नहीं है फिर तू इन सबका मोह छोड़कर मुक्ति के लिये यत्न क्यों नही करता। एक चिद्रूप रूपातीत, निरंजन, स्वाधीन और कर्म से भिन्न सुख रूप आत्मा में लीन हो।

पथरीधन चूर्ण

पथरी की अचूक दवा

सेवन विधि-

1) यह चूर्ण सुबह भोजन के बीच में लिया जायें।
2) पानी दिनभर अधिक मात्रा में लें, पेट खाली न हो।
3) प्रथम खुराक लेने के बाद, दूसरी खुराक एक दिन छोड़कर ही ली जाये।

नोट- यह औषधि निः शुल्क दी जाती है। ठीक होने पर औषधि निर्माण हेतु सहयोग कर सकते हैं।

प्राप्ति स्थान -**ब्र. जिनेश मलैया, संस्कार सागर**
श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मन्दिर, बॉम्बेहास्पिटल के पास, इन्दौर (म.प्र.)
फोनः 0731-4003506 मो.:8989505108, 6232967108

दवा देने के विभिन्न स्थानों पर केन्द्र है आप भी अपने यहां केन्द्र चाहते हैं तो सम्पर्क करें

केरियर

बनिए कृषि वैज्ञानिक कमाएं नोट

कृषि वैज्ञानिक- भारत एक कृषि प्रधान देश है, यहाँ पर अधिकांश लोग कृषि का कार्य करके अपना जीवन यापन करते हैं, इसके साथ ही भारत में बेरोजगारी एक प्रमुख समस्या है, जिससे वर्तमान समय में लगभग युवा वर्ग का ध्यान कृषि के प्रति आकर्षित हुआ है, सरकार भी युवाओं को कृषि में सहायता प्रदान करती है, यदि आप ग्रामीण परिवेश को अच्छे से समझते हैं, तो आप कृषि वैज्ञानिक के रूप में भारतीय कृषकों की सहायता कर सकते हैं, और इसे एक अच्छे करियर के रूप में चुन सकते हैं।

आवश्यकता योग्यता: कृषि वैज्ञानिक बनने के लिये आपको बारवीं की परीक्षा उत्तीर्ण करनी होगी, इसके पश्चात् आप बी.एस.सी एग्रीकल्चर या फिर बी.एस.सी एग्रीकल्चर (आनर्स) में प्रवेश ले सकते हैं, इसमें एग्रीकल्चर, वेटनेरी साइंस, एग्रीकल्चरल इंजीनियरिंग, फॉरेस्ट्री, हॉर्टिकल्चर, फूड साइंस और होम साइंस में से किसी भी एक विषय में ले सकते हैं। सफलता पूर्वक डिग्री पूरी करने के बाद क्षेत्र में परस्नातक कोर्स में प्रवेश ले सकते हैं, परास्नातक के बाद आप पी.एच.डी भी कर सकते हैं, पी.एच.डी के बाद आपके पास कृषि वैज्ञानिक बनने के लिये किसी अनुसंधान केन्द्र से जुड़ सकते हैं।

रोजगार- पी.एच.डी की उपाधि के बाद भारतीय अनुसंधान केन्द्र द्वारा निकाली गई सहायक वैज्ञानिकों के पद हेतु आवेदन कर सकते हैं । कुछ वर्षों बाद पदोन्नति पश्चात् कृषि वैज्ञानिक का पद प्रदान कर दिया जाता है।

प्रमुख कोर्सेस:
- बी.एस. सी एग्रीकल्चर
- बी.एस.सी क्रॉप फिजियोलॉजी
- एम.एस.सी एग्रीकल्चर
- एम.बी.ए. इन अग्रि-बिजनेस मैनेजमेंट
- एम.एस.सी (एग्रीकल्चर बॉटनी/ बायोलॉजिकल साइंसेज)
- डिप्लोमा इन फूड प्रोसेसिंग
- डिप्लोमा कोर्स इन एग्रीकल्चर एण्ड अलाइड प्रैक्टिसेज

प्रमुख विश्वविद्यालय:
- आचार्य एन.जी.रंगा कृषि विश्वविद्यालय (ए.एन.जी.आर.ए.यू.) हैदराबाद, आंध्रप्रदेश
- आणन्द, कृषि विश्वविद्यालय आणन्द, गुजरात
- असम कृषि विश्वविद्यालय (ए.ए.यू), जोरहाट, असम
- विधान चन्द्र कृषि विश्वविद्यालय (बी.सी.के.वी.वी.) पश्चिम बंगाल
- बिरसा कृषि विश्वविद्यालय (बी.ए.यू) रांची, झारखंड
- केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय (सी.ए.यू) इम्फाल, मणिपुर
- केन्द्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान, मुंबई

वेतन: न्यूनतम 20 से 30 हजार प्रतिमाह।

हम कब जागेंगे पर्यावरण सुरक्षा के लिये

✻ डॉ. सुनील जैन संचय, ललितपुर ✻

(दिवाली की आतिशबाजी हमारे वातावरण और खुद के लिये हर तरह से खतरा है, पर्यावरण की बहस से अलग भी इससे बचना जरूरी है। ऐन दीपावली से कुछ दिन पहले आये सुप्रीम कोट के फैसले को व्यावहारिक रूप में भी स्वीकार करना होगा। पढ़ें डॉ. सुनील जैन संचय का यह महत्त्वपूर्ण आलेख)

माननीय सुप्रीम कोर्ट पिछले कई वर्षों से पटाखों को इस्तेमाल को लेकर कई तरह के आदेश दे चुका है, जिससे बढ़ते प्रदूषण को लेकर उसकी चिंता स्पष्ट झलकती है। हाल ही में सुप्रीम कोर्ट ने दिये अपने फैसले में पटाखों पर पूरी तरह से रोक लगाने से इंकार किया है, लेकिन इनके इस्तेमाल पर अंकुश लगाया है, मैं समझता हूँ इसका स्वागत किया जाना चाहिये। दीपावली के मौके पर रात्रि आठ दस बजे के बीच दो घंटे आतिशबाजी की छूट दी गयी है। कम प्रदूषण वाले ओर कम आवाज करने वाले पटाखें ही इस्तेमाल किय जा सकेंगे।

सर्वोच्च न्यायालय के आदेश को व्यावहारिक रूप में स्वीकारें: सुप्रीम कोर्ट ने पटाखों के निर्माण में हानिकारक प्रतिबंधित रसायन प्रयोग होने और उससे लोगों को होने वाले नुकसान व परेशानी पर नाराजगी और चिंता जताते हुये कहा कि मौज-मस्ती के लिये दूसरों के जीवन से खेलने की इजाजत नहीं दी जा सकती। पीठ ने कहा है कि वह लोगों उत्सव मनाने के खिलाफ नहीं है लेकिन मौज-मस्ती के लिये किसी के मौलिक अधिकार का हनन नहीं किया जा सकता। माननीय उच्चतम न्यायालय के इस फैसले पर सभी को अमल करना चाहिये। पर्यावरण प्रेमी बनकर पर्यावरण संरक्षण में महती भूमिका निभायें।

ऐन दीपावली से कुछ दिन पहले आये इस फैसले को व्यावहारिक रूप में भी स्वीकार करना चाहिये। प्रदूषण की स्थिति जिस तरह से खतरनाक होती जा रही है, उसमें हम सबको संजीदगी दिखाने की जरूरत है। दीवाली पर पटाखे चलाने में हमें संयम बरतने की जरूरत है। संयम केवल सुप्रीम कोर्ट के आदेश के आलोक में ही नहीं, अपनी सेहत की हिफाजत के लिये भी बरतें। इससे इंकार नहीं किया जा सकता कि समय के साथ पटाखें दीपावली का हिस्सा बन चुके हैं , लेकिन जब उनका अधिक इस्तेमाल सेहत और जान-माल के लिये संकट बन जा रहा है तो फिर पटाखे न चलाने में ही भलाई है। अब तेज आवाज, रोशनी वाले तमाम पटाखे बाजार में आ गये हैं। यह पटाखें चंद क्षण तो खुशी दे सकते हैं मगर सेहत पर दुष्प्रभाव डालते हैं। यह पर्यावरण के साथ मानव जीव-जंतुओं के अलावा पेड़-पौधों को भी प्रभावित करते हैं।

पटाखों से प्रकृति व पर्यावरण दोनों का नुकसान: पटाखों से प्रकृति और पर्यावरण दोनों का नुकसान होता है। 464 सिगरेट के बराबर एक पटाखा है। वायु, जल, ध्वनि और मिट्टी प्रदूषण पटाखों से होता है। अरबों रुपये की व्यर्थ में बर्बादी पटाखों के रूप में हम एक दिन में कर देते हैं। जिससे नुकसान ही नुकसान हैं, फायदा कुछ नहीं है। जितने रुपये के पटाखे हम

एक दिन में फूंक देते हैं उतने रुपये से हजारों परिवारों का भरण-पोषण किया जा सकता है। पटाखों से हो रहे दुष्परिणामों के कारण आज हमारा जीवन व्यथित हो रहा है। हजारों मूक प्राणियों की निमर्म हिंसा हो रही है। आज हमें जागरूक होने की आवश्यकता है।

दीपावली के आध्यात्मिक भावों को समझेंः हमारी परंपरा और संस्कृति में पर्यावरण के संरक्षण की बात कही गई है। पर्यावरण के बगैर मानवीय जीवन का अस्तित्व संभव नहीं है। हमारे धर्म ग्रंथों में दीपक जलाने की बात कही गयी है। आतिशबाजी का कई नामोनिशान तक नहीं है। पूर्वजों ने भी इसी का पालन किया दीपक जलाकर, रंगबिरंगी रोशनी के माध्यम से इस पर्व को खुशी की सौगात दी है। आतिशबाजी और पटाखेबाजी केवल आधुनिक विकृतियाँ हैं। क्षण भर में लाखों रुपयों का नुकसान के साथ-साथ अमूल्य पर्यावरण को भी हानि है।

हमारे त्यौहार की लगभग सभी क्रियाएँ प्रतीकात्मक होती हैं उसके पीछे उनके आध्यात्मिक अर्थ छुपे हुये होते हैं। हमारे पढ़े-लिखे और सभ्य होने की एक सार्थकता यह भी है कि हम उन प्रतीकों के आध्यात्मिक भावों को भी समझ कर और अपना कर चलें।

शुभ दीपावली, अशुभ पटाखाः हमें मानवीय नजरिया रखते हुये **शुभ दीपावली** अशुभ पटाखा की परंपरा की शुरूआत करनी चाहिये। हमारी सांस्कृतिक परंपरा में बारूद को जलानाअशुभ माना जाता है फिर दीपावली पर पटाखों में भरे बारूद जलाकर हम क्या संदेश दे रहे हैं। पटाखें अशुभ के प्रतीक हैं, मिट्टी के दिये शुभ के प्रतीक सच्चे ज्ञान की प्राप्ति हो, अंधकार का नाश हो, इस भावना से दीपमालाएँ जलनी चाहिये।

ग्लोबल वार्मिग का बढ़ रहा खतराः वायु, जल, ध्वनि और मिट्टी का प्रदूषण पटाखों की तेज आवाज से ही होता है। ध्वनि प्रदूषण पटाखों की तेज आवाज एवं उनसे निकलने वाली गैसों से वायु प्रदूषण, पटाखा जलने के बाद उसकी अपशिष्ट सामग्री से जल एवं मिट्टी का प्रदूषण होता है जो कि हम सभी को जीवन के लिये प्राणघातक है। पटाखे पृथ्वी के जीवन कवच ओजोन परत को भारी नुकसान पहुँचाते हैं। पटाखों से निकले धुएँ के कारण वातावरण में दृश्यता घटती है। दृश्यता घटने से वाहन चालकों को कठिनाई होती हैं और कई बार यह दुर्घटना का कारण बनती है। इसके अलावा पटाखें बनाने वाली कंपनियों के कारखानों में होने वाली दुर्घटनाएँ और मौंते कुछ ऐसे मुद्दे हैं जिनसे सबक लेना चाहिये। इन मुद्दों में स्वास्थ्य मानकों की अनदेखी, बाल मजदूरी नियमों की अवहेलना या असावधानी मुख्य हैं। इन सब दुष्परिणामों के बाद सवाल है कि क्या पटाखे फोड़ना हमारे लिये जरूरी हैं ? क्या पटाखे फोड़ने से ही दीपावली मनाना संभव है ?

पटाखे स्वास्थ्य के लिये हानिकारकः किसी भी धर्म में हिंसा करने, दूसरों को पीड़ा पहुँचाने का उपदेश नहीं दिया गया है। हम पटाखें फोड़कर प्रकृति को नुकसान पहुँचा रहे हैं तथा अनेक जीव जंतुओं को जलाकर प्रकृति को नुकसान पहुँचा रहे हैं। आंखों एवं कानों पर भी बुरा प्रभाव पड़ता है। पटाखों की तेज रोशनी से तथा बारूद आँखों में जाने से आँखें खराब हो जाती हैं। इसकी पटाखों की तेज रोशनी से एवं आँखों में जाने से आँखें खराब हो जाती हैं। इसकी तेज आवाज से कानों के पर्दे भी फट जाते हैं। श्वास रोगियों के लिये यह महापर्व अराधना का नहीं

अपितु महायातना का पर्व बन जाता है।

विश्व में प्रतिवर्ष पटाखों की आग से लाखों लोग, अंधे, बहरे घायल हो जाते हैं। चिकित्सकों की राय में पटाखें से क्षतिग्रस्त आँख-कान को ठीक होने में में काफी परेशानी होती है। कम आवाज वाले पटाखे भले ही आँख-कान को नुकसान नहीं पहुँचायें लेकिन पर्यावरण को नुकसान पहुँचाते ही हैं। इसके साथ पटाखों के शोर से जानवर भी अछूता नहीं रहते। पालतू जानवर पटाखों के धमाके से डर जाते हैं।

स्वदेशी अपनाएँः दीपावली पर विदेश सामान नहीं खरीदें। अपने देश को आगे बढ़ाने के लिये स्वदेशी ही खरीदें। पटाखों से दूरी बनायें रखें। मिट्टी से बनायें गये दीये ही खरीदें। ऐसा कर हम अपनी दिवाली को तो रोशन करेंगे ही दीये बनाने वालें के जीवन में भी रोशनी भर देंगे। हम नेत्रदान, रक्तदान के समर्थक हैं तो पटाखें न जलायें।

पटाखों में हानिकारक तत्त्वः जानकार बताते हैं कि पटाखों में सल्फर का प्रयोग होता है। जब पटाखों जलते हैं तो उसमें सल्फर डाई ऑक्साईड, कार्बनडाई आक्साइड, कार्बन मोनों आक्साईड गैस अत्यधिक मात्रा में उत्सर्जित होती है जो हवा में घुलने के बाद आक्सीजन की मात्रा कम कर देती है। इससे सांस संबंधी रोगों का खतरा बढ़ जाता है। इसके अलावा पटाखों की तेज आवाज व जहरीले धुएँ से पर्यावरण को भारी नुकसान होता है। हर बार दिवाली पर बड़ी संख्या में लोग पटाखों से जल जाते हैं और कई अपनी जान से हाथ धो बैठते हैं। ऐसे में क्षणिक सुख पहुंचाने वाली विध्वंसकारी चीजों से बचें। पटाखों की धुंध यानि स्मॉग से साँस फूलने, घबराहट, खांसी, हृदय और फेफड़े सम्बंधी दिक्कतें, आँखों में संक्रमण, दमा का अटैक, गले में संक्रमण आदि के खतरे में होते हैं। तेज आवाज वाले पटाखों का सबसे ज्यादा असर बच्चों, गर्भवती महिलाओं दिल और साँस के मरीजों पर पड़ता है। जानकारों के अनुसार पटाखों में कम से कम 21 रसायन मिलाये जाते हैं। वहीं कई वैज्ञानिकों का कहना है कि एक लाख कारों के धुएँ से जितना नुकसान पर्यावरण को होता है उतना नुकसान 20 मिनट की आतिशबाजी से हो जाता है।

कई लोगों ने इस दिवाली भी यह सवाल खड़ा होगा कि क्या पटाखें चलायें जाएँ या पर्यावरण का ख्याल करके सिर्फ दिये जलाकर दिवाली मनाई जाये। पिछले कई बरसों से यह एक आंदोलन- सा खड़ा हो गया है कि पटाखों से तौबा की जाय ओर हवा को प्रदूषित होने इस अभियान के असर में पटाखों चलाना कम भी कर दिया है, दूसरी और ऐसे लोग भी हैं, जो एक दिवाली में दस-दस हजार या इससे भी ज्यादा की एक लड़ी फूक देते हैं। यह विवाद पटाखें चलाने वालों और पटाखें विरोधी लोगों के बीच ही नहीं है, दुनिया में तमाम वैज्ञानिक और नीति निर्माता भी इस बहस में उलझे हैं कि क्या इंसान ने वातावरण को सचमुच इतना बदल डाला है। पटाखे न जलाने से पर्यावरण शुद्ध रहेगा, जीव हिंसा बचेगी धन का दुरुपयोग बचेगा, किसी अनहोनी से बचेंगे और किसी जीवन में एक नया प्रकाश देकर उनके शुभकामनाओं की दुआयें मिलेंगी अहिंसा धर्म का पालन होगा तो क्या आप तैयार हैं, इस दिवाली पटाखें न चलाने का संकल्प लेने के लिये ?

दुनिया भर की बातें

■ 1 फरवरी

-मोदी सरकार का 2022-23 का बजट मिडिल क्लास के लिये कोई नई राहत लेकर नहीं आया।

- आंध्रप्रदेश हाई कोर्ट ने सोशल मीडिया प्लेटफार्म ट्विटर को फटकार लगाई है।

- सेंधवाः बड़वानी के ए.बी.रोड़ पर कंटेनर से टकराने के बाद कैमिकल से भरे टेंकर पलट गया और आग लग गई हादसे में टैंकर चालक की जलने से मौत हो गई।

■ 2 फरवरी

- भारतीय जनता पार्टी के विधायक नीतेश राणे ने कथित हत्या के प्रयास मामले में महाराष्ट्र के सिंधुदुर्ग जिले की अदालत में आत्म समर्पण कर दिया।

- मुंबईः राष्ट्रगान के अपमान के मामले में मुंबई की शिवड़ी बनर्जी कोर्ट ने पश्चिम बंगाल की सी.एम. ममता बनर्जी को सम्न जारी किया।

- महिला आयोग की अध्यक्ष स्वाति मालीवाल ने दिल्ली पुलिस के डी.सी.पी को तलब किया।

■ 3 फरवरी

- पंजाब महाराष्ट्र को ऑपरेटिक सोसायटी (पीएमबी) बैंक के धोखाधड़ी का मुख्य आरोपी दलतीज सिंह बल नेपाल बार्डर पर इमिग्रेशन अधिकारियों के हत्थे चढ़ा।

- पालीः मजिस्ट्रेट नेहा चौहान ने जैन संत आचार्य श्री महाश्रमण के खिलाफ सुरेन्द्र सुराणा की ओर से दायर मानाहिन के केस को खारिज कर दिया।

- पद्म श्री अवॉर्ड मिलने पर सवजीभाई को ढोलकिया परिवार ने गिफ्ट किया। 50 करोड़ का हेलीकाप्टर।

■ 4 फरवरी

- सिद्धी के फरारी गुर्गे मोहम्मद रफीक और बबलू उर्फ बाबलियाम को भोपाल पुलिस ने खंडवा से गिरफ्तार किया।

- असम में गोलापारा जिला पुलिस ने 100 बीघा की अवैध अफीम की खेती को नष्ट किया।

- यू सी सी के चेयर मैन एम जगदीश कुमार बने।

■ 5 फरवरी

- मोरक्को में 100 फुट गहरे कुए में 5 साल का बच्चा गिरा।

- पत्नी-बेटी को पीटने वाले पेरु के प्रधानमंत्री हेक्टर वेलो पिंटो को राष्ट्रपति ने बर्खास्त किया।

- पाक सेना आई.एस.आई के खिलाफ लिख रहा ब्लॉगर अहमद बकास गोराया को मारने की सुपारी लेने वाला किलर गोहिर खान पकड़ा गया।

■ 6 फरवरी

- स्वर साम्रज्ञी लता मंगेशकर का निधन हुआ दो दिन का राष्ट्रीय शोक घोषित।

-जम्बू कश्मीर के सांबा सेक्टर में सीमा पर तीन घुसपैठियों को सुरक्षा बलों ने मार गिराया।

-कनाड़ा के ग्रेटर टोरंटो एरिया में बीते 10 दिनों में आधा दर्जन हिन्दु मंदिरों में तोड़फोड़ की गई है।

■ 7 फरवरी

- नई दिल्लीः प्रो. शांति श्री धुलिपुड़ी पंडित जेएनयु की पहली महिला कुलपति नियुक्त की गई है।

- सहारनपुर दारूल उलूम की वेवसाइट पर सहारनपुर (यूपी) के डी.एम अखिलेश सिंह ने रोक लगा दी।

- पूर्व मंत्री ओर कांग्रेस नेता बालेंदु शुक्ला की पत्नी पुष्पा के बैंक लॉकर से एक करोड़ से ज्यादा के जेवर गायब हो गये।

■ 8 फरवरी

- अरूणाचलः बर्फीले तूफान की चपेट में आये 7 जवान शहीद हुये।

- कर्नाटक के उडुपी में सरकारी कॉलेज से शुरु हुआ हिजाब विवाद ठंडा नहीं हो रहा।

- नई दिल्लीः महाभारत में भीम की भूमिका निभाने वाले अभिनेता प्रवीण कुमार सोबली की मृत्यु हो गयी।

■ 9 फरवरी

- केन्द्रीय मंत्री के पुत्र आशीष मिश्रा को जमानत मिली।

- कर्नाटक में हिजाब विवाद को लेकर मदरास हाईकोर्ट ने गंभीर चिंता जताई है।

- भिण्डल जिले की जिला अस्पताल में वार्ड वाय एक अज्ञात व्यक्ति नर्स को गोलीमारी।

■ 10 फरवरी

- इंदौर के हीरानगर थाने में ड्रक्स 5 लाख की पकड़ाई।

- अब आम आदमी महाकालेश्वर मंदिर की जमीन खरीद सकेगा जिला प्रशासन उज्जैन ने इसकी स्वीकृति दी।

- म.प्र. में मेले और रैलियों पर लगी पावंदी हटी परन्तु नाइट कर्फ्यू जारी रखा गया।

- पाकिस्तान के सांसद आमिर लियाकत ने तीसरी शादी करने की घोषणा की।

■ 11 फरवरी

- सागरः बीना रेल्वे ट्रेक पर रात करीब 9 बजे अंडरब्रिज से मालगाड़ी तेल रफ्तार से निकली जिसकी धमस से अंडरब्रिज की मिट्टी धस गई मिट्टी में रेल्वे के दो इंजीनियर सहित पांच लोग दब गये।

- लगभग 10 लाख की आवादी वाली राजधानी ओटावा 8 हजार से ज्यादा ट्रकों के काफिले से बंधक बनी।

- सुप्रीम कोर्ट ने देश के विभिन्न

मदरसों मिशनरी, गुरुकुल, व वैदिक स्कूलों में समान शिक्षा संहिता लागू करने की मांग पर सुनवाई से इंकार कर दिया।

■ **12 फरवरी**

- देश के सबसे पुराने औद्योगिक समूहों में से एक बजाज ग्रुप के पूर्व चेयरमैन राहुल बजाज (83) का निधन हो गया।

- आंध्र के विशाखापट्टनम में जलाया गया 850 करोड़ का 2 लाख किलो गांजा।

-म.प्र. के तेज गेंदबाज आवेश खान 10 करोड़ रूपये में बिके हैं।

■ **13 फरवरी**

- हैदराबादः राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने रविवार को रामानुजाचार्य जी की स्वर्ण प्रतिमा का अनावरण किया।

-कटनी जिले के स्लीमनाबाद में बरगी नहर की निर्माणाधीन सुरंग धसने से सुरंग के अन्दर काम कर रहे 9 मजदूर फंस गये।

- करीब 22,842 करोड़ रूपये के एबीजी शिपथार्ड घोटाला मामले में सीबीआई अब तक 8 लोगों पर एफ आई आर दर्ज कर चुकी है।

■ **14 फरवरी**

- कर्नाटक हाईकोर्ट ने ऑनलाईन गेम को जुआं मानने वाला कानून रद्द किया।

- मेघालय : भाजपा के समर्थन वाली सरकार में शामिल हुये 5 कांग्रेस विधायक सस्पेंड।

- पेरिसः एक युवक ने पुलिस पर हमला करने की कोशिश की पुलिस ने पहले खुद को बचाया कमांडो फोर्स ने हमलावर को मार गिराया।

■ **15 फरवरी**

- राष्ट्रीय जनता दल के अध्यक्ष और बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव चारा। घोटाला के पांचवे मामले में भी दोषी पाये गये।

- हरियाणा के यमुनानगर में बंद पड़ी दूध डेरी पर पाल रखे दो पिटबुल डोग ने 40 साल के नरेन्द्र सिंह उर्फ निंदा को मौत के घाट उतार दिया।

- बुर्का पहने गुरुग्राम में एक महिला ने टैक्सी चालक को चाकू मार दिया हमला करने वाली महिला मिस्त्र की रहने वाली है। एवं महिला पुलिसकर्मी पर हमला कर दिया।

■ **16 फरवरी**

- राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल के दिल्ली आवास में शख्स ने कथित तौर पर एसयूवी लेकर घुसने की कोशिश करे।

- नई दिल्लीः देश में 54 चीनी ऐप्स पर रोक के बाद आयकर विभाग की टीम ने नई दिल्ली, गुरुग्राम और बेंगलुरु में चीन की दूरसंचार कंपनी हुवावे के परिसरों पर छापे मारे।

- गायक-संगीतकार बप्पी लाहिड़ी (69) की सांसो का सफर थम गया।

■ **17 फरवरी**

- एन एस ई की एम.डी चित्रा गुप्ता के

घर आयकर के छापे पड़े।

-कुशीनगरः बहादुर पूजा यादव ने कुए में गिरि 5 बच्चियों को बचाया 6वीं बच्ची को बचाने के बीच डूबने से उसकी मौत हो गई।

-सऊदी अरब में बुलेट ट्रेन ड्रायवरों के 30 पद के लिये 25000 फार्म भरे गये।

■ **18 फरवरी**

- सिमी के कार्यकर्ता सफदर नागौरी के लिये मृत्यु दण्ड की सजा सुनाई गई साथ में 38 दोषियों को फांसी की सजा मिली।

- पंजाब चुनाव में बाबा राम रहीम के 40 लाख समर्थकों का वोट भाजपा को देने का फरमान जारी हुआ।

-ब्रिटेन में यूनिस तूफान में तबाही मचाई नौ लोगों की मोत हुई।

■ **19 फरवरी**

- चंबल नदी में उज्जैन के कलेसिया परिवार में आने वाली गाड़ी गिरने से दूल्हा समेत नौ लोगों की मौत हुई।

- यूक्रेन में भारतीय दूतावाास के अधिकारियों को परिवार समेत वापिस आने का निर्देश। नागरिको को भी देश लौटने को कहा।

- कनाड़ा में कॉलेज बन्द होने से परेशान भारतीय छात्र इंडियन एबेंसी की सलाह बिना जांच पड़ताल न भरें फीस कनाडा सरकार से दखल न देने की मांग।

■ **20 फरवरी**

- जम्मूः जम्मू संभा की चिनाव वेली में बड़ी आतंकी साजिश को जम्मू कश्मीर पुलिस ने नाकाम कर दिया।

- सिवनीः भीमगढ़ बांध की मुख्य नहर फूटी खेतों में भरा पानी 200 एकड़ में लगी गेहूँ व अन्य फसले प्रभावित।

- ग्वालियर 20 फरवरी तीन एटीएम में गैस कटर से काटकर 43 लाख 68 हजार रूपये चोरी कर 90 मिनट में 5 बदमाश गायब हो गये।

■ **21 फरवरी**

- बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव को चारा घोटाला मामले में विशेष अदालत ने 5 साल की सजा सुनाई।

- कर्नाटक हाईकोर्ट में सरकार ने स्कूल कॉलेज में हिजाब पर रोक लगेगी या नहीं यह शिक्षक संस्थान ही तय करेगा।

- इंदौर स्कूटी स्लिप होने से कार नीचे आया नाबालिक हेलमेट न पहने होने से मौत हो गई।

■ **22 फरवरी**

- शिमोगा 22 फरवरी बजरंग दल के 28 वर्षीय कार्यकर्ता की हत्या के संबंध में पुलिस ने 12 व्यक्तियों को हिरासत में लिया।

- मुंबईः राज कुंद्रा पोर्नोग्राफी केस में पुलिस की खोजबीन जारी है अब तक इस मामले में 4 आरोपियों को गिरफ्तार किया गया है।

- दिल्लीः केन्द्र सरकार ने विदेशी

आधारित पंजाब पॉलिटिक्स टीवी के एप्स वेवसाइट और सोशल मीडिया अकाउंटस को प्रतिबंधित करने का आदेश दिया।

■ 23 फरवरी

- केन्द्र पुलिस ने अपनी ही नाबालिक पुत्री का गला घोटकर हत्या कर उसकी लाश के साथ दुष्कर्म करने वाले कलयुगी हैवान पिता को गिरफ्तार किया।

- मुंबईः आठ घंटे की पूछताछ के बाद महाराष्ट्र सरकार में मंत्री और एनसीपी नेता नवाब मलिक को प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने गिरफ्तार कर लिया।

- मैक्सिकों : काबो सैन लुकास के तटीय इलाके से करीब 3 टन कोकीन जब्त की गई है।

■ 24 फरवरी

- रूस में भारतीय समयानुसार सुबह 6 बजे यूक्रेन के खारकीव व राजधानी कीव पर मिसाइल हमले शुरु किये 11 शहरों में बमबारी इससे दुनिया दहल गई।

- विक्रम मजीठिया ने मोहाली जिला कोर्ट कॉम्पलेक्स में सुबह आत्म सर्पण कर दिया।

- दंतेवाड़ा क्षेत्र में गीदम थाना क्षेत्र अंतर्गत हिरोली गांव के पटेल पारा में जादू टोना के शक में एक ग्रामीण की हत्या कर दी।

■ 25 फरवरी

- 48 घंटे से रूस का यूक्रेन की राजधानी कीव पर पूरा कब्जा करने का प्रयास कर रहा है।

- छत्तीसगढ़ के जाजगीर में एक राईस मिल में आग लग गई।

- इंदौरः उमरीखेड़ा के पास काकड़ में रहने वाली 40 साल की सुनीता ने अपने पति बबलू की हत्या कर दी।

■ 26 फरवरी

- पूर्व भारतीय क्रिकेटर विनोद कांबले गिरफ्तार रेजिडेशियल सोसायटी के गेट में टक्कर मारने का आरोप है।

- पोलेण्ड ने भारतीय छात्रों को बिना बीजा के अपने देश में प्रवेश देने की घोषणा की।

- दिल्ली की हाई सिक्योरिटी तिहाड़ जेल में कैदी भिड़े हिंसा में 2 कर्मचारी समेत 6 लोग घायल हो गये।

■ 27 फरवरी

- यूक्रेन रोमानिया बार्डर पर फंसे हरियाणा के विद्यार्थी ।

- संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में भारत ने अपनी भूमिका शांति की सुनिश्चित की।

- स्विजरलैंड ने भी रूस पर पाबंदी लगाई।

■ 28 फरवरी

- यूक्रेन में भारतीय छात्र की मृत्यु पर राहुल गांधी ने दुख जताया।

-हंगरी के प्रधानमंत्री पर रूस से सभी रिश्ते खतम करने का ई यू ने दबाव बनाया।

-जम्मू कश्मीर की पुलिस सनत नगर में लश्कर ऐ तैबा के आतंकी को गिरफ्तार किया।

इसे भी जानिये

भारत के महान शहीद

नाम	जन्म	विशेष बात	सजा	मृत्यु
भगत सिंह	1907-23 मार्च	पालियामेन्ट पर बम फेका	फाँसी	23.03.1931
प्रसित भट्टाचार्य	1915-2 जुलाई	क्रान्तिकारी दल के सदस्य थे	फाँसी	02.07.1934
प्रद्योत भट्टाचार्य	1913-12 जनवरी	मिदनापुर के जिला मजिस्ट्रेट की हत्या कर दी	फाँसी	12.01.1934
भवानी प्रसाद भट्टाचार्य	1914-3 फरवरी	गर्वनर सर जॉन एन्डरसर की हत्या कर दी	फाँसी	03.02.1935
दिनेश मजूमदार	1907- मई	जेल से भाग निकलने में सफल हुये	फाँसी	09.06.1934
मतिलाल मल्लिक	1912-15 दिसम्बर	पुलिस कान्स्टेबिल की हत्या करने के आरोप में गिरफ्तार	फाँसी	15.12.1934
शंकर माहले	1925-19 जनवरी	भारत छोड़ो आंदोलन	फाँसी	19.01.1943
अनन्तहरि मित्र	1906-28 सितम्बर	दक्षिणेश्वर बम काण्ड के अभियोगी के रूप में गिरफ्तार	फाँसी	28.09.1926
राजनारायण मिश्र	1919-9 दिसम्बर		फाँसी	09.12.1942
कालिपद मुखर्जी			फाँसी	16.02.1983
चितरंजन मुखर्जी	1919-27 सितम्बर	राष्ट्रीय कार्यकलापों	फाँसी	27.09.1943
नीरेन्द्र मोहन मुखर्जी	1922-27 सितम्बर			27.09.1922
यतीन्द्रनाथ मुखर्जी	1880-10 सितम्बर	शम्सुल आलम दरोगा की हत्या करने के आरोप में गिरफ्तार	फाँसी	10.09.1915

दिशा बोध

स्थान का विचार

1. युद्धक्षेत्र की भली-भाँति जाँच किये बिना लड़ाई न छेड़ो न कोई काम प्रारम्भ करो तथा शत्रु को छोटा मत समझो।
2. दुर्गवेष्टित रणभूमि को चुन लें और सावधानी के साथ युद्ध करें, तो दुर्बल भी अपनी रक्षा करके शक्तिशाली और प्रतापी पुरुष के लिए भी अत्यन्त लाभदायक है।
3. यदि समुचित रणभूमि को चुन लें और सावधानी के साथ युद्ध करें, तो दूर्बल भी अपनी रक्षा करके शक्तिशाली शत्रु को जीत सकते हैं।
4. यदि तुम पहले ही सुदृढ़ बनाये हुए स्थान पर खड़े हो और वहाँ डटे हो, तो बैरियों की सब युक्तियाँ निष्फल सिद्ध होंगी।
5. पानी के भीतर मगरमच्छ शक्तिशाली है, किन्तु बाहर निकलने पर वह बैरियों के हाथ का खिलौना है।
6. पहियों वाला रथ समुद्र के ऊपर नहीं दौड़ता है और नहीं सागर गामी जहाज भूमि पर तैरता है।
7. देखो, जो राजा सब कुछ पहले से ही निर्धारित कर रखता है और समुचित स्थान पर आक्रमण करता है, उसको अपने बल के अतिरिक्त दूसरे सहायकों की आवश्यकता नहीं है।
8. जिनकी सेना निर्बल है, वह राजा यदि रणक्षेत्र के सुरक्षित भाग में जाकर खड़ा हो, तो उसके शत्रुओं की सारी चेष्टायें व्यर्थ सिद्ध होंगी।
9. यदि रक्षा के साधन और अन्य सुविधाएँ न भी हों तो भी किसी को उसके देश में हराना कठिन है।
10. देखो, उस गजराज को, जिसने पलक मारे बिना भालाधारकों की सारी सेना का सामना किया, लेकिन जब वही दलदली भूमि में फँस जाता है, तो एक गीदड़ भी उसके ऊपर विजय पा लेता है।

करूणा के सागर आचार्य श्री जी

✻ मुनि श्री 108 पूज्यसागरजी महाराज ✻

कार्तिकेयानुप्रेक्षा ग्रंथ में आचार्य श्री कीर्ति के स्वामी जी महाराज कर रहे हैं **जीवाणं रक्खणं धम्मो** अर्थात् जीवों की रक्षा करना धर्म है और धर्म की मूल जड़ दया है ये सारी बातें ग्रंथों से पढ़ते समय तो बहुत अच्छी लगती हैं लेकिन जीवन में उतारना बड़ा कठिन होता है। आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के अन्दर हमने वह करूणा और दया देखी है जिसको देखकर मन उनके प्रति अति श्रृद्धा से प्रफुल्लित हो जाता है।

सन् 2000 मई-जून के महीने का यह प्रसंग है जब राजस्थान प्रांत में पानी की बहुत कमी होने से वहां के जानवर भूख और प्यास से मरने लगे यहाँ तक कि वहाँ के किसान उन जानवरों को बिना पैसे में ही देने को तैयार थे लेकिन कोई लेने के लिये तैयार नहीं था। आचार्य श्री जी को जब यह सब जानकारी मालूम पड़ी तो उन्होंने एक दो ब्रह्मचारी भाईयों को बुलाकर कहा आप लोग राजस्थान जाकर वहाँ के जानवरों को यहाँ मध्यप्रदेश में लाकर गौशाला आदि में उन सब जानवरों को भिजवा दो। आचार्य श्री जी का आशीर्वाद लेकर ब्रह्मचारी भईया राजस्थान पहुँचे और सैकड़ों जानवरों को अजमेर (राजस्थान) में इकट्ठा करना शुरु कर दिया जब राजस्थान और आसपास के प्रमुख गणमान्यों को (जो आचार्य श्री से जुड़े व्यक्ति थे) वह मालूम चला कि ये सारे जानवर आचार्य श्री जी आशीर्वाद से मध्यप्रदेश में गौशालाओं में जाना है तो उन लोगों ने एक पूरी की पूरी ट्रेन (मालगाड़ी) भारत सरकार से लिखा पढ़ी कराकर बुक कर ली और उन सैकड़ों जानवरों को सारे डिब्बों में धीरे-धीरे भरकर उन डिब्बें में पानी भूसा आदि की व्यवस्था भी कर दी क्योंकि इस ट्रेन को अजमेर से पेंडा स्टेशन तक पहुंचने में तीन दिन लग सकते थे। उस दिन आचार्य श्री जी अमरकण्टक में विराजमान थे उन्हें स्टेशन पर आ जायेगी। चूँकि अमरकण्टक से पेंडा स्टेशन मात्र 50 किमी. की दूरी पर ही था। आचार्य श्री जी ने सोचा चातुर्मास स्थापना का समय करीब में है इसलिये पेंडा स्टेशन पर चलकर गायों को देख लेंगे, इसके बाद चातुर्मास के लिये आगे चले जायेंगे ऐसा सोचकर उन्होंने उसी दिन अमरकण्टक से विहार कर दिया।

आचार्य श्री जी विहार करते हुये आगे बढ़ रहे थे और हम कुछ महाराजर लोग आचार्य श्री जी के पीछे-पीछे चल रहे थे तभी एकाएक हम लोगों की दृष्टि आचार्य श्री जी के पैरों के पीछे स्थान पर पड़ी वहाँ कुछ लाल-लाल निशान दिखायी दे रहे थे, हम लोगों सोचा कि शायद धूप के कारण ये निशान दिखायी दे रहे हैं इसलिये कुछ बोला नहीं लेकिन कुछ मन में विकल्प जैसा तो हो रहा था। चूँकि मात्र दो दिन का रास्ता था और आचार्य श्री जी जब पेंडा गांव में पहुंच गये जो हम लोगों ने रास्ते में पैर में जो लाल-लाल निशान देखे थे वह धूप के कारण नहीं बल्कि कोई बीमारी थी क्योंकि पेंडा स्टशेन पहुंचते हुये आचार्य श्री जी को इतना दर्द बढ़ गया कि अच्दे से बैठने में भी परेशानी होने लगी, हम लोगों ने थोड़ी वैयावृत्ति आदि की लेकिन आचार्य श्री जी को

कोई आराम नहीं लग रहा था। चूँकि मन्दिर के पास स्टेशन था और स्टेशन के बाहर ही प्रवचन के लिये मंच बनाया गया। आचार्य श्री जी के अन्दर उन सैकड़ों गायों को देखने की भावना थी इसलिये पैर दर्द पर ज्यादा ध्यान न देकर दोपहर में मंच पर पहुंच गये, प्रवचन पूरे ही नहीं हो पाये कि उसी समय अजमेर से तीन दिन में चलकर गायों से भरी ट्रेन (उसी दिन आचार्य श्री जी का दीक्षा-दिवस भी था) आ गयी। सारे श्रावकों ने ताली बजा दी। आचार्य श्री जी ने प्रवचन पूरे करके स्वयं स्टेशन पर जाकर डिब्बों में सुरक्षित जानवरों को देखकर वह बहुत-बहुत प्रसन्न हुये, सारे जानवरों को उन्होंने आशीर्वाद दिया। आचार्य श्री जी के सामने उन डिब्बों से धीरे-धीरे गायों को निकाल कर सुरक्षित स्थान पहुँचाया गया।

धानि धन्य है आचार्य श्री जी के अन्दर की सोच, करूणा, दया और परोपकार की भावना जबकि आज मनुष्य, मनुष्य के प्रति अच्छे भाव नही ला पाते ऐसे समय में दूसरे प्रदेश से सैकड़ों जानवरों को बुलाकर उनको गौशालाओं में सुरक्षित रखना कितना बड़ा कार्य है इसके बाद आचार्य श्री जी के उपदेश तथा आशीर्वाद से बहुत स्थानों पर गौशालाओं का निर्माण कराकर उनमें मूक जानवरों को शरण देकर उनकी रक्षा हो रही है। यह सब गुरुदेव की अनुकम्पा का फल है और उनके जीवन में ही जिनवाणी की गाथा की पंक्ति **जीवाणं रक्खणं धम्मो** साक्षात् दिखायी दे रही है।

कविता

सिद्धक्षेत्र सम्मेदशिखर

✻ ब्र. वीणा दीदी, जरुआखेड़ा ✻

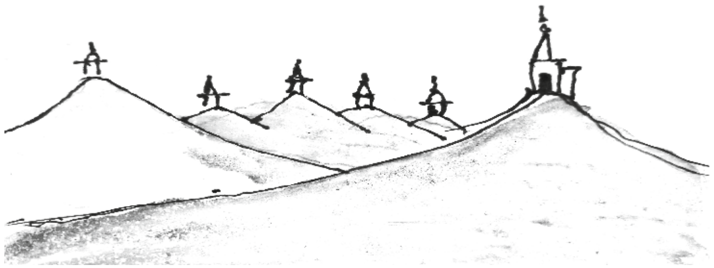

बीस तीर्थंकर मोक्ष पधारे सिद्धक्षेत्र सम्मेद शिखर
जैनों को है जान से प्यारा तीर्थधाम सम्मेद शिखर
चरण टोंक पर वंदन करने भारत भर से आते हैं
चढ़ते चढ़ते थक जाते पर भाव यही वे लाते हैं
भव-जल निधि से पार लगाने दूजा अब न कोई चरण
मन में आश जगाते हैं वे सच्ची शरण ये प्रभु के चरण

क्रमांक- 14 वरिष्ठ नागरिक

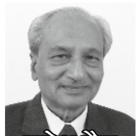
सुरेश जैन

ओल्ड ऐज होम (वृद्धाश्रम)

हमारी पूरी जनसंख्या का 8 प्रतिशत हिस्सा बुजुर्गों का है। ऐसे कई बच्चे हैं जो मां-बाप को जिंदगी के अंतिम मोड़ पर दर-दर की ठोकरें खाने के लिये अकेला छोड़ देते हैं। बुजुर्गों की ऐसी हालत को देखते हुये सरकार द्वारा तथा समाज की स्वयं सेवी संस्थाओं द्वारा वृद्धाश्रम बनायें गये हैं जहां जिंदगी के सतायें हुये बुजुर्गों को रखा जाता है। भारत वर्ष में लगभग 3000 वृद्धाश्रम हैं, जिनमें से लगभग 53 वृद्धाश्रम केवल महिलाओं के लिये हैं।

क्या कारण है वृद्धाश्रम में रहने के ?

- ऐसे लोग जिनकी शादी नहीं होती, काम करने की शक्ति खत्म हो जाती है और बुढ़ापे में अकेले रह जाते हैं।
- ऐसे लोग जिनकी कोई संतान नहीं होती।
- ऐसे लोग जिनकी कोई बेटा नहीं होता या सिर्फ बेटी होती है। बेटी के साथ न रहने के कारण वृद्धाश्रम में रहते हैं।
- अपनो के बीच अधिकार खोते बुजुर्ग।
- बेटा बड़ा हो गया विदेश में कमाने चला गया है पीछे कोई संभालने वाला नहीं है।
- रिटायरमैंट के बाद परिवार में वह शान न रहनी और अपने आप में हीन भावना का आना
- सबसे बड़ा कारण, बुजुर्गों की अपने ही घर में अवहेलना शुरु हो जाती है उनके आत्म सम्मान को ठेस पहुँचती है। इत्यादि कुछ अन्य कारण।

यह है ओल्ड ऐज होम में रहने वाले बुजुर्गों की दुनिया

ओल्ड ऐज होम अथवा वृद्धाश्रम में रहने वाले यहाँ पर किसी मजबूरी के कारण ही आते हैं, लेकिन वो यहां आने के बाद घर से दूर इसे ही अपना घर बना लेते हैं। यहां पर रहने वाले कुछ लोग अपनों के सताए हुये होते हैं और कुछ ऐसे होते हैं जिनका कोई अपना ही नहीं होता। वृद्धाश्रम में रहते हुये एक दूसरे का दुख-सुख बांटते हैं। यह बुजुर्ग यहां पर अपना काम खुद ही करते हैं। अपना कमरा खुद साफ करते हैं, खुद अपने कपड़े धोते हैं उन्हें संभालते हैं और खुद अपने सारे शौक पूरे करते हैं। कई बुजुर्ग ऐसे होते हैं जो खाली समय में कुछ न कुछ काम करते हैं। कुछ ऐसे बुजुर्ग होते हें जिनको बागवानी का शोक होता है, वह अपने कमरे के सामने गमलों के पोधों को रोज पानी देते हैं, और उनकी देख-रेख व संभाल करते हैं। कुछ बुजुर्ग संतोष कर चुके हैं और कई को अभी तक दुख है कि उनके अपनों ने उन्हें ऐसे ही छोड़ दिया। फिर भी इनकी जिंदगी चली जा रही है, अपनी रफ्तार से, अपने अंदाज से, अपने मुकाम की ओर।

अलग अलग प्रकार के वृद्धाश्रम

1. केवल सेवा करने वाले वृद्धाश्रम- यहाँ रहने वाले बुजुर्गों से किसी तरह की कोई फीस नहीं ली जाती है, यह समाज और सरकार के योगदान से चलते हैं। यहाँ गरीब परिवार के लोग रहते हैं।

2. निष्काम सेवा वृद्धाश्रम- यहां रहने वाले बुजुर्गों मे से किसी को पेंशन आ रही है तो उससे एक हजार रूपया महिने के हिसाब से लिये जाते हैं। जिनकी कोई आमदनी नहीं उनसे कुछ नहीं लिया जाता। यहाँ पर प्रायः मध्यम वर्ग के लोग रहते हैं।

3. रेडक्रॉस ओल्ड ऐज होम- यहां रहने वाले बुजुर्गों से 1800 रूपये महिना लिये जाते हैं और साथ में कमरों में लगे मीटर के हिसाब से बिजली का बिल भी लिया जाता है। यहाँ पर अच्छी पेंशन पाने वाले पुरुष और स्त्रियां रहती है। यहाँ एक टी.वी. भी लगा होता है, अथवा रहने वाले अपने कमरे में अपना टी.वी लगा सकते हैं। अखबार व किताबें भी उपलब्ध होती हैं। डॉक्टर भी राउंड पर आते हैं। इन वृद्ध आश्रम में आपको ईगो वाले सम्मान पूर्वक रहने वाले व्यक्ति अधिक मिलेगे। दो छोटी-छोटी घटनायें लिख रहा हूँ। एक बहुत पड़ी लिखी बड़े ऊँचे ओहदे से रिटायर हुई महिला मिली, आमतौर पर सारा दिन खामोश बैठी रहती है। तब तक सर्विस थी तब तक शानदार सरकारी बंगला व नौकर चाकर माली इत्यादि मिले हुये थे।

जिन्दगी भर की बचत से एक शानदार कोठी बनाई। पुत्र की शादी उस की मर्जी की लड़की से कर दी जो कि प्रेम विवाह था। बेटा और पुत्र वधु नई कोठी में रहने लगे। खुद जहाँ उस की ट्रांसफर होती वहाँ रहने को कोठी मिल जाती। पति का 6 वर्ष पहले देहांत हो गया था। रिटायरमेंट के बाद पुत्र वधु ने अपनी सासू माँ को घर में घुसने न दिया, झगड़ा हुआ गाली गलोच हुई वह महिला जिसके सामने पूरे सर्विस केरियर में किसी ने ऊँची आवाज से बात नहीं की थी। अपने आप को बड़ा शर्मिन्दा समझने लगी तथा उसे रेडक्रॉस के ओल्ड ऐज होम में शरण लेनी पड़ी।

एक बहुत ऊँचे ओहदे से रिटायर हुये व्यक्ति से बात हुई, कहने लगा बड़ा भरा पूरा परिवार छोड़ कर आया हूँ। कारण पूछने पर बोला यदि मैं बेटे पुत्र वधुओं व बच्चों में नुक्स निकालने लगे तो शायद 100 नुक्स निकालू और वह मुझमें 110 नुक्स निकालेगें। जनरेशन गेप समझा मेरा ईगो ने परिवार के साथ रहने की इजाजत नहीं दी। बड़ी अच्छी पेंशन मिलती है। अपने कमरे में टी.वी. समेत सब सहूलिते रखी हैं। अपने हम उम्र के साथियों के साथ खुश हूँ। कोई चिक-चिक नहीं होती, कोई नौकर की तरह बरताव नहीं करता। इसी प्रकार हर आदमी की अपनी-अपनी कहानी है। यदि लिखने लगे तो शायद एक पूरी किताब भी कम पड़ जाये। इस रेडक्रॉस होम में रहने वाले किसी से कोई ऐड या दान नहीं लेते, न ही कोई खाने पीने की सीधी चीज लेते हैं, यदि कोई कहे कि बड़ी विनम्रता से कहते है, ठीक है घर से चाय स्नेक्स अथवा भोजन बनाकर पहले से निर्धारित तिथि व समय पर ले आओं साथ में अपना परिवार लेकर आओ और हमारे साथ इकट्ठे बैठकर वह सामान खायें, हमारे साथ खाना खाकर हमारे साथ अपना प्यार बाँटे हम दान रूप में या रहम से कुछ भी स्वीकार नहीं करते। यहाँ रहने वाले व्यक्ति सारा दिन टी.वी अखबार- किताबें पड़ते हैं, एक दूसरे से गपशप करते हैं, सुबह शाम सैर कर के दिन गुजारते हैं। परिवार में कोई-

सुख दुःख हो तो उस में भी शामिल होते हैं।

कुछ मॉडर्न ओल्ड ऐज होम- इनकी संख्या देश में बहुत कम हैं परंतु जो हैं उनमें जिंदगी की हर सहूलियत मौजूद है। इनको रिटायरमेंट विलेज भी कहा जाता है। इन लेक्जिरियस ओल्ड ऐज होम में लाइब्रेरी, स्विमिंग पूल, प्ले ग्राउंड, काफी हाउस, डाईनिंग रूप, ड्राईंग रूप जैसी तमाम सुविधायें मौजूद होती हैं। आपको बस बेल बजानी होती है और अगले ही पल जरूरत का सामान आपके हाथ में होगा। ओल्ड ऐज होम के बाहर सैर सपाटे के लिये खुला हरा भरा मैदा, चारो तरफ फूलों कि क्यारीयाँ घने वृक्ष इत्यादि। ऐसे बुजुर्ग जिनके पास पैसा है और वह जीवन की साँझ को सकून से गुजारना चाहते हैं जिनकी औलाद उनके पास नहीं और विदेशों में सैटल है व अच्छा धन कमा रहे हैं। देश में रहते हुये दर दराज इलाकों में अच्छे ओहदे पर है, अथवा धन कमा रहे हैं तथा बुर्जुगों के लिये सुरक्षित रिहाईश की तलाश में हैं वह ऐसे रिटायरमेंट हाउस का सहारा लेते हैं। ऐसे ओल्डऐज होम कुछ मंहगे जरूर हैं फिर भी यह संस्था चलाने वाले उचित दामों में इन्हें जिंदगी की तमाम सुविधायें मुहैय्या कराती हैं और साथ ही अपनी उम्र के लोगों के साथ रहने का सुकून भी देती है। ऐसा ही एक मार्डन ओल्ड ऐज होम लुधियाना के निकट दोराहा में दो राहे वाली नहर के समीप बना हुआ है।

महामारी-विश्व को वरदान

डॉ. श्रीमति आशा जैन, इंदौर

करोना बन महामारी

भारत माता के सपूतों को जगाने आई हैं। विश्व को भारतीय संस्कृति में लौटाने आई है।
प्रतिदिन होते थे अग्निहोत्र दी जाती थी घृत युक्त महाआहुतियाँ जिसमें होती थी कपूर, चन्दन,
वन्ध, जटामासी, लोमान गुग्गल युक्त औषधियाँ सुगंधित होता था वायुमंडल संक्रमण, नहीं थी
महामारियाँ, भारत था विश्व गुरु, अनेकों विदेशी आकार शिक्षा ग्रहण कर
भारतीय संस्कृति को अपनाते थे, हम भूल गये अपने,
आचार विचार व्यवहार, खो गये विदेशी संस्कृति में , आई महामारी,
पूरे विश्व में हहाकार मचा दिया सब तरफ मचा है मौत का तांडव,
मची है अफरा-तफरी, सभी कैद है अपने घरों में, परिवार संग समय बिता रहे,
परिवार का आनंद ले रहे , लौट रहे हैं अपनी संस्कृति में, गिलोय, शतावरी, अश्वगंधा,
और त्रिकुट का काढा पी रहे, अपनी इम्यूनिटी पावर बढ़ा रहे, भूल गये मदिरापान,
भूल गये पिज्जा वर्गकर स्वाद, पारम्परिक व्यंजनों का आनंद ले, भारतीय संस्कृति में आ रहे,
योग प्राणायाम अपना कर, सोशल डिस्टेसिंग का पालन कर, हाथ जोड़ नमस्कार कर रहे,
खुद महामारी से बच, दूसरों को भी बचा रहे, स्वदेशी संस्कृति एवं संस्कार अपनाकर,
सम्पूर्ण विश्व को योग के साथ, आयुर्वेद का महत्व समझा रहे,
राष्ट्रपति ट्रम्प भी व्हाइट हाउस में,शांति यज्ञ करवा रहे, शांति यज्ञ करवा रहे

श्रमण शतक में मंगल भावना

✻ ब्र. जिनेश मलैया, इंदौर ✻

प्रत्येक ग्रंथ का प्रारंभ मंगल भावना से होता है। मंगल भावना का प्रयोजन निर्विघ्न ग्रंथ की समाप्ति एवं शिष्टाचार का पालन करना है तथा इष्टा मोक्ष की प्राप्ति की भावना होती है। आचार्य विद्यासागर जी ने अपने ग्रंथ श्रमण शतक में मंगलाचरण के रूप में सर्वप्रथम वर्धमान जिनेन्द्र का स्तवन किया है तदुपरान्त श्रुत केवली भद्रबाहु के प्रति भक्ति प्रकट की है। इसी क्रम को आगे बढ़ाते हुये आचार्य श्री ने कुन्दकुन्द आचार्य का बहुत ही प्रभावी स्तवन प्रकट किया है अपने गुरु ज्ञानसागर के प्रति मंगल भावों को प्रकट किया है। इसके साथ ही साथ सरस्वती माँ के प्रति अपनी भक्ति उपासना में निर्विकारी बनने की भावना व्यक्त की है। इस तरह के मंगलाचरण विरली ही रचनाओं में दृष्टिगोचर होते हैं शब्दों के लालित्य के साथ भक्ति भावनामय भावपक्ष भी बहुत गंभीर है ऐसी रचनायें जिनमें अलंकार की छटा के साथ यमक और अनुप्रास जिस तरह इन मंगल छन्दों में संस्कृत भाषा के साथ प्रस्तुत किये गये हैं उससे तो काव्य शक्ति उच्चता अपने आप स्पष्ट होती है कवि और कविता की उदात्तता की झलक एक बार पाठक को अवश्य ही मोहित कर लेती है।

वर्धमान स्तवन- आचार्य विद्यासागर जी ने श्रमण शतक का प्रारंभ ही वर्धमान स्वामी की भक्ति से किया है उनहों ने वर्धमान स्वामी को ज्ञान लक्ष्मी और यश की प्राप्ति करने वाले बताते हुये मान और माया से रहित बताया है तथा जिनके समक्ष देव नम्रभूत है ऐस वर्धमान जिनेन्द्र से आचार्य भगवन ने प्रार्थना की है। कि मेरे कर्म और जन्म जरा मृत्यु रूपी रोगों को एक साथ शीघ्र ही नष्टकर मुझे कल्याण रूपी अवस्था अथवा मोक्ष को प्राप्त करावे इसी का हिन्दी अनुवाद पद्यमय आपने इस प्रकार किया है।

योगी करे स्तवन भाव भरे स्वरों से,
जो हे ससंस्तुत नरों असुरों सुरों से।
वे वर्धमान गतमान मुझे बचावें।
काटे कुकर्म मम मोक्ष विभो। दिलावें।।

इससे पूर्व संस्कृत में आचार्य श्री की मूल रचना इस तरह है।

श्री वर्धमान ! माडय आकलप्य नत सुराप्तमानमाथः।
विर्धीश्चामानंमाय मचिरेण कलया मानमाथ।।

इस स्तवन में भक्ति रस का प्रवाह एवं अध्यात्म की प्रस्तुति अनोखी है। जिसे पढ़कर पाठक ध्यानस्थ अवश्य हो जाता है।

भद्रबाहु स्तवन- इतिहास प्रसिद्ध महामण्डलेश्वर अखण्ड भार के अन्तिम जैन

सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य के इतिहास सतत्व को मंगल भावना में समाहित करते हुये पूज्यपाद आचार्य श्री ने चन्द्रगुप्त मुनि के गुरु भद्रबाहु स्वामी श्रुत केवली को वन्दना निवेदित करते हुये अपनी भावना प्रकट की है कि हे गुरुवर मैं भव रूपी समुद्र से पार हो जाऊँ और सिद्धत्व को प्राप्त करके, फिर कभी लौटकर न आऊँ इस तरह से पुर्नजन्म से रहित सिद्ध पर्याय को प्राप्त इस भाव को प्रस्तुत छन्द में प्रगट किया है।

जो चन्द्रगुप्त मुनि के गुरु है, बली हैं ,
वे भद्रबाहु समाधी श्रुत केवली हैं ।
वंदू उन्हें द्रुत भवोदधि पार जाऊँ ।
संसार में कदापि न लौट आऊँ ।।

इसी तरह संस्कृत में भी आचार्य श्री ने अपने भावो को निबन्ध करते हुये इस प्रकार लिखा है।

तमनिच्छन् पुनर्भवं नृपनतमुकुटमणि लसित पुनर्भवम्।
नत्वेच्छे पुनर भवं भद्रबाहुमहम पुनर्भवम्।।

आचार्य कुन्दकुन्द देव के प्रति अपनी भक्ति भावना प्रकट करते हुये आचार्य श्री ने लिखा है। जो भव्य जीवस्प कमलों के बन्धु हैं उन्हें हर्षित करने वाले ही जिन्होंने धर्मचक्र को धारण किया है जो समतारूपी भूमि श्रेष्ठ पवित्रता को प्राप्त हैं और सम्यकदर्शन ही जिनकी अद्वितीय निधि है। उन कुन्दकुन्द आचार्य को मैं नमस्कार करता हूँ। इस छन्द में यमक अलंकार की अद्वितीय रचना दृष्टिगोचर हो रही है। तथा शब्दों के खिलाड़ी आचार्य विद्यासागर जी का शब्द चयन अत्यन्त मनोहर है।

हे कुन्दकुन्द मुनि ! भव्य सरोज बन्धु,
मैं बार-बार तव पाद-सरोज वंदू।
सम्यक्त्व के सदन हो समता सुधामा।
हे धर्म-चक्र शुभ धार लिया ललाम।
प्रणमामि कुन्दकुन्दं भव्य पद्मबन्धुं धृतवृष कुन्दम्।
गतं च समताकुंदं परमं सम्यक्त्वैकुन्दम्।

आचार्य ज्ञान सागर जी की स्थिति करते हुये ज्ञानसागर महाराज जी की वंदना स्तुति करते हुये आचार्य श्री डनहें पाप रूपी ग्रीष्म ऋतु में सयाने जल बताया है। तथा उनके केवलज्ञान पाने के लिये उनकी पूजा करने का संकल्प किया है।

ज्ञान सागर जी की दो विशेषतायें है।

1. सुधी गुरु हितैषी
2. शुद्धात्म में लीन हितोपदेशी।

कहानी

दुनिया की सबसे मंहगी जमीन

लेखकः ऐलक श्री सिद्धांतसागर जी महाराज

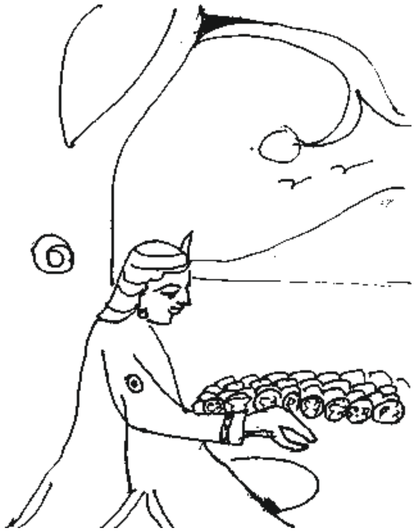

आसमान में बादल धवलिम रूप से सूर्य को कभी ढंक रहे थे तो कभी पूरा खुला छोड़ रहे थे। स्वर्णिम धरती की आभा सबके मन को आकर्षित कर रही थी प्रभात की किरणें फूल-पत्ती वृक्षों के रंगों को सबको स्वर्णिम बनाने में लीन थी। प्रभात मंगल प्रभात के रूप में हो चुका था। शाखा का बिगुल बज चुका था और धीरे-धीरे स्वयं सेवक प्रभात की बेला में आकर के अपने-अपने कार्य में निरत हो रहे थे। मैदान में पड़े कंकड़ पत्थरों को कुछ स्वयं सेवक बीन करके अलग कर रहे थे वे यह देख रहे थे कि खेल कूद में किसी भी स्वयं सेवक के लिये कंकड़ पत्थर चुभने न पायें वही धीरे-धीरे एकत्रित होकर स्वयं सेवक ध्वज के सामने खड़े हो गये। ध्वज अपनी हवा के वेग के साथ उत्तर दिशा की तरफ फहराने लगा स्वयं सेवकों ने पंक्ति बद्ध होकर अधिकारियों ने गणनायकों ने सबने महाध्वज को प्रणाम किया इसके बाद शाखा प्रारंभ हो गई शाखा के प्रारंभ होते ही पहले कबड्डी का खेल हुआ कबड्डी का खेल देखकर के हार-जीत की बात हो गई इसके बाद शेर बकरी के खेल हुआ शेर बकरी के खेल में स्वयं सेवकों को बहुत आनंद आता था उस शेर बकरी के खेल के बाद सब एक गोले में मण्डल में बैठ गये स्वयं सेवकों में कार्यवाह ने और मुख्य शिक्षक ने आदेश किया मुख्य शिक्षक के आदेश के बाद सभी स्वयं सेवक अपनी-अपनी मौन रूप से आसन जमाये हुये बौद्धिक प्रमुख की बात सुन रहे थे जिला प्रचारक जी भी आये हुये थे जिसके कारण से शाखा में आज कुछ संस्था ज्यादा थी शाखा के स्वयं सेवकों के बीच में एक कहानी सुनाना प्रारंभ हुई वह कहानी यह थी कि इस भारत का सबसे आताताई बादशाह औरंगजेब हुआ है औरंगजेब ने भारत देश के बहुत सारे मंदिरों और मूर्तियों का भंजन करके अपने कट्टर पना होने का सदैव परिचय दिया उसकी मृत्यु में सरियत को सर्वोपरि बनाने का प्रावधान था और औरंगजेब के बारे में यह भी बताया गया कि

उसने अपने पिता शाहजहाँ को जेल में डालकर तथा अपने भाईयों को मौत के घाट उतारकर औरंगजेब सत्ता आसीन हुआ था अपनी खून की सनी तलवारों से हिन्दुओं का घात करना उसकी आदत थी।

औरंगजेब के बारे में भाईजी बता रहे थे कि औरंगजेब इस पूरी जमीन को हिन्दुस्तान को काफिरों से खाली कराना चाहता था इसीलिये जो भी कुरान, सरियत, इस्लाम को नहीं मानते थे उन सबको काफिर कहा जाता था लेकिन औरंगजेब ने कभी यह नहीं सोचा था के सिक्खों के गुरु गोविन्द सिंह जी उस पर भारी पड़ेगें और सिक्खों के गुरु गोविन्द सिंह ने औरंगजेब की हर नीतियों का विरोध करना शुरु कर दिया था गुरु गोविन्द सिंह जी ने अपनी अच्छी सेना गठित कर ली थी। वहां गुरुगोविन्द सिंह के विरोध का सामना औरंगजेब को करना पड़ रहा था तो दूसरी तरह छत्रपति शिवाजी भी औरंगजेब को काफी चोट पहुँचा रहे थे। ऐसी स्थिति देखकर गुरु गोविन्द सिंह ने और शिवाजी ने मिलकर के औरंगजेब के लिये परेशान कर दिया लेकिन सत्ता पर बैठा हुआ हमेशा भारी होता जिसकी सत्ता होती है उसका पत्ता होता है अर्थात् वही पत्ता उसके लिये काम आता है। गुरुगोविन्द सिंह ने जब औरंगजेब को हर दृश्टि से चुनौती दी तो औरंगजेब ने अपनी सत्ता का दुरोपयोग करना शुरु कर दिया यहां तक कि गुरु गोविन्द सिंह के नोनिहाल होनहार दोनों पुत्रों को दीवार में चुनवा दिया इस परिस्थिति को देखकर के दोनों बच्चों की दादी को भी जब पता लगा कि उनके दोनों पोते औरंगजेब ने दीवार में चुनवा दिये हैंतो गुरुगोविंद सिंह की माँ यह सदमा नहीं झेल पाई और वे भी मृत्यु को प्राप्त हो गयी तीनों लोगों का शव पड़ा रहा तब मंत्रियों ने बादशाह के बजीरों ने बादशाह औरंगजेब से कहा इनके अंतिम संस्कार करने के लिये इन्हें जमीन दी जाये तब औरंगजेब ने इसके लिये साफ इंकार कर दिया **तब जैन मंत्री टोडरमल** ने बादशाह औरंगजेब से कहा कि कोई न कोई बात आपके लिये स्वीकार जरूर करना पड़ेगी हिन्दु पद्धति से ही इन शवों का अंतिम संस्कार किया जायेगा। अगर इस्लामिक पद्धति से इनका अंतिम संस्कार किया जाता है तो भी इनको दफनाने की जमीन तो चाहिये ही पर औरंगजेब ने उनकी कोई बात नहीं सुनी सब मंत्री चिन्ता में पड़ गये लेकिन टोडरमल की बात सुनकर के औरंगजेब ने एक अपनी बड़ी शर्त रख दी और औरंगजेब ने अपनी शर्त रखते हुये कहा-ठीक है हम उतनी ही जमीन देंगे जितनी जमीन पर स्वर्ण मुद्राएँ रखी जायेंगी बिछा दी जायेंगी यह बात सुनकर टोडरमल जैन ने अपनी सभी चिंताओं को छोड़कर औरंगजेब से कहा कि जहापनाह आपके लिये मैं तेयार हूँ और जितनी जमीन चाहिये होगी उतनी स्वर्ण मुद्रा बिछा देंगे और टोडरमल जी ने स्वर्ण मुद्राएं बिछा दी।

दूसरे बजीरों ने जब औरंगजेब से कहा कि स्वर्ण मुद्रायें बिछा दी गई हे जितनी जमीन पर क्या उतनी जमीन दे दी जायें तो औरंगजेब ने कहा देखो पहले किस तरीके से बिछाई हैं लालची औरंगजेब परेशान करने की मानसिकता से उसने अपना मन यह बना लिया कि सिर्फ हिन्दुओं को हमें परेशान करना है उस औरंगजेब की नियत भी अच्छी नहीं थी औरंगजेब ने जांच करवाई की मुद्राऐं कैसी बिछी है। तो उसे पता लगा कि सब

मुद्रायें आड़ी बिछी हुई है औरंगजेब ने अपनी शासन प्रणाली का दुरोपयोग करते हुये फरमान जारी कर दिया कि इस तरह बिछी हुई स्वर्ण मुद्राओं के आधार पर जमीन नहीं दी जा सकती है। बादशाह का नया फरमान सुनकर बजीर टोडरमल जैन की पूरी योजना असफल हो गई वे समझ गये कि बादशाह को मनाना अब टेड़ी खीर है परन्तु वे हारे नहीं क्योंकि **टोडरमल जैन** असाधारण बुद्धि के धनी थे वे कभी विपत्तितयों से घबराते नही थे वे कहा करते थे सफल मंत्री वही होता है जो बादशाह को यह समझा दे कि इस कार्य के करने से आपका बहुत बड़ा नुकसान होने वाला है अथवा आपकी प्रतिष्ठा को बहुत बड़ी चोट पहुँचने वाली है अथवा फायदा के रास्ते बताने पर बादशाह खुश अवश्य होता है।

औरंगजेब ने किसी भी व्यक्ति को अपना विश्वसनीय नहीं माना था क्योंकि वह अपना शासन सुचारू चलाने के लिये और जनता में विद्रोह न हो इसलिये वह गैर मुसलमान मंत्री रखे था औरंगजेब की इस कूटनीति को टोडरमल अच्छी तरीके से समझते थे वे बादशाह से सम्मान मिलने पर कभी फूलते नहीं थे और न ही वे अपनी औकात को भूलते थे हर काम चतुराई के साथ किया करते थे। गुरु गोविंद सिंह के पुत्रों के और उनकी मां के शव को अंतिम संस्कार के लिये वे जमीन दे दें। कुछ घंटो तक मंथन करने के बाद टोडरमल जैन अपने घर से निकल पड़े।

सिर की पगड़ी संभालकर अचकन पर हाथ फेरते हुये वे राजमहल की ओर निकल पड़े संयोग की बात है कि औरंगजेब बादशाह आज न जाने क्यों अलग ही मिजाज में थे जैसे ही पहरेदारों ने सूचना दी कि जहांपनाह आपके पास मिलने के लिये टोडरमल आना चाहते हैं यह सुनते ही औरंगजेब ने कहा उन्हें तुरन्त ही मेरे सामने हाजिर करो औरंगजेब का फरमान पाते ही पहरेदारों ने टोडरमल को राजभवन में हाजिर किया जैसे ही टोडरमल औरंगजेब के सामने पहुँचे औरंगजेब ने पूछा क्यों टोडरमल खैरियत तो है। तब टोडरमल ने कहा जहांपनाह आपके रहते जिस बात की कमी होगी।

औरंगजेब ने कहा मैं तुम पर बहुत खुश हूँ आज जो तुम मांगोंगे वो मैं तुम्हें अवश्य दे दूंगा। तब टोडरमल ने कहा जहांपनाह आप अगर मेरे ऊपर खुश हैं तो बस एक ही काम कर दें कि गुरु गोविन्द सिंह के परिवार के तीनों शवों को सुपुर्दे खाक करने के लिये अवसर और जमीन दे दें।

टोडरमल की बात सुनते ही औरंगजेब की भोंहें तन गई और वह बोला मैंने फरमान जारी कर दिया है कि जितनी जमीन पर सोने के सिक्के बिछाये जायेंगे उतनी जमीन तीनों के लाशो की आखरी रश्म करने के लिये मिल जायेगी तब टोडरमल ने कहा हजूर सिक्को तो बिछा दिये गये हैं फिर जमीन देने से इंकार क्यों किया गया यह समझ में नही आ रहा है तब औरंगजेब ने कहा आड़े सिक्के बिछाने पर जमीन नहीं दी जायेगी किन्तु खड़े सिक्के जमाकर जितनी जमीन को घेरा जायेगा। उतनी जमीन लाशों की आखिरी रश्म के लिये दी जायेगी तब टोडरमल ने कहा- हुजूर ऐसा ही होगा परन्तु अब फरमान पर रोक न लगाई जाये तब औरंगजेब ने हँसते हुये कहा कोई रोक नहीं लगाई जायेगी।

टोडरमल ने फरमान का कागज हाथ में लिया और तेज गति से कब्रिस्तान की ओर बढ़ने लगा परिणाम यह सामने आया कि टोडरमल अपने लक्ष्य तक पहुँचने में सफल होते दिखाई दिये। अब बात यह रही कि इतनी स्वर्ण मुद्रायें लाकर कैसे पूर्ति की जाये कई सिक्ख हिन्दू जैन धनाड्य स्वर्ण मुद्राय देने को इच्छुक थे परनतु उन्हें डर था कि कोई बलाय उनके माथे न पड़ जाये इसलिये वे गुप्त रूप से सहयोग करने के लिये तैयार थे **परन्तु टोडरमल ने अपना पूरा खजाना खोल दिया और जिनेन्द्र भगवान का नाम लेते हुये भगवाना से प्रार्थना करने लगा कि हे भगवान हम सब भक्तों की रक्षा करना हम लोगों की आज रखना अब बस आपके ही हाथ में हैं क्योंकि आपके सिवा हमारा कोई नहीं है इस समय हमारी नाव बीच भंवर में फंसी हुई है पार लगा देना या डुबो देना आपकी ही मर्जी है मैने आज तक कभी कुछ नहीं मांगा है आंख बन्द कर हाथ जोड़कर टोडरमल इस कब्रिस्तान में बैठ गया राज महल के सभी हाकिम ने अपनी स्वर्ण मुद्राओं को खेड़ रूप से जमाना शुरु कर दिया सभी कोतुहल के साथ देख रहे थे जब स्वर्ण मुद्रायें समाप्त हो जायेंगी। तब टोडरमल क्या करेगा। आंखों के इशारे से टोडरमल का मजाक भी बना रहे थे परन्तु टोडरमल के अरदली एक के बाद एक बक्से लाकर स्वर्ण मुद्राओं को उड़ेलते जा रहे थे और टोडरमल मुद्राओं को खड़े रूम में जमाने में व्यस्थ थे देखते ही देखते इतनी सारी स्वर्ण मुद्राएं जमा दी गई जितने में तीनों शवों का अंतिम संस्कार हो सके। सभी देखकर चकित हो गये कि एक लाख पचत्तर हजार स्वर्ण मुद्राओं को खजाने में जमा करके सभी को चकित कर दिया और साथ ही साथ स्वर्ण मुद्राओं में खरीदी हुई जमीन पर अंतिम संस्कार करके अपने कॉम के प्रति सच्चे समर्पण का उदाहरण प्रस्तुत कर दिया।**

जब भाई जी के मुँह से यह कहानी पूर्ण हुई तब स्वयं सेवकों ने जोरदार ताली बजा दी ताली बजाने पर भाई जी ने स्वयं सेवकों को समझाइस देते हुये कहा- देखो ताली बजाना सरल काम है परन्तु अपने देश और समाज के प्रति समर्पित होकर देश समाज की प्रतिष्ठा बचाना बहुत संघर्ष पूर्ण कार्य है जो इस कार्य को बखूबी कर देता है उसका नाम अमर हो जाता है। आज टोडरमल जैन का नाम सम्मान के साथ लिया जाता है। आप लोग मात्र ताली बजाने की आदत न डालें अपितु टोडरमल जैसे बनकर राष्ट्र व समाज को अपना योगदान दें। संघ शाखा विसर्जन के पूर्व सभी स्वयंसेवक ध्वज के सामने खड़ हो गये प्रार्थना के बाद विकर का आदेश मिलते ही सभी अपने -अपने घर जाने लगे परन्तु दो-तीन स्वयं सेवक ने भाई जी का अभिवादन करते हुये कहा भाई जी हम जैन हैं परन्तु हमें तो किसी ने आज तक टोडरमल जैसा जैन का नाम तक नहीं बताया और आपने महानत्याग मूर्ति टोडरमल जैन का इतना हृदय स्पर्शी घटनाक्रम सुनाकर हमें उनके कहा आपको इस कहानी के तथ्य गूगल पर सर्च करने बाद अवश्य मिलेंगे इतिहास पढ़ो पता लगेगा कि हमारे बुजुर्ग कितने महान थे।

ब्राह्मी लिपी के संबंध में विभिन्न विचार धारा

❊ वैद्य अरविन्द प्रेमचंद, भोपाल ❊

वैसे इतिहास हमेशा विवाद का विषय रहा हैं या रहता हैं। कारण हर विचारधारा वाला अपनी श्रेष्ठता बताने कुछ भी प्रमाण देते हैं वो चाहे संदर्भित हों या न हो। परन्तु विवाद समाप्त करने न्यायाधीश या उस विषय के विशेषज्ञ की बात मानना पड़ेगी। इस बात में अब कोई विवाद का स्थान नहीं रहा कि भगवान ऋषभदेव जी ने अपनी पुत्री ब्राह्मी को ब्राह्मी लिपि सिखाई और सुंदरी को अंक विज्ञान सिखाया। उक्त आधार पर भगवान् आदिनाथ की प्राचीनता अन्यों से कम नहीं हैं।

जैन परम्परा में मान्य चौबीस तीर्थंकरों की श्रृंखला में भगवान ऋषभदेव का नाम प्रथम स्थान पर एवं अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी हैं। जैनधर्म विश्व के प्राचीन धर्मों में से एक है किंतु अज्ञानता और प्रमाद के कारण आज भी अनेक व्यक्ति जैन धर्म के संस्थापक के रूप में भगवान महावीर को स्मरण करते हैं। विश्व के प्राचीनतम लिपिबद्ध धर्म ग्रंथों में से एक वेद में तथा श्रीमद्भागवत इत्यादि में आये भगवान ऋषभदेव के उल्लेख तथा विश्व की लगभग समस्त संस्कृतियों में ऋषभदेव की किसी न किसी रूप में उपस्थिति जैन धर्म की प्राचीनता और भगवान ऋषभदेव की सर्वमान्य स्थिति को व्यक्त करती है।

तीर्थंकर आदिनाथ प्रथम तीर्थंकर हैं, जिन्होंने मानव जाति को पुरुषार्थ का उपदेश दिया। अपने जीवन निर्माण के लिये, परिवार, राष्ट्र के लिये उन्हों ने कर्म का उपदेश दिया। मानव जाति से उन्होंने कहा कि- तुम पुरुषार्थ के द्वारा अपनी समस्याओं को हल कर सकते हो, इस दृष्टि से विभिन्न कलाओं का निरूपण किया। साम्राज्य का भी त्याग किया, तप, त्याग के द्वारा कैवल्य प्राप्त किया। वीतराग, निराकार हो गये। धर्म के उपदेश द्वारा समाज का सृजन किया। परमात्मा के रूप में बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय, सर्वे भविन्तु सुखिनः को साकार करते रहे।

भगवान आदिनाथ के बारे में श्रद्धासुमन अर्पित करते हुये भारत के राष्ट्रपति डॉ. शंकरदयाल शर्मा ने कहा था- मैंने विश्व के तथा अपने देश के करीब-करीब सभी धर्मों का थोड़ा बहुत अध्ययन किया है। जैन धर्म की अनेक सैद्धांतिक और व्यवहारिक बातों ने मुझे प्रभावित किया है। जैन धर्म के प्रवर्तक भगवान ऋषभदेव की यह प्रतिमा दिखाई दे रही है, इसे मैं कई अर्थो में जैन सिद्धांतों का प्रतीक मानता हूँ। इस प्रतिमा की विशालता, अपने शाश्वत और भव्य स्वरूप में उपदेश दे रही है, हमें अपने हृदय को इतना विशाल बनाना है, संकीर्ण विचारों, स्वार्थ लिप्सा की वृत्ति से ऊपर उठकर उदात्त बनाना है। श्रीमद भागपवत के पांचवे स्कंध में अध्याय 2 से 6 में ऋषभदेव का वर्णन मिलता है। इसमें अपने पुत्रों को दिये उनके उपदेश का उल्लेख है।

जैनधर्म के लिये यह गौरव की बात है कि इन्हीं प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव के ज्येष्ठ पुत्र भरत के नाम से इस देश का नामकरण भारतवर्ष इन्हीं की प्रसिद्धि के कारण विख्यात हुआ। इतना ही नहीं, अपितु कुछ विद्वान भी संभवतः इस तथ्यश से अपरिचित होंगे कि आर्यखण्ड रूप इस भारतवर्ष का एक प्राचीन नाम नाभिखण्ड अजनाभवर्ष भी इन्हीं ऋषभदेव के पिता नाभिराय के नाम से प्रसिद्ध था। ये नाभि और कोई नहीं , अपितु स्वायंभ्व मनु के पुत्र प्रियव्रत और प्रियव्रत के पुत्र नाभि थे। नाभिराय का एक नाम अजनाभ भी था स्कंधपुराण में कहा है- हिमाद्रिजलधरेन्तर्नाभिखण्डमिति स्मृतम् 1/2/37/55

श्रीमदभागवत में कहा है अजनाभवर्ष ही आगे चलकर भारतवर्ष इस संज्ञा में अभिहित हुआ।

श्रीमदभागवत 5/4/9 व 11/2/17 में इसके प्रमाण देखे जा सकते हैं। मार्कण्डेय पुराण में 10/10-11, वायुपुराण पूर्वार्ध, नारद पुराण पूर्वखण्ड, लिंगपुराण, शिवपुराण, मत्स्यपुराण ब्रह्माण पुराण पूर्व में भी इसके प्रमाण देखे जा सकते हैं ।

जैन धर्म के प्रवर्तक प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव इस विश्व के लिये उज्जवल प्रकाश हैं । उन्होंने कर्मो पर विजय प्राप्त कर दुनिया को त्याग का मार्ग बताया। भगवान ऋषभदेव की शिक्षाएं मानवता के कल्याण के लिये हैं, उनके उपदेश आज भी समाज के विघटनशोषण, साम्प्रदायिक विद्वेष एवं पर्यावरण प्रदूषण को रोकने में सक्षम एवं प्रासंगिक हैं।

इस युग में भारतीय संस्कृति के प्रणेता एवं जैनधर्म के प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव की जनकल्याणकारी शिक्षा द्वारा प्रतिपादित जीवन-शैली, आज के चुनौती भरे माहौल में उनके सामाजिक एवं राजनीति विचारों की प्रासंगिकता है।

तीर्थंकर ऋषभदेव अध्यात्म विद्या के भी जनक रहे हैं । उनके पुत्र भरत और बाहुबली का कथन इस तथ्य का प्रमाण है, कि संसारी व्यक्ति कितना रागी द्वेषी रहता है जो अपने सहोदर के भी अधिकार को स्वीकार नहीं कर पाता। दोनो भाइयों के बीच हुआ युद्ध हर परिवार के युद्ध का प्रतिबिम्ब है। बाहुबली का स्वाभिमान हर व्यक्ति के स्वाभिमान का दिग्दर्शक है। सार्मथ्य होने पर भी अपने बड़े भाई को को न मारना, उनके सहज कर्तव्य का स्फुरण है। अन्त में दोनों का वीतरागी बनकर मोक्ष प्राप्त करना, जीव की स्वाभाविक परिणति का सूचक है। निरासक्त व्यक्ति की यह आध्यात्मिक दृष्टि है।

सामाजिक संरचना में उन्होंने प्रजाजनों को तीन श्रेणियों में विभाजित करते हुये उनको अपने-अपने कर्तव्य, अधिकार तथा उपलब्धियों के बारे में प्रथम मार्गदर्शन किया। सर्वांगीण विकास के मूल आधारभूत तत्त्वों का विवेचन कर वास्तविक समाजवादी व्यवस्था का बोध कराया।

प्रत्येक वर्ण व्यवस्था में पूर्ण सामंजस्य निर्मित करने हेतु तथा उनके निर्वाह के लिये आवश्यक मार्गदर्शन सिद्धांत, प्रतिपादन करते हुये स्वयं उसका प्रयोग या निर्माण करके

प्रात्याक्षिक भी किया। अश्व परीक्षा, आयुध निर्माण, रत्न, परीक्षा, पशुपालन आदि बहत्तर कलाओं का ज्ञान प्रदर्शित किया। उनके द्वारा प्रदत्त शिक्षाओं का वर्गीकरण कुछ इस प्रकार से किया जा सकता है।

1. असि-शस्त्र विद्या, 2. मसि-पशुपालन, 3. कृषि-खेती, वृक्ष, लता वेली, आयुर्वेद, 4. विद्या-पढ़ना, लिखना 5. वाणिज्य-व्यापार, 6. शिल्प-सभी प्रकार के कलाकारी कार्य।

ऋषभदेव ने महिला साक्षरता तथा स्त्री समानता पर भी महत्वपूर्ण कार्य किया है। अपनी दोनों पुत्रियों को ब्राह्मी को अक्षर ज्ञान के साथ-साथ व्याकरण, छंद,अलंकार,रूपक, उपमा आदि के साथ स्त्रियोचित अनेक गुणों के ज्ञान से अलंकृत किया। दूसरी पुत्री सुंदरी को अंकगणतीय ज्ञान से पुरुस्कृत किया। आज भी इनके द्वार निर्मित व्याकरणशास्त्र तथा गणितिय सिद्धांतों ने महानतम ग्रंथों में स्थान प्राप्त किया है।

प्रशासनिक कार्य में इस भारत भूमि को उन्होंने राज्य,नगर, खेट, कर्वट, मटम्ब, द्रोण मुख तथा संवाहन में विभाजित कर सुयोग्य प्रशासनिक, न्यायिक अधिकारों से युक्त राजा, माण्डलिक, किलेदार, नगर प्रमुख आदि के सुपुर्द किया। आपने आदर्श दण्ड संहिता का भी प्रावधान कुशलता पूर्वक किया।

ब्राह्मी एक प्राचीन लिपी है जिससे कई एशियाई लिपियों का विकास हुआ है। देवनागरी सहित अन्य दक्षिण एशियाई, दक्षिण-पूर्व एशियाई, तिब्बती तथा कुछ लोगों के अनुसार कोरियाई लिपि का विकास भी इसी से हुआ था। इथियोपियाई लिपि पर ब्राह्मी लिपि का स्पष्ट प्रभाव है। अभी तक माना जाता था कि ब्राह्मी लिपि का विकास चौथी से तीसरी सदी ईसा पूर्व में मौर्यों ने किया था, पर भारतीय पुरातात्विक सर्वेक्षण के ताजा उत्खनन से पला चला है कि तमिलनाडु ओर श्रीलंका में यह छठी सदी ईसा पूर्व से ही विद्यमान थी।

कई विद्वानों का मत है कि यह लिपि प्राचीन सरस्वती लिपि (सिन्धु लिपि) से निकली, अतः यह पूर्ववर्ती रूप में भारत में पहले से प्रयोग में थी। सरस्वती लिपि के प्रचलन से हट जाने के बाद संस्कृत लिखने के लिये ब्राह्मी लिपि प्रचलन में आई। ब्राह्मी लिपि में संस्कृत में ज्यादा कुछ ऐसा नहीं लिखा गया जो समय की मार झेल सके। प्राकृत/पाली भाषा में लिखे गये मौर्य सम्राट अशोक के बौद्ध उपदेश आज भी सुरक्षित है। इसी लिये शायद यह भ्रम उत्पन्न हुआ कि इसका विकास मौर्यों ने किया।

यह लिपि उसी प्रकार बाँई ओर से दाहिनी ओर को लिखी जाती थी जैसे, उनमें निकली हुई आजकल की लिपियाँ। ललितविस्तर में लिपियों के जो नाम गिनाये गये हैं, उनमें ब्रह्मलिपि का नाम भी मिला है। इस लिपि का सबसे पुराना रूप अशोक के शिलालेखों में ही मिला है।

उक्त आधार पर यह सुस्पष्ट होता हैं कि भारतवर्ष में ब्राह्मी लिपि और अंक विद्या के जनक भगवान् ऋषभदेव को माना जाता उचित हैं।

हमारे गौरव

अमर शहीद साबूलाल जैन

साबूलाल का जन्म 1923 ई. में गढ़ाकोटा में हुआ पिता पूरनचंद वास्तव में उसी दिन पूरन (पूर्ण) हुये थे, जब साबूलाल ने उनके घर जन्म लिया। बालक साबूलाल ने स्थानीय स्कूल में ही पांचवी तक शिखा ग्रहण की। उन दिनों दर्जा पांच पास कर लेना भी बहुत समझा जाता था।

22 अगस्त 1942 को गढ़ाकोटा में एक वृहत सभा का आयोजन हुआ। सर्व सम्मति से तय हुआ कि अंग्रेजी शासन तंत्र का प्रतीक पुलिस थाना यहाँ है, अतः इस पर ही तिरंगा झंडा फहराया जाये। तत्काल ही उस सभा ने एक जुलूस का रूप ले लिया। जुलूस का नेतृत्व, गढ़ाकोटा की वीरांगना पार्वती बाई कर रही थी। जुलूस में लगभग ढाई हजार स्त्री-पुरुष थे। यह संख्या किसी बड़े शहर के लिये कम प्रतीत हो सकती है पर गढ़ाकोटा जैसे कस्बे में इतना बड़ा जुलूस शायद ही कभी निकला दो।

भीड़ को अनियंत्रित देखकर पुलिस सब इंसपेक्टर गया प्रसाद खरे तथा कुछ अन्य सिपाहियों ने गोलियां चलाना प्रारंभ कर दिया पर गोलियों की परवाह किसे थी। साबूलाल भी हाथ में झंडा लिये थे वे जानते थे कि थोड़ा भी आगे बढ़ना मौत को आमंत्रण देना है। जीवन की समाप्ति है।

साबूलाल, कुंजी लाल और पं. धनीराम दुबे को गोलियां लगी थी, अतः उन्हें तुरंत सागर अस्पताल भेजा गया पं. धनीराम और श्री कुंजी लाल तो बच गये पर साबूलाल मरकर भी अमर हो गये। 24 अगस्त 1942 को प्रातः काल उनके शव का जुलूस निकाला गया। जनता ने अश्रुपूरित नेत्रों से उन्हें अंतिम विदाई दी।

कुंडलपुर पंचकल्याणक महोत्सव पर विशिष्ट आवरण सागर कैंट डाकघर से 24 फरवरी को जारी किया

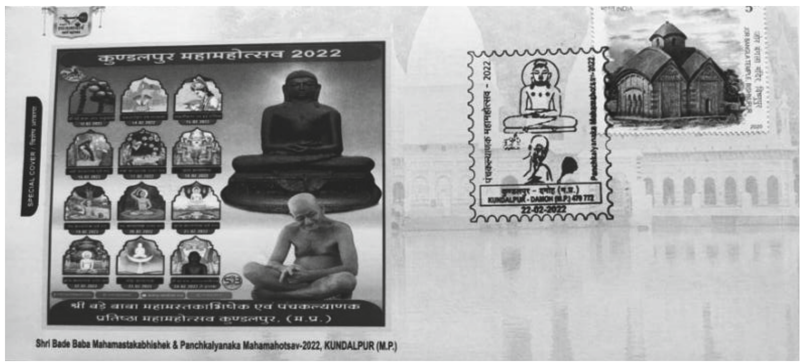

आचार्य श्री विद्यासागर जी कृत हिन्दी स्तुति साहित्य का वैशिष्ट्य

❋ डॉ. रजनी जैन, इंदौर ❋

हम आज सभी अपने परम आराध्य, उपकारी गुरुवर आचार्य श्री जी द्वारा निर्मित चेतन कृतियों के समक्ष गुरुवर की अचेतन कृतियों के माध्यम से उनकी गौरवगाथा गाकर अपनी भक्ति निवेदित करते हुए उनका स्वर्णिम संयम वर्ष मनाने को एकत्रित हुये हैं ।

हमारा विषय हैं- **आचार्य श्री विद्यासागर जी कृत हिन्दी साहित्य का वैशिष्ट्य**

आचार्य श्री जी के वैराग्य की संक्षिप्त कहानी का सार इतना ही है कि चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर के उपदेशामृत ने बचपन में ही अशांत संसार से विरक्ति के बीज आपके हृदय बो दिये जिससे शांति के अनंत सागर की ओर आपकी यात्रा का प्रारंभ हो गयी। बीज का अंकुरण हुआ आचार्य श्री देशभूषण जी से आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत ग्रहण कर तथा यह बीज पुष्पित पल्लिवत हुआ आचार्य श्री ज्ञानसागर जी के श्री चरणों में शिक्षा-दीक्षा प्राप्त कर। आपने ज्ञान के सागर के डूबकर पूर्ण निष्ठा, समर्पण तथा अर्हनिश अथक परिश्रम कर अनमोल मोती प्राप्त कर वास्तव में अपने आपको विद्या का सागर बना लिया। जिसका प्रमाण आचार्य श्री के द्वारा रचित विपुल विशाल साहित्य हमारे सामने है।

यह कहने में हम कोई अतिशययोगी नहीं है आचार्य श्री जी को यहाँ प्राकृत, अपभ्रंश, संस्कृत, मराठी, हिन्दी, कन्नड़, अंग्रेजी आदि अनेक भाषाओं में प्रखर पाण्डित्य प्राप्त है। वहीं दर्शन, इतिहास, संस्कृति , व्याकरण, साहित्य, मनोविज्ञान, योग, नीति, ज्योतिष, अध्यातम आदि अनेक विद्याओं में भी आपकी अद्‌भुत पकड़ है। आपका आशु कवित्व, प्रत्युत्पन्नमति, उत्तर (समाधान) देने की कला अच्छे-अच्छे विद्वानों को आश्चर्य चकित कर दाँतों तले अंगुलियों दबाने को मजबूर कर देती है। यही कारण है कि बड़े-बड़े नेता, अभिनेता, समाज श्रेष्ठि, अन्य मतावलम्बी संत महंत भी आपके श्री चरणों में श्रद्धा के साथ नतमस्तक हो आपके ज्ञान और उच्च आचरण का लोहा समर्पण के साथ मान लेते हैं ।

आचार्य श्री जी स्वसाधाना के साथ सतत ज्ञानाभ्यास में तल्लीन रहते हैं। आपने भव्य जीवों के आत्मकल्याणार्थ अनेक ग्रंथों की रचना कर माँ भारती (सरस्वती) के भण्डार में अभिवृद्धि की है।

आचार्य श्री जी ने विविध काव्य साहित्य की रचना की- जैसे- शतकम्, निरंजन शतकम्, भावना शतकम्, सुनीति शतकम्, परीषह शतकम्, हिन्दी शतकम् नाम से संस्कृत तथा हिन्दी दोनों भाषाओं में लिखें हैं।

तो स्तुति शतकम्, निजानुभवशतक्, मुक्तशतक, सर्वोदयशतक, पूर्णोदय शतकम्, आदि आपकी हिन्दी भाषा में लिखी गई मौलिक रचनायें हैं।

मूकमाटी महाकाव्य हिन्दी साहित्य जगत की एक कालजयी कृति साबित हो रही है, जो साहित्यकारों के मध्य बहुचर्चित है। काव्य संग्रह में- नर्मदा का नरम कंकर, डूबो मत लगाओ डुबकी, तोता क्या रोता ? चेतना के गहराव में , चेतन चन्द्रोदय चम्पू काव्य आदि

हिन्दी साहित्य जगत का गौरव बढ़ाने में सक्षम है तथा अनुदित कृतियों में कुंदकुंद का कुंदन (समयसार) निजामृत पान (समयसार कलश), नव भक्तियाँ , समंतभद्र की भद्रता (स्वयंभू स्तोत्र) रयण मंजूषा (रत्नकरण्डकश्रावकाचार), जैन गीता (समण सुत्तं), प्रवचनसार, नियमसार, द्वादशानुप्रेक्षा, पंचासितकाय, अष्टपाहुड, देवागम स्तोत्र, इष्टोपदेश, समाधितंत्र आदि अनेक कृतियाँ आचार्य श्री द्वारा पद्यानुवाद के रूप में लिखी गई हैं।

चूंकि मेरा विषय हिन्दी स्तुति साहित्य का वैशिष्ट्य है, इसलिये मे आचार्य श्री की कलम से जो स्तुति साहित्य उद्‌भूत हुआ है मैं उस पर ही अपनी लघु बुद्धि से कुछ कहने का प्रयास करूँगी।

स्तुति सरोज नाम से छपी कृति में संकलित- आचार्य शांतिसागर स्तुति, आचार्य वीरसागर स्तुति, आचार्य शिवसागर स्तुति, आचार्य ज्ञानसागर स्तुति तथा स्तुति दोहा शतक रचना की है।

1. आचार्य शांतिसागर स्तुति वसंततिलका छंद में निबद्ध है इसमें कुल 39 पद्य हैं।
2. आचाय वीरसागर स्तुति भी वसंततिलका छंद में कुल 42 छंदों में निबद्ध हैं।
3. आचार्य शिवसागर स्तुति, मन्दाक्रांता छंद में कुल 22 छंदों में निबद्ध है।
4. आचार्य ज्ञानसागर स्तुति कुल 20 छंदो में लिखी गई है।

सभी स्तुतियों की भाषा साहित्यिक होते हुये भी सहज, सरल, अलंकार, शात रस से ओतप्रोत और भावपूर्ण है। कहीं कुछ कठिन शब्दों का प्रयोग भी इनमें मिलता है। जैसे- अभ्रंलिहा, शोधमाला, मोदिनी आदि।

स्तुति के माध्यम से आचार्य श्री जी ने गुरुओं के प्रति अपनी भक्ति प्रकट करते हुये राज्य, जन्म स्थान, बचपन, माता-पिता, वैराग्य आदि का बड़ी मधुरता तथा रमणीयता के साथ वर्णन किया है। जैसे-

मैसूर राज्य अविभाज्य विराजता औ
शोभामयी नयन मंजु दुदीखता जो
त्यों शोभता, मुदित भारत मेदिनी में
ज्यों शोभता मधुप फुल्ल सरोजिनी में ।

आचार्य शांतिसागर स्तुति पद्य में जन्म स्थान की शोभा का वर्णन

पिता की जीवन शैली का वर्णनः-
नीतिज्ञ थे, सदस्य थे, सुपरोपकारी,
पुण्यात्म थे सकल मानव हर्षकारी
जो लीन धर्म अरु अर्थ सुकाम में थे
औ वीरनाथ वृष के वर भक्त यों थे। पद्य 6

वैराग्य-उपदेश के वर्णन में उपमा रूपक अलंकार का प्रयोग मनोरम है जिससे आचार्य श्री के वैराग्य की भावना दिखायी गई है।

काँटे मुझे दिख रहे घर में अहो ! माँ

चाहूँ नहीं घर निवास, अतः सुना माँ
है जैनधर्म जग सार पुनीत भी है
माता! अतः मुनि बनूँ यह ही सही है। पद्य 16

माँ की ममता कर वर्णन निर्मल छंद में है तथा अपना अलंकार का प्रयोग है।

तू यौवनोपवन में स्थित दर्शनीय
तेरा विवाह करना अति श्लाघनीय
तू हो गया अब बड़ा अवलोकनीय
नक्षत्र बीच शशि त्यों, अति शोभनीय॥ आचार्य वीरसागर स्तुति पद्य 9

यौवन को उपवन की उपमा सुंदरता का दर्शन कर नक्षत्रों बीच चंद्रमा की शोभा बताकर की गई है।

शुद्धात्म में रत सदा, दिन में न सोते
थे किन्तु आप दिन-रैन कुकर्म खोते
थी आपकी परम मार्दव धर्म शय्या
थे नाव के मम यहाँ तुम ही खिवैया॥ आचार्य वीरसागर स्तुति पद्य 26

उपदेशात्म केवली में मानव व्यवहार की शिक्षा

सुई समान व्यवहार करो सभी ही
कैंची समान व्यवहार नहीं कभी भी
ऐसा सुभाषण सदा सबको सुनाते
श्री वीर नाथ पथ को सबको बताते। आचार्य वीरसागर स्तुति पद्य 38

तू जाएगा यदि अरण्य अरे सबेरे
उत्फुल्ल -लोल-कल-लोचन कंज मेरे
बेटा! अरे! लहलहा कल ना रहेंगे
होंगे न उल्लसित औ न कभी खिलेंगे॥ पद्य 17 शांतिसागर स्तुति

शांतिसागर जी का माता का वर्णन

रोते, सती, बिलखती, गत हर्षिणी थी।
जो सातगौड़ जननी गजगामिनी थी।
बोली निजीय सुत को नलिनीमुखी यों
ओ पुत्र! सन्मुख तथा रख दी व्यथा यों॥ पद्य 18

अंत के दो पद्य तो शब्दों के भावुक प्रयोग से बहुत मार्मिक बन पड़े हैं। ये दोनों पद्य आचार्य शांतिसागर एवं आचार्य वीरसागर स्तुति में समान हैं

हे! तात! घात! पविपात! हुआ यहाँ पै,
आचार्यवर्य गुरुवर्य गये कहाँ पै ?
जन्में सुरेन्द्रपुर में, दिवि में जहाँ पै
हूँ भजता स्तुति सरोज अतः यहाँ पै।

अर्थ- हे तात (पिता) आपके जाने से यहाँ पर घात (नुकसान नष्ट) हुआ है। क्योंकि आप श्रेष्ठ आचार्य एवं गुरुवर थे। आप स्वर्ग में जन्में होंगे।

संतोष-काष, गत रोष सुशांति सिन्धु
मैं बार बार तव पाद रोज वैदू
हूँ ज्ञानसागर का प्रथम शिष्य, अवश्य
विद्या सुशांतिपद में धरता स्व-भाल

आचार्य शांतिसागर स्तुति के अंत में तीन अतिरिक्त पद्य और अपनी भक्ति गुरु के प्रति प्रकट करते हुये आपने लिखे हैं।

आचार्य शिवसागर स्तुति के अंतिम दो पद्य उल्लेखनीय हैं क्योंकि इन पद्यों में आचार्य श्री ने गुरु दर्शन न हो पाने के कारण खेद व्यक्त किया है।

छाई फैली, शिव रवि छिपी, गाढ़ दोष अमा की
आई दौड़ी, धन दुख घटा ले आना फागुना की
आचार्य श्री, अब इह नहीं जो बड़े थे सुसौम्य
जन्में है वे अमरपुरि में है जहाँ स्थान रम्यं॥ पद्य 21
पाया मैं तो तव दरश ना, जो बड़ा है अभागर
ज्ञानी होऊँ तव भजन कौ, किन्तु मैं तो-सु-गा-गा
मै पोता हूँ भव जलधि के, आप तो पोत दादा
विद्या की जो, शिवगुरु अहो, दो मिटा कर्म बाधा॥ पद्य 22

इस स्तुति के अंत में 4 पद्य देवगुरु शास्त्र स्तवन के रूप में और लिखे हुये हैं।

आचार्य ज्ञानसागर जी की स्तुति में मात्र गुरु के प्रति समर्पण-उपकार की भावना ही व्यक्त की गई है। इसमें जीवन से संबंधित अन्य वर्णन नहीं।

जैसे- पाप पक से पूर्ण लिप्त था, मोह नींद में से सुचिर सुप्त था
तुमने जगाया किया उपचार, मम प्रणाम तुम करो स्वीकार
अंधा था, बहिरा था, था मैं अज्ञ, दिये नयन व करण बनायरा विज्ञ
समझाया मुझको समयसार, मम प्रणाम तुम करो स्वीकार
रवि से बढ़कर है काम किया, जन-गण को बोध प्रकाश दिया
चिर ऋणी रहेगा यह संसार, मम प्रणाम तुम करो स्वीकार

अंत में इतना ही कहना चाहूँगी कि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज का समस्त व्यक्तित्व और कृतित्त्व पवित्र, पूर्ण और अपने आप में विशिष्ट ही है, उन्होंने अभी तक जो भी कहा/लिखा और जो भी वह कहेंगे/लिखेंगे वह सब अध्यात्म की अनंत गहराईयों से पूर्ण तथा विशिष्ट ही होगा। इसलिये मुझे नहीं लगता कि हमें अपनी अल्प वुद्धि से उनके वैशिष्ट्य को नापने का प्रयास करने की घृश्टता करना चाहिये। बल्कि उनके द्वारा कहे गये वचनों तथा दिये गये मार्गदर्शन का अनुकरण कर जीवन को विशिष्ट बनाने का प्रयास करना ही उनके साहित्य का सही मायने में वैशिष्ट्य सिद्ध होगा।

युवा संगम सम्पन्न

कुंडलपुर सिद्धक्षेत्र श्रीधर केवली की निर्वाण भूमि पर 5000 युवकों का एकत्रीकरण हुआ जिसे विश्व हिन्दु परिषद के अंतर्राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री हुकुमचंद सांवला ने संबोधित किया। उन्होंने अपने संबोधन में कहा युवा वही है जिसमें हौसला इरादा और लगन हो जो धर्म और राष्ट्र की प्रतिष्ठा को संबर्धित करने में लगा रहता है तथा संस्कृति की रक्षा में तन-मन-धन से समर्पित रहता है एवं जिसके विचारों में आधुनिकता होती है वहीं युवा नहीं होता है संत समागम में बैठकर युवा मार्गदर्शन ले सकता है। और अपने आचरण के माध्यम से युवा होने का प्रमाण प्रस्तुत कर सकता है।

युवाओं को मार्गदर्शित करते हुये परम पूज्य ऐलक श्री सिद्धांत सागर जी ने कहा- आज हमारे तीर्थ अपनी सुरक्षा के लिये युवाओं की ओर तांक रहे हैं संस्कृति और समाज युवाओं से आसान्वित है तथा युवाओं का वर्तमान में कर्तव्य हैं जाति पंथ और क्षेत्र वाद से ऊपर उठकर दिगम्बरत्व की रक्षा के लिये आगे आयें आगे निर्यापक श्रमण मुनि श्री समतासागर जी महाराज ने अपने संबोधन में कहा कि युवा वह शक्ति हैं जिसके माध्यम से धर्म समाज आगे बढ़ा रहा है परम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज ने युवा अवस्था में ही मूकमाटी का सृजन करके उद्दात अवस्था को प्राप्त की थी धर्म संस्कृति को दिशा निर्देश देने वाली यह कृति युवाओं को हर पल प्रेरणा देती है युवा सम्मेलन का सफल संचालन ब्र. जिनेश जी मलैया जी ने किया एवं विजय धुर्रा अशोक नगर ने अपने ओजस्वी विचार प्रस्तुत किये तथा युवाओं को संगठित होने की प्रेरणा दी ब्र. सुरेश जी मलैया ने प्रेरणा गीत के साथ गंभीर विचार प्रस्तुत किये तथा युवाओं में जोश भर दिया अंत में आभार ब्र. जयनिशांत जी ने माना।

तिल्ली (Spleen) शरीर का सुरक्षा बाल्व

❊ संकलनः जिनेन्द्र कुमार जैन, गौरीनगर इंदौर ❊

तिल्ली एक गहरे जामुनी रंग की बीन आकार की ग्रंथि होती है जो उदर की बाई ओर हाइपोकोन्ड्रिक भाग में 9,10,11वी पसली के नीचे रहती है और यह पाक स्थली की मोटी म्रेम्ब्रेन के जरिये पाकस्थली से फिनोस्प्लिनिक लिगामेन्ट के जरिये डायफ्राम और बाई किडनी से संयुक्त रहती है। स्वस्थ अवस्था में तिल्ली की लम्बाई 3 से 5 इंच, चौड़ाई 1 से 2 इंच और वजन 150-200 ग्राम तक होता है। तिल्ली संयोजी तथा लसिका उत्तकों के जाल से बनी होती है तथा इसमें अनेक रक्तकोष होते हैं। यह एक थैलीनुमा कैप्सूल आवरण द्वारा घिरी रहती जो रेशेदार तथा सादे पेशीय रेशों से बनती जो तिल्ली से यकृत में रक्त धकलने के समय पर सिकुडते हैं।

तिल्ली गर्भ की प्रारंभिक अवस्था में रक्त कणों का निर्माण करती है तथा अस्थिमज्जा के रोग ग्रस्त हो जाने पर भी वयस्क मनुष्यों में भी यही कार्य करती है। यह रक्त संचार में लाल रक्त कोषों में होमोग्लोबिन होता है जो 120 दिनों में नष्ट होने लगते हैं। इन जर्जर काल रक्त कोषों को पृथक करती है तथा रक्त का संचित भंडार है जो जरूरत पड़ने पर प्रदाय करती है। तिल्ली रोग से रक्षा करती है यह एन्टीबोडीज का निर्माण करती है व हानिकारक कीटाणुओं को नष्ट करने के साथ ही अन्य अंगों में फैलने से रोकती है। व श्वेत रक्त कणिकायें बनाती है। यह प्रोटीन के उपायचय में योगदान देती है व पित्त रंजक व पित्त हरित का निर्माण भी करती है।

तिल्ली की बीमारियाँ- 1. तिल्ली का प्रदाह (Inflammation) - बाहर से चोट लगना, मुक्का लगने, गिर पड़ने से तिल्ली में प्रदाह होता है। जिससे जोर से सांस लेने, शरीर को विभिन्न प्रकार से हिलाने डुलाने से दर्द बढ़ना जो कभी-कभी बाये कंधे तक फैल जाता है। व कभी-कभी बुखार भी आ जाता है जो इलाज से ठीक हो जाता है।

2. तिल्ली का रक्ताधिक्य- तिल्ली में कभी ज्यादा या कम खून जम जाता है जिससे इसका साधारण आकार की अपेक्षा तीन-चार गुणा बढ़ जाता है जो सविराम और अविराम बुखार, पीत ज्वर, सूतिका ज्वर और कभी कॉलेरा के प्रकोप के समय भी होती है जिससे शरीर में कोई बीमारी होने से वह आसानी से ठीक नहीं होती है व रोग के लक्षणों के आधार पर इलाज से तिल्ली का रक्ताधिक्य सामान्नय हो जाता है।

3. तिल्ली की वृद्धि (Hypertrophy) - 1.नई साधारण वृद्धि- तिल्ली अत्यंत कोमल यन्त है और उसमें जिस तरह आसानी से रक्त संचालन होता है व उसी समय मामूली कारण से रक्ताधिक्य होकर इसकी वृद्धि हो जाती है जिसका प्रमुख कारण हृदय,

फेफड़ा, पोर्टलवेन और सिरोसिस लिवर की शिरा में रक्त संचालन में बाधा पड़ती है जिसे साधारण वृद्धि कहते हैं जिससे शरीर में बुखार, जलन व कब्ज की समस्या बढ़ जाती है।

2. पुरानी वृद्धि- जब मलेरिया, धातुगत उपदंश, पारद विष-जनित रक्त दोष, रेकाइटिस, स्क्रॉफुलस, ब्राइट्स रोग, क्लोरोसिस, स्कर्वी, ल्युकिमिया आदि बीमारियों से रक्त दूषित हो जाता है जिससे तिल्ली की अधिक वृद्धि हो जाती है। कभी-कभी तिल्ली इतनी बढ़ जाती है कि सारा पेट फूला व कड़क हो जाता है। यह रोग सहज में अरोग्य नहीं होता है जिससे शरीर रक्तहीन चेहरा फीका व पीला पड़ जाता है।

4. तिल्ली का फटना- तिल्ली में दुर्घटना में चोट के कारण, चाकू या गोली लगने से तिल्ली फट जाने से रक्तास्त्राव होने से मृत्यु होने की संभावना अधिक हो जाती है, उस समय शीघ्र सर्जरी की आवश्यकता होती है।

कभी-कभी बायी तरफ की छाती में प्लुरिसी या हृदय की किसी बीमारी, छावी में पानी जमने से पेट में वायु जमने से तथा यकृत, किड़नी आदि में निकटस्थ अंगों में टयूमर आदि होने पर कभी-कभी तिल्ली की वृद्धि होने का भ्रम हो जाता है अतः रोगी को खाली पेट रखकर चिकित्सक से जांच कराकर उचित निर्णय लेना चाहिये।

तिल्ली का बीमारियों में सरसों की सब्जी, उड़द, कुलथी, भैंस का दूध दही, खही चीजें, शराब, चावल, पास्ता, चाय, मैगी, डबररोटी, वर्गर, जंक फुड्स, मैंदा, सोड़ा, एनर्जी ड्रिंक, प्रोसेस्टफूड नहीं खाना चाहिये। मलेरिया उपचार में अधिक न करें का उपयोग वायु भोजन, पानी प्रदूषण बिना डॉक्टर की सलाह से ऐलोपैथी दवाईयों का उपयोग।

बथुआ, सहजना, छोटी मूली, गाय का दूध, सेंधा नमक, पुराने चावल, खजूर, दाख, पपीता, सेव, अनार, आंवला, अखरोट, नारियल आदि का उपयोग लाभदायक होता है।

सभी चिकित्सा पद्धति में समय पर इलाज होता है तिल्ली एक बार बड़ी और कड़ी हो जाने पर वह जल्दी स्वाभाविक अवस्था में नहीं आती है इसलिये उस अवस्था में चिकित्सक सलाह अनुसार पूरा इलाज कराना चाहिये और ऐसा भी हो सकता है कि मूल रोग जड़ से नष्ट हो जाने पर तिल्ली क्रमशः घटकर अपने स्वाभाविक आकार में आ जायें।

होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति में सियनोथस, चायना, आसेनिक, अर्निका, ब्रायोनिया, लाइको, पल्सेटिला, अर्टिका युरेन्स, नेट्रम म्यूर, रेननक्युलस बल्बोसस आदि रोगी के लक्षणों के आधार पर उपयोगी है। इलाज के पूर्व योग्य अनुभवी चिकित्सक से सलाह लेकर शुरु करना चाहिये।

नियमित जीवन चर्या, संतुलित भोजन, भ्रमण व योग से स्वस्थ्य शरीर बनाये रखते हुये जीवन के अति आवश्यक सुरक्षा बाल्व को संक्रमित से बचाना है।

हास्य तरंग

1. नई नवेली पति पत्नी में सुबह-सुबह किसी बात में मनमुटाव हो जाने पर पति (पत्नी से) अभी तक भोजन नहीं बना तो रहने दो मैं बाहर ही खा लूंगा। पत्नी-बस पांच मिनिट तो रूको पति-क्यों पांच मिनिट में बन जायेगा। पत्नी-नहीं पांच मिनिट में तैयार होकर आपके साथ चलती हूँ।

2. रात के दो बजे नशे में धुत आदमी ने पुलिस स्टेशन पर फोन किया कि मेरी गाड़ी का स्टीयरिंग, ब्रेक, क्लच आदि कोई चुराकर ले गया है। पुलिस अधिकारी ने वादा किया कि मेरे क्षेत्र में ऐसा नहीं होगा शीघ्र ही चोर को पकड़ लिया जावेगा। थोड़ी देर बाद उसी आदमी का फिर फोन आया, इंस्पेक्टर साहब, माफ करें, परेशान मत होवें, दर असल में मैं गाड़ी की पिछली सीट पर बैठ गया था।

3. शहर में नई पुलिस कमीश्नर प्रणाली को लागू किया एवं सख्त निर्देश दिये गये कि कर्त्तव्य व अनुशासन का पालन किया जावे। होली की रात्रि में ग्रस्त करते हुये सिपाही गलती से अंधेरे में कुआ में गिर गया। क्षेत्र के लोगों ने मिलकर उसे रस्सी के सहारे ऊपर निकालने की कोशिश की गई तभी उनके बड़े अधिकारी का आना हुआ तो देखते ही सिपाही ने सलूट दे मारी रस्सी घूटने पर कुआ में पुनः गिर गया।

4. पत्नी पति से उत्सुकता से सुनो जी डॉक्टर ने मुझे एक महिने आराम के लिये किसी हिल स्टेशन पर जाने का कहा है हम कहाँ जायेंगे? पति- किसी दूसरे डॉक्टर के पास।

5. हर्षित का ससुर जोर से डॉट रहा था, तभी पड़ोस के व्यक्ति ने पूंछा क्या हो गया हैं इतनी गुस्सा कर रहे हो। ससुर मैंने नर्सिंग होम से इसे व्हाट्सएप किया था कि तुम पिता बन गये हो। इसने उस मेसेज को कई लोगों को फारवर्ड कर दिया।

संस्कार खेल

शरीर विकास के कुछ खेल

❊ ग्रीवा युद्ध

खिलाड़ियों की संख्या- 5-30

खेल वर्ग- मंडल या गोले का खेल

खेल विधि- स्वयंसेवक बायें हाथ से अपनी गर्दन पकड़ेगा तथा मंडल के अन्दर हुये अपने दायें हाथ से इसे खिलाड़ी गर्दन वाला हाथ छुड़ायेंगे। जिसका हाथ छूट जायेगा, वह खेल से बाहर हो जायेगा।

❊ चूहा-बिल्ली

खिलाड़ियों की संख्या- 10-15

खेल वर्ग- मंडल का खेल

खेल विधि- सब हाथ पकड़कर (पर्याप्त दंड हो तो दंड पकड़कर) मंडल बनायेंगे। एक खिलाड़ी बाहर (बिल्ली) तथा एक अंदर (चूहा) रहेगा। सीटी बजने पर बिल्ली चूहे को पकड़ेगी। पर सब उसे बचाने का प्रयत्न करेंगे। यदि चूहा अंदर है तो सब बिल्ली ही रोकेंगे। यदि बिल्ली अंदर आ गई है तो चूहे को सुरक्षित बाहर निकाल देगा। इस प्रकार खेल चलता रहेगा। बीच-बीच में बदल भी हो सकती है।

❊ नरक कुण्ड

खिलाड़ियों की संख्या- 10-15

खेल वर्ग- मंडल का खेल

खेल विधि- त्रिभुज अथवा चतुर्भुजाकार नरक कुंड बनाकर 8-10 स्वयंसेवक उसके आसपास हाथ पकड़ कर खड़े होंगे। सीटी बजने पर सब नरक कुंड की परिक्रमा करेंगे तथा फिर एक दूसरे को खींचकर कुंड में डालने का प्रयास करेंगे। जिसके शरीर का कोई भी अंग नरक कुंड के अन्दर स्पर्श कर जायेगा वह खिलाड़ी बाहर बैठ जायेगा। ऐसा होने पर सभी स्वाहा कहेंगे। अन्त तक बचा रहने वाला खिलाड़ी विजयी होगा।

बाल कहानी

प्यारी मूरत

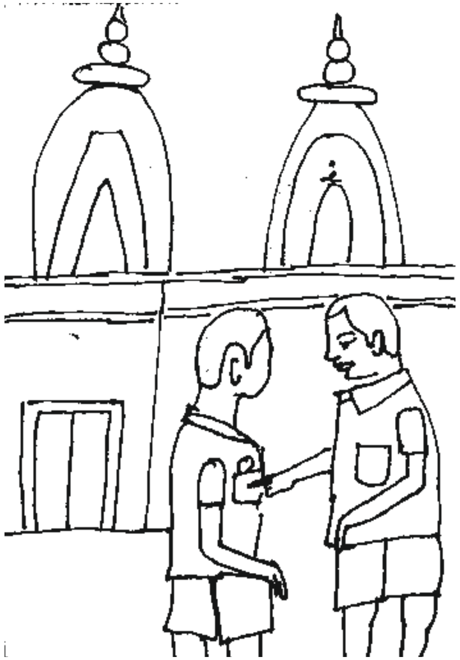

रात के आठ बजे थे मंदिर में पर्यूषण की चहल-पहल शुरु हो रही थी सब लोग धीरे-धीरे एक दो करके मंदिर में आते जा रहे थे। सुमन भी मंदिर आज अकेला गया था वैसे उसे परिवार लोग अकेला कही जाने नहीं देते थे क्योंकि उसकी सैतानियों का कोई भरोसा नहीं था। पर्व पर गढ़ाकोटा के बड़े मंदिर में समोशरण की सज्जा की जाती थी छोटी बऊी मूर्तियाँ बड़े सज्जा के साथ बाहर जमा दी जाती थी और संगीत के साथ सामूहिक पूजन होती थी सुमन ने इधर देखा उधर देखा और उसे एक छोटे से भगवान पसन्द आ गये और उसका हाथ भी भगवान तक पहुँच गया उसने धीरे से भगवान की छोटी सी प्यारी सी मूर्ति जेब में रख ली और वह मंदिर से बाहर निकल गया मूर्ति जेब में रखकर बाजार में घूमने लगा।

इधर मंदिर में किसी की नजर मूर्तियों पर पड़ी तो उन्होंने दुर्गा माली को आवाज दी कि भाई दुर्गा एक भगवान कम हो गये हैं। तुम यहाँ बैठे-बैठे क्या कर रहे हो बताओ मंदिर में कौन-कौन आया था दुर्गामाली ने कहा कक्का जी कोई नहीं आया मैं तो बाहर बैठा हूँ सिर्फ बिलहरा वालों का लड़का सुमन आया था। दुर्गा माली यह कहने पर भगवान दास जी ने कहा कि वह चार-पांच साल का लड़का क्या जाने मूर्ति क्यों उठा ले जायेगा और कौन आया ये बताओं तुम तो सब लोग दुर्गामाली को डांटने लगे। दुर्गामाली ने कहा मैं अभी आता हूँ एक घण्टा भी नही लगेगा भगवान मिल जायेगें।

दुर्गा माली बाजार निकल गया और सुमन को ढूढ़ने लगा सुमन उसे बाजार की गणेश जी की झांकी के यहाँ खड़ा मिला, दुर्गा माली ने सीधे सुमन के जेब में हाथ डाला और उसने देखा जेब में मूर्ति है दुर्गा माली ने बड़े प्यार से सुमन को गोदी में उठाया और सीधा मंदिर ले आया लोगों ने देखा कि सुमन के जेब में भगवान की मूर्ति थी तो सुमन से पूछा क्यों बेटा मूर्ति क्यों उठाई तो उसने कहा बहुत प्यारी लगी इसलिये उठाई।

संस्कार गीत

यादें

न जाने क्यों यादों का
रैन बसेरा छूट रहा है
गाँवों से शहर की ओर
पलायन कर रहा है
न अब वो दिन है, न अब वो रातें
रह गयी है मनोदिमाग में बस उनकी यादें
न संयुक्त परिवार होते हैं,
न पहले जैसी बातें
बच्चों को कुछ सीखने के लिये
बाहर नहीं जाना पड़ता था
वो आपस में ही सीख लेते थे।
लडते थे, झगडते थे
प्रेम की भाषा भी समझते थे
बड़े बूढे भी अनुभवों की
गठरी साथ लेकर चलते थे
जब किसी परेशानी में फंसते थे तो
वे गठरी में से एक नुस्खा
निकालकर दे देते थे।
बहुत अंतर है, बीते हुये काल में और
आने वाले कल में बीता हुआ कल अपनों से
रोशन था और आने वाला कल
तफनीकों की चकाचौंध से

बाल कविता

भारत माँ की संताने

भारत माँ की संतानें
आजादी के दीवाने
कभी जंग में कूँद पड़े
दुश्मन से फिर खूब लड़े
परवाह नहीं फिर मौत की
चाह नहीं कोई ओट की
सीधे सीधे लड़ते है
गोली से बातें करते है
सम्मान करो इन वीरों का
भारत मात सपूतों का

समाचार

दीक्षायें सम्पन्न

पानीगांव- मुनि श्री मार्दवसागर महाराज जी के करकमलों से उनके ही गृहस्थ अवस्था के पिता श्री भागचंद जी पठा को मुनि दीक्षा श्री दिगम्बर जैन सिद्धांचल क्षेत्र पर 24 फरवरी 2022 को दी गई जिनका नाम मुनि श्री सौभाग्य सागर जी रखा गया।

दिल्ली- आचार्य श्री सौभाग्यासागर जी महाराज के करकमलों से ब्र. उर्मिला दीदी को क्षुल्लिका दीक्षा 09 मार्च 2022 को दी गई जिनका नाम क्षुल्लिका शुभमार्गमति माताजी रखा गया।

णमोकार तीर्थ (महाराष्ट्र)- आचार्य श्री देवनंदी महाराज जी के करकमलों से झंवरलाल जी पहाड़े मालेगांव को मुनि दीक्षा 07 मार्च 2022 को दी गई जिनका नाम मुनि श्री शुद्धात्मकीर्ति जी रखा गया।

प्रतापगढ़ (राजस्थान)- आर्यिका श्री शुभमति माताजी के करकमलों से 105 वर्षीय सागर बाई जी को क्षुल्लिका दीक्षा 14 मार्च 2022 को दी गई जिनका नाम क्षुल्लिका सुप्रतापमति माताजी रखा गया।

संगमविहार (दिल्ली)- आचार्य श्री विनीतसागर महाराज जी के करकमलो से श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर संगमविहार दिल्ली में ब्र. ओमप्रकाश काला पीपल शाजापुर को क्षुल्लक दीक्षा 15 अक्टूबर 2021 को दी गई जिनका नाम क्षुल्लक अरिहंतसागर जी रखा गया।

अजमेर-आचार्य श्री अनुभवसागर महाराज के करकमलो से क्षुल्लक श्री अनुशासन सागर महाराज जी को मुनि दीक्षा 18.03.22 को अजमेर राजस्थान में दी गई जिनका नाम मुनि श्री अनुशासनसागर जी रखा गया।

समाधिमरण

पानीगांव (म.प्र.)- मुनि श्री मार्दवसागर महाराज जी के सान्निध्य में मुनि श्री सौभाग्यसागर महाराज जी का समाधिमरण 24 फरवरी 2022 को सिद्धांचल क्षेत्र पानीगांव में हुआ।

कानपुर (उदयपुर राजस्थान)- आचार्य श्री सुंदरसागर महाराज जी के शिष्य मुनि श्री शतारसागर महाराज जी का समाधिमरण कानपुर उदयपुर राजस्थान में 27.03.2022 को हुआ।

प्रतापगढ़ (राजस्थान)- गणिनी आर्यिका शुभमति माताजी के ससंघ सान्निध्य में क्षुल्लिका सुप्रतापमति माताजी का समाधिमरण 17 मार्च 2022 को हुआ।

णमोकार तीर्थ (महाराष्ट्र)- आचार्य श्री देवनंदी महाराज के ससंघ सान्निध्य में मुनि श्री शुद्धात्मसागर महाराज का समाधिमरण 09 मार्च 2022 को रात्रि 2.52 पर हुआ।

गींगला (राजस्थान)- मुनि श्री विकसंत महाराज के ससंघ सान्निध्य में आर्यिका श्री अपूर्वमति माताजी का समाधिमरण 8 मार्च 2022 को रात्रि 9.22 पर हुआ।

णमोकार तीर्थ (महाराष्ट्र)-आचार्य श्री देवनंदी महाराज के ससंघ सान्निध्य में मुनि श्री जिनकीर्ति महाराज का समाधिमरण 23 मार्च 2022 को रात्रि 9 बजे हुआ।

जैन विद्या संस्कृति प्रश्न मंच पुरस्कार वितरण

जैन विद्या संस्कृति प्रश्नोत्तरी परीक्षा 2022 का पुरुस्कार वितरण आचार्य श्री विद्यासागर महाराज ससंघ सान्निध्य में श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र कुण्डलपुर (म.प्र.) 27 फरवरी 2022 को हुआ। जिसमें प्रथम पुरस्कार श्रीमति प्रभावती हुकुमचंद जी सावला इंदौर को एक लाख रूपये नगद तथा शील्ड देकर यह पुरस्कार श्रीमति माया गजेन्द्र जी गिन्नी ग्रुप इंदौर द्वारा दिया गया। द्वितीय पुरस्कार श्रीमति कल्पना राजेश मलैया रहली इक्कावन हजार रूपये नगद तथा शील्ड देकर यह पुरस्कार श्रीमति मणि आजाद मोदी इंदौर द्वारा दिया गया। तृतीय पुरस्कार दृश्या जैन विदिशा इक्तीस हजार रूपये नगद तथा शील्ड देकर यह पुरुस्कार श्री नीरज जैन गजेन्द्र पब्लिकेशन दिल्ली द्वारा दिया गया। यह पुरस्कार प्रतिवर्ष दिया जाता है। आप भी प्रश्न पत्र भरकर पुरस्कार प्राप्त कर सकते है। तथा सभी प्रतिभागियों को सात्वंना पुरस्कार दिया गया।

महाशोक- पं. श्री रतनचंद जी भोपाल का निधन

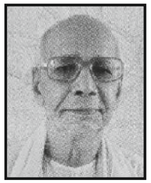

अभी-अभी यह दुःखद समाचार प्राप्त हुआ है कि जैन जगत् के मूर्धन्य विद्वान पं. श्री रतनचंद जी भोपाल का आकस्मिक निधन हो गया है। आप कुछ दिनों से अस्वस्थ थे। आपने अंतिम अन्तिम समय तक चैतन्य अवस्था में रहते हुये पंचपरमेष्ठी का ध्यान किया और परमपूज्य आचार्य विशुद्ध सागर महाराज और मुनि श्री प्रमाण सागर महाराज से परोक्ष संबोधन भी प्राप्त किया। आपने बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय भोपाल में संस्कृत विभाग के अध्यक्ष पद को अलंकृत किया है। आप जैनदर्शन प्राकृत संस्कृत के अधिकारी विद्वान् थे। आप अनेक वर्षों तक जिनभाषित पत्रिका के यशस्वी सम्पादक भी रहे हैं। आप सरल सौम्य उदार और परोपकारी व्यक्तित्व के घनी थे। आपके निधन से जैन समाज को अपूर्णीय क्षति हुई है। **संस्कार सागर मासिक पत्रिका परिवार की ओर से आपको विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हैं।**

वर्ग पहेली 270

1			■	2	3	■	4	5
	■	■	6					
7	8	9	■	10		■	11	
■	12		■	■	■	13		■
14	■	■	15	16	17		■	17ए
18	19	20	■		■	21		
22			23	■	24		■	
25		■	26	27		■	28	■
29			■	30		■	31	

बाये से दाये

1. भगवान महावीर स्वामी के दादाजी का नाम -3
2. लीन होने का भाव -2
4. अतीत -2
5. झांकना, देखना -2
6. तीर्थंकर के पांच उत्सव -6
7. तीन माह का समूह -3
10. पानी डेनेज या गंदगी बहाने वाली मोरी -2
11. धनिया -2
12. बादल मेघ -2
13. प्रत्येक हरि का नाम -2
15. प्रत्येक समय, शर्मकाल -4
18. मदारी के हाथ में रहने वाला एक वाद्य यंत्र डुगडुग करने वाला एक वाद्य यंत्र -3
21. राधा का एक नाम -3
22. उत्तर प्रदेश की राजधानी -4
24. यथार्थ -2
25. पुरुष -2
26. दफीना -3
29. रचने या बनाने का भाव -3
30. स्वामी -2
31. लगाव, श्रृंगार रस का मूल भाव -2

ऊपर से नीचे

1. भगवान महावीर स्वामी का एक नाम या अच्छी बुद्धि -3
2. सृजन, निर्माण -3
3. सूत कातने वाला घरेतू यंत्र -3
4. तीर्थंकर के प्रमुख वक्ता, समवशरण के नायक -4
8. हिन्दी के महीनों में सबसे ठण्डा माह अथवा पौष के बाद आने वाला माह -2
9. कम, न्यून -2
13. सहयात्री, साथी -4
14. श्रीधर केवली की निवार्ण भूमि -5
16. नस -2
17. घर, गृह -3
19. रोयेदार रेशमी कपड़ा -4
20. रूनझुन का पहला शब्द -2
23. गन्ना -2
24. स्वामी सहित -3
27. गमन करना -2
28. महावीर का एक नाम -2

वर्ग पहेली 269 का हल

1 प्र	ति	2 क्र	3 म	ण	■	4 स	5 क	6 ल
त्या	■	7 म	ग	■	8 म	त	ल	ब
9 ख्या	10 ल	■	11 न	12 त	■	ज	■	क
13 न	ग	14 मा	■	15 रु	ह	■	16 सा	र
■	17 भ	र	18 त	■	19 म	ग	र	■
20 ज	ग	■	21 र	22 बा	■	■	23 स्व	तः
ल	■	24 न	क	ली	■	25 र	त	■
ज	■	■	स	■	26 अ	क्ष	■	27 का
28 ला	घ	व	■	■	■	29 क	रा	र

....सदस्यता क्र. ....

पता : ....

....

समस्या पूर्ति प्रतियोगिता

जल ही मेरा जीवन

नियम

१. आपको चार से छः पंक्तियों की एक छंदबद्ध या छंदमुक्त तुकांत कविता लिखनी है, जिसके अंत में उपरोक्त शब्द आने चाहिये।
२. समस्या पूर्ति पोस्टकार्ड पर ही लिखकर भेजें।
३. पुरस्कार राशि : प्रथम पुरस्कार १५१ रु., द्वितीय ५१ रु., तृतीय २५ रु.
४. पोस्टकार्ड भेजने की अंतिम तिथि माह की १५ तारीख है।

पंचकल्याण विधि-विधान सामग्री एवं हाथी स्वर्ण रथ आदि एक ही स्थान पर उपलब्ध

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर में गिफ्ट आयटम उपलब्ध हैं जिनमें घड़ी, शील्ड, पेन, बैग, बेंच, आदि सामग्री तथा पंचकल्याणक, पूजन, विधान, शिलान्यास, गृह प्रवेश, गृह शुद्धि, शिविर आदि की सम्पूर्ण सामग्री एक साथ उपलब्ध रहती है। जैसे स्वर्ण शिला, रजत, ताम्रशिला, कील, कलश, पंचरत्न, स्वस्तिक, हार, मुकुट, कंठी, स्वागत पट्टे, पचरंगी झंडे, अष्ट मंगल द्रव्य, अष्ट प्रातिहार्य, पंचमेरू, पांडुक शिला, कलश, मंगल कलश, शिखर कलश, ध्वज दंड, दीपक बाक्स, दीपक चंदोवा, पलासना, छत्र, चमर, भामंडल, सिंहासन, वंदनवार, धोती-दुपट्टा, सभी विधानों के मांडने धातु में एवं फ्लेक्स में उपलब्ध है।

विभिन्न आकर्षक डिजाइनों में स्वर्ण कलश, रजत कलश (ओरिजनल चाँदी), रत्न कलश आदि जो एक्रेलिक बॉक्स स्टैण्ड के साथ उपलब्ध हैं। जो काले नहीं पड़ेंगे एवं तीन का सेट होने के बावजूद बिखरेंगे नहीं। चातुर्मास कलश का समय पर आर्डर करने पर बॉक्स के नीचे साधु के नाम, कौन सा चातुर्मास, स्थान, आयोजक आदि का नाम भी लिखवाया जा सकता है। तथा इन्दौर से सभी जगह के लिए बस सुविधा उपलब्ध है। जिसके द्वारा आप अपना आर्डर मंगवा सकते हैं।

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर, विद्यासागर नगर इन्दौर

सम्पर्क करें - 0731-4003506, 8989505108, 8989121008

आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में कुण्डलपुर पंचकल्याणक के अवसर पर 26 फरवरी 2022 को विद्वत महासम्मेलन 27 फरवरी 2022 को युवा समावेश सम्पन्न

विद्वानों को संबोधित करते हुये आचार्य श्री

विद्वत महासम्मेलन का संचालन करते हुये

युवा समावेश का संचालन करते हुये ब्र. जिनेश मलैया इंदौर

युवाओं को संबोधित करते हुये ब्र. सुरेश मलैया इंदौर

संस्कार सागर पढ़िए सिर्फ एक Click पर www.sanskarsagar.org

सम्पर्क करें - 0731-4003506, 8989505108, 8989121008

प्रिंटिंग दिनांक 29/03/2022, पोस्टिंग दिनांक : 03/04/2022